UTKAL UNIVERSITY
NAAC ACCREDITED A+

MASTER OF ARTS
IN HINDI

SEMESTER-II

नाटक, एकांकी एवं निबंध

CREDIT: 4

Paper - 2.5
BLOCK: 1,2,3 & 4

AUTHOR
Dr. Ajit Prasad Mohapatra

ଦୂର ଓ ଅନ୍‌ଲାଇନ ଶିକ୍ଷା କେନ୍ଦ୍ର, ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ
CENTRE FOR DISTANCE AND ONLINE EDUCATION
UTKAL UNIVERSITY
C.D.O.E

UTKAL UNIVERSITY
NAAC ACCREDITED A+
CDOE

ABOUT THE UNIVERSITY

Founded in 1943, Utkal University is the 17th University of the country and the first of Orissa. It is the result of the efforts of Pandit Nilakantha Dash, Maharaja Krushna Chandra Gajapati, Pandit Godavarish Mishra and many others who envisioned a progressive education system for modern Odisha.

The University started functioning on 27 November 1943, at Ravenshaw College, Cuttack. It originated as an affiliating and examining body but shifted to its present campus spread over 400 acres of land at Vanivihar in Bhubaneswar, in 1962.

A number of Postgraduate Departments and other centres were established in the University campus. There are presently more than two hundred general affiliated colleges under the University. It has eleven autonomous colleges under its jurisdiction, twenty-eight constituent postgraduate departments, 2 constituent law colleges and a Directorate of Distance & Continuing Education. It boasts of a centre for Population Studies, a School of Women's Studies, an Academic Staff College, a pre-school and a high school. The University also offers a number of self-financing courses.

NAAC accredited in its 3rd cycle with A+ status in 2023. It is a member of the Indian Association of Universities and the Commonwealth Association of Universities.

CENTRE FOR DISTANCE & ONLINE EDUCATION
UTKAL UNIVERSITY: VANI VIHAR
BHUBANESWAR:-751007

From the Director's Desk

The Centre for Distance and Online Education, originally established as the University Evening College way back in 1962 has travelled a long way in the last 52 years. **'EDUCATION FOR ALL'** is our motto. Increasingly the Open and Distance Learning institutions are aspiring to provide education for anyone, anytime and anywhere. CDOE, Utkal University has been constantly striving to rise up to the challenges of Open Distance Learning system. Nearly one lakh students have passed through the portals of this great temple of learning. We may not have numerous great tales of outstanding academic achievements but we have great tales of success in life, of recovering lost opportunities, tremendous satisfaction in life, turning points in career and those who feel that without us they would not be where they are today. There are also flashes when our students figure in best ten in their honours subjects. Our students must be free from despair and negative attitude. They must be enthusiastic, full of energy and confident of their future. To meet the needs of quality enhancement and to address the quality concerns of our stake holders over the years, we are switching over to self instructional material printed courseware. We are sure that students would go beyond the course ware provided by us. We are aware that most of you are working and have also family responsibility. Please remember that only a busy person has time for everything and a lazy person has none. We are sure, that you will be able to chalk out a well planned programme to study the courseware. By choosing to pursue a course in distance mode, you have made a commitment for self improvement and acquiring higher educational qualification. You should rise up to your commitment. Every student must go beyond the standard books and self instructional course material. You should read number of books and use ICT learning resources like the internet, television and radio programmes etc. As only limited number of classes will be held, a student should come to the personal contact programme well prepared. The PCP should be used for clarification of doubt and counseling. This can only happen if you read the course material before PCP. You can always mail your feedback on the course ware to us. It is very important that one should discuss the contents of the course materials with other fellow learners.

We wish you happy reading.

DIRECTOR

Centre for Distance and Online Education, Utkal University, Bhubaneswar.

Program Name: Master of Arts in Hindi	Program Code: 010308
Course Name: Natak Ekanki evam Nibandh	Course Code: HIN 2.5

Semester: II | Credit: 4 | Block No. 1 to 4 | Unit No. 1 to 16

EXPERT COMMITTEE: -

Dr. Smarapriya Mishra
Retd. Prof. from Ravenshaw University

Dr. Ravindranath Mishra
Retd. Prof. & former HOD,
Visva Bharati,Santiniketan

Dr. Snehalata Das
Reader in Hindi
Rama Devi Women's University , Bhubaneswar

Dr. Sudhansu Ku. Nayak
Retd. Reader, Berhampur University

COURSE WRITER:

Dr. Ajit Prasad Mohapatra
Retd. Principal, HTTI, Cuttack

COURSE EDITORS:

Dr. Shankarlal Purohit
Retd. Reader in Hindi
Utkal University

Dr. Laxmidhar Dash
Retd. Principal, HTTI, Cuttack

Dr. Pragyan Paramita
Faculty in Hindi, CDOE, Utkal University

PUBLISHED BY

Center for Distance and online Education(CDOE), Utkal University
Bhubaneswar-751007

M.A. (Hindi) Semester - II

PAPER - 9

नाटक, एकांकी एवं निबंध

Block No	Block	Unit No	Unit
1	**आधे अधूरे** - मोहन राकेश	1	कथावस्तु
		2	नाटक में आधुनिकता
		3	नाटक में स्त्री-पुरुष संबंध का विश्लेषण
		4	भाषाशैली, नाट्य संरचना और संप्रेषण
2	**श्रेष्ठ एकांकी** - विजयपाल सिंह	5	एकांकी विधा का विकास
		6	चारुमित्रा
		7	एकांकी का उद्द्येश्य
		8	रीढ़ की हड्डी
3	**श्रेष्ठ एकांकी** - विजयपाल सिंह	9	महाभारत की एक सांझ
		10	एकांकीकार की नयी दृष्टी
		11	सूखी डाली
		12	एकांकी में व्यक्त संदेश
4	**निबंध निकष**: डॉ. रामचंद्र तिवारी	13	साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है
		14	कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता
		15	कविता क्या है
		16	अस्ति की पुकार हिमालय

UNIT - I

आधे अधूरे

मोहन राकेश

9.1 नाटक

9.1.1 पाठ का नाम - आधे अधूरे

9.1.2. नाट्यकार - मोहन राकेश

9.1.3. परिचय

9.1.4. सूचना

9.1.5. उद्देश्य

9.1.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन

9.1.6.1. कथावस्तु

9.1.6.2. नाटक में आधुनिकता

9.1.6.3. नाटक में प्रयोग धर्मिता

9.1.6.4. नाटक में स्त्री-पुरुष संबंध का विश्लेषण

9.1.6.5. नाटक में चरित्रांकन

9.1.6.6. नाटक में संवाद योजना

9.1.6.7. नाटक में देशकाल-वातावरण

9.1.6.8. नाटक में भाषाशैली, नाट्य संरचना और संप्रेषण

9.1.6.9. नाटक का प्रतिपाद्य

9.1.6.10. निष्कर्ष

9.1.7. संभाव्य प्रश्न

* व्याख्यात्मक प्रश्न
* आलोचनात्मक प्रश्न
* अतिलघूत्तरी प्रश्न

उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- हिंदी गद्य साहित्य के अंतर्गत नाटक विधा के उद्भव और विकास की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- नाटक में व्यक्त आज की आधुनिकता को समझ सकेंगे ।
- आज के समाज में स्त्री- पुरुष के खोखले संबंध का पता लगा सकेंगे ।
- तत्कालीन समाज के देशकाल वातावरण का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- नाटक के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे ।

आधे अधूरे

मोहन राकेश

9.1. नाटक -आधे अधूरे

9.1.2. मोहन राकेश

9.1.3. लेखक परिचय

मोहन राकेश का जन्म 8 फरवरी 1925 को अमृतसर में हुआ था । उनके पिता करमचन्द अरोरा वकील थे । मात्र 16 वर्ष की उम्र में राकेश के पिता चल बसे, जिसके कारण घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रही ।

मोहन राकेश ने संस्कृत में एम.ए. करके शुरू में अध्यापन और पत्रकारिता सहित कई नौकरियाँ की । प्रसिद्ध कहानी पत्रिका 'सारिका' का संपादन उन्होंने किया था । जितने वे संवेदनशील थे उतने ही व्यवहार में कठोर थे । राकेश स्वातंत्र्योत्तर पीढ़ी के रचनाकार थे । साहित्य में वैयक्तिक समस्याओं, स्त्री-पुरुष संबंधों में बदलाव, परंपरागत और नवीन मान्यताओं के द्वन्द्व के प्रति उनका काफी अवदान रहा । उन्होंने नाटक तथा अन्य साहित्यिक विधाओं में यथार्थवाद को खूब अपनाया । वे 'नई कहानी' आन्दोलन के प्रमुख कहानिकारों में से थे । घटनाओं के चयन, पात्रों के चरित्र-चित्रण तथा संवादों के संयोजक में वे बड़े सार्थक रचनाकार रहे । अत: राकेश का साहित्य विशेषत: मध्यवर्गीय मनुष्य का साहित्य ही रहा ।

3 दिसंबर 1972 को मात्र 48 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ ।

कृतियाँ : नाटक - आषाढ़ का एक दिन, लहरों का राजहंस, आधे-अधूरे,
पैरों तले की जमीन ।

एकांकी-संग्रह - अण्डे के छिलके, बीज नाटक, रात बीतने तक ।

यात्रा संस्मरण - आखिरी चट्टान

निबंध-संग्रह - बकलम खुद व परिवेश

कहानी संग्रह - इन्सान का खंडहर, नए बादल

उपन्यास - अंधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल, अंतराल ।

9.1.4. सूचना :

मोहन राकेश के लिखे नाटकों में 'आधे-अधूरे' का विशिष्ट स्थान रहा है । यह उनका अंतिम नाटक है । यह एक समस्या प्रधान नाटक है । इसमें आज के विघटनशील परिवार की यथार्थ समस्याओं का चित्रण हुआ है ।

इसकी कथावस्तु समकालीन यथार्थ पर आधारित है । यह एक मध्यवर्गीय जीवन के साथ संबंधित है जो आहिस्ते-आहिस्ते टूट रहा है । नाट्यकार ने इसमें स्त्री-पुरुष संबंधों में आते बदलाव को दर्शाया है । व्यवसाय में पति असफल है, पत्नी अपने जीवन की पूर्णता प्राप्त करने में अधूरी है और बच्चे भविष्य के प्रति निराश और उदासीन हैं । इस प्रकार यह नाटक एक मध्यवर्गीय परिवार की पारस्परिक द्वन्द्व और मिश्रित घटना पर आधारित है ।

9.1.5. उद्देश्य :

* एक शहरी मध्यवर्गीय परिवार की यथार्थ घटनाओं को समझना ।
* स्त्री-पुरुष के संबंधों, तनावों का विवेचन करना ।
* नाटक के विभिन्न पात्रों की मनोवृत्तियों, प्रवृत्तियों तथा व्यवहारों के संदर्भ में चरित्र-चित्रण करना ।
* विभिन्न पात्रों में होने वाले संवादों पर प्रकाश डालना ।
* देशकाल-वातावरण के कारण होने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट करना ।
* नाटक की भाषा-शैली तथा मंचीय प्रस्तुति संबंधी विशेषताओं पर प्रकाश डालना ।

9.1.6. नाटक का विश्लेषण और विवेचन

9.1.6.1. कथावस्तु

'आधे-अधूरे' नाटक एक सार्थक और प्रामाणिक नाटक है । यह मध्यवर्गीय जीवन, कार्यकलाप, अनुभव, संबंध तथा परिवेश को रेखांकित करता है । परिवार के सदस्यों की अभिशप्त जिन्दगी का यह एक प्रामाणिक दस्तावश्रेलज है । केवल भौतिक सुख-सुविधाओं तथा क्षणिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए मृग - मरीचिका में फँसकर पारिवारिक संपर्क टूट जाता है । पति-पत्नी के बीच असंतुलन और असामंजस्य की विषम स्थिति है । परिवार में सब अधूरेपन की जिन्दगी जी रहे हैं और सबसे बड़ी त्रासदी और आश्चर्य की बात यह है कि कोई एक दूसरे से अलग भी नहीं रह पाता ।

इस मध्यवित्त परिवार में महेन्द्रनाथ अपने मित्र जुनेजा के साथ मिलकर व्यवसाय करता था । घर में सोफा, कबर्ड डायनिंग -ड्रेसिंग टेबल, वासिंग मशीन, फ्रीज आदि सब कुछ था । किश्तों पर खरीदे गए थे । बच्चों की शिक्षा कांवेंट स्कूल में हुई थी । पति-पत्नी तथा बच्चे काफी शिक्षित । आर्थिक स्थिति भी बहुत बढ़िया, समाज में उनकी मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा थी । परंतु व्यवसाय में नुकसान हेतु आर्थिक स्थिति धीरे-धीरे खराब हो जाती है । महेन्द्रनाथ कर्जदार और बे-रोजगार होने के कारण बेटा पढ़ाई छोड़ देता है और बेटी घर से भागकर माँ के प्रेमी से शादी कर लेती है । छोटी बेटी उद्दंड होती जा रही है । सावित्री बेहतर जिन्दगी जीने की तमन्ना से अन्य पुरुष की

तलाश में है । इस प्रकार परिवार के सदस्यों में तनाव, घुटन, टूटन और असंतोष की स्थिति है । वस्तुत: टूटते संबंधों और बिखरते परिवार के चित्रण के जरिए नाट्यकार का केन्द्रीय सरोकार 'घर' की तलाश ही है ।

9.1.6.2. नाटक में आधुनिकता :

'आधुनिक' शब्द से तीन अर्थ प्रकट होते हैं । समय सापेक्ष, नवीनता का वाचक, एक विशेष उद्देश्यपूर्ण दृष्टिकोण । वस्तुतः आधुनिकता का संबंध यथार्थ और जीवंत दृष्टिकोण से होता है । सामान्यत: इसका बोध तीन प्रकार से होता है : युग-बोध, जीवन बोध और आत्म बोध । यह नाटक आधुनिक युग-बोध से ही अधिक प्रेरित है क्योंकि इसकी कथा अधिकाधिक आधुनिकता बोध से युक्त है ।

मोहन राकेश ने इस नाटक में आधुनिक -युगीन मध्यवर्गीय परिवार की सांस्कृतिक - पारिवारिक विघटन को उजागर किया है जो एक जीवन्त दस्तावेज है । आधे-अधूरे नाटक के आधुनिकता - बोध को निम्न प्रकारों से हम जान सकते हैं :

परिवार : प्रस्तुत नाटक में आधुनिक मध्यवर्गीय परिवार की सामाजिक, मानसिक तथा आर्थिक स्थितियों का चित्रण हुआ है । परिवार में मनांतर और मतांतर का मुख्य कारण धनाभाव है । महेन्द्रनाथ परिवार का मुखिया है परंतु व्यवसाय में असफल होने के कारण उसकी पत्नी सावित्री और बच्चे उसे नापसंद करते हैं । पत्नी व बच्चों के रुक्ष व्यवहार से महेन्द्रनाथ कभी -कभी चुप रहता है ।

परिवार का खोखला और विरोधी संबंध :

प्रस्तुत नाटक में नाट्यकार ने महेन्द्रनाथ और सावित्री के माध्यम से पारिवारिक संबंधों को दर्शाया है । सावित्री पति की परवाह न करके अन्य पुरुष के साथ पूर्णता की प्राप्ति के उद्देश्य से संपर्क रखती है । इसलिए दोनों का दांपत्य जीवन कलहपूर्ण रहता है । अशांति और उपेक्षा का झूठा जीवन दोनों को झेलना पड़ता है । इसका प्रभाव बच्चों पर भी पड़ता है । परिवार में सदस्यों के भीतर एक खोखला संबंध दिखाई पड़ता है । कोई प्रेम नहीं, कोई लगाव नहीं ।

धनाभाव : आधुनिक युग भौतिकवाद का युग है । प्रत्येक वस्तु की प्राप्ति के लिए लोगों को धन की जरूरत पड़ती है । परिवार में धन की कमी होने के कारण सदस्यों में झगड़ा शुरू हो जाता है । इस नाटक में राकेश ने अर्थाभाव की प्रवृत्ति को उजागर किया है । महेन्द्रनाथ के पास जब पर्याप्त धन था तब सब उसका आदर करते थे किन्तु जब वह व्यापार में असफल हो गया तब सब उसका निरादर करने लगे । पैसों के लिए सावित्री बड़े-बड़े लोगों से संपर्क रखती है जिसके कारण पूरा परिवार नष्ट हो जाता है ।

बनावटी जीवन - शैली : मध्यवर्गीय परिवार की जीवन -शैली भी कृत्रिम और बनावटी है । जो वह नहीं है वह उसे अत्यन्त आडम्बर रूप से दिखाना चाहता है । अपने को अमीर दिखाने के कारण वह कई गलत उपायों का अवलंबन करता है और अन्त में सच्चाई समाज को पता चल ही जाती है ।

9.1.6.3. नाटक में प्रयोग - धर्मिता :

आधुनिक नाटकों की शुरूआत कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, भाषा-शिल्प, रंगमंचीयता तथा नवीन प्रयोग की दृष्टि से मानी जाती है । इस नाटक में राकेश ने आधुनिक प्रयोगधर्मिता को निम्न रूप से उजागर करने का प्रयास किया है :

कथानक संबंधी प्रयोग : इसका कथानक समकालीन समाज पर आधारित है । नाटककार ने एक मध्यवर्गीय परिवार के पारिवारिक मानव-मूल्यों का विघटन दर्शाया है । पति-पत्नी के बीच तनाव है । दोनों एक दूसरे से धन के अभाव हेतु असंतुष्ट हैं । व्यवसाय में जब लाभ होता था तब परिवार ठीक था लेकिन जब हानि हुई तब सदस्यों में झगड़ा शुरू हो गया । इसी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए सावित्री गलत रास्ता अपनाती है । बच्चे भी घुटन महसूस करके खराब कार्य करके बदनाम होते हैं । इस प्रकार घर में अशांति फैल जाती है और सदस्यों में आन्तरिकता नष्ट हो जाती है ।

चरित्र संबंधी प्रयोग : 'आधे-अधूरे' नाटक में मोहन राकेश ने पात्रों के नामकरण में नवीन प्रयोग किया है । मुख्य चरित्रों का नाम तो दिया है तत्सहित पुरुष एक, पुरुष दो, पुरुष तीन, पुरुष चार, स्त्री, लड़का, लड़की ऐसा भी दिया है । इससे मध्यवर्गीय परिवार के सदस्यों के बीच परस्पर प्रेम और लगाव का भाव तो रहता है और झूठा अहंकार, घृणा, दिखावा और आत्महीनता का भाव भी । समस्त चरित्र एक ही परिवार के होते हुए भी सब परस्पर भिन्न प्रकार से बर्ताव करते हैं जिसमें नवीनता पाई जाती है ।

संवाद - योजना संबंधी प्रयोग : साहित्य में विभिन्न चरित्रों के बीच होने वाला कथोपकथन ही संवाद- योजना है । प्रस्तुत नाटक में राकेश ने संवादों के शब्दों में सांकेतिकता का नया प्रयोग किया है । उन्होंने सांकेतिकता के तत्वों को समावेश करने के लिए बिन्दुओं(....), योजक चिन्ह(-) डैस आदि का प्रयोग किया है । उन्होंने चरित्रों की स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए आंगिक, कायिक अभिनय, उतार-चढ़ाव, हाव-भाव आदि से संवाद का नवीन प्रयोग भी किया है ।

दृश्य योजना संबंधी प्रयोग : प्रस्तुत नाटक में तीन दरवाजों वाले कमरे का दृश्य प्रस्तुत किया गया है । उन्होंने कथानक में एक ही मध्यांतर का प्रयोग किया है जिसे अन्तराल विकल कहा गया है । समस्त दृश्य योजना केवल एक ही सैट या दृश्य पर प्रस्तुत किया गया है जो एक नूतन प्रयोग है । कम स्थान तथा अल्प समय में नाटक का कथानक सफलता के साथ दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत है ।

विशिष्ट ध्वनि तथा भाषा संबंधी प्रयोग : इस नाटक का भाषा-शिल्प अत्यंत महत्वपूर्ण है । बिल्कुल बोलचाल की भाषा है जो अत्यंत सरल व बोधगम्य है । शब्दों का चयन, क्रमानुसार प्रयोग और संयोजन बहुत प्रभावपूर्ण है । नाटक में भाषाई कुशलता पाई जाती है जो दर्शकों द्वारा सराहनीय है ।

इस प्रकार यह निश्चत है कि आलोच्य नाटक के कथानक, चरित्रांकन, संवाद-योजना, रंगमंचीयता, दृश्य योजना तथा भाषा-शिल्प आदि में नवीन प्रयोग पाए जाते हैं जिसके कारण मोहन राकेश जैसे नाटककार अति प्रशंसा के पात्र हैं ।

9.1.6.4 नाटक में स्त्री-पुरुष के संबंधों का विश्लेषण :

मोहन राकेश का नाटक 'आधे-अधूरे' एक मध्यवर्गीय शहरी परिवार का नाटक है । इसमें स्त्री-पुरुष (सावित्री और महेन्द्रनाथ) के परस्पर में प्रेम - घृणा, लगाव - अलगाव, द्वेष-विद्वेष, संतोष-असंतोष भावों का मार्मिक चित्रण हुआ है । नाटककार ने एक संपूर्ण घर की तलाश का उत्तरदायित्व सावित्री को सौंपा है । परंतु आर्थिक स्थिति बिगड़ जाने के कारण वह अपने पति के अलावा अन्य पुरुषों के साथ संपर्क रखती है । परिवार के सदस्यों में आत्मीयता नहीं रहती । सावित्री भी अपने उद्देश्य को हासल करने में असफल रहती है । और अंत में पुन: अपने घर को लौटती है । नाटककार ने इस मध्यवित परिवार के बहाने हमारे समसामयिक समाज का चित्र प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है । आजकल ऐसी घटनाएँ प्राय: परिवार में घटित होती हैं । अत: यह नाटक एक परिवार की विघटन कथा है और मानवीय रिश्तों तथा मूल्यों के टूटने की गाथा भी । वास्तव में जब पति-पत्नी का संपर्क ठीक नहीं रहता तब पूरे परिवार को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है और बच्चे इससे बहुत बिगड़ जाते हैं ।

9.1.6.5. नाटक में चरित्रांकन :

'आधे-अधूरे' नाटक एक चरित्र प्रधान नाटक है । नाटककार मोहन राकेश ने अपनी रचना को पुरुष प्रधान बनाने का प्रयत्न किया है लेकिन सावित्री ही इसमें मुख्य चरित्र है ।

सावित्री : प्रस्तुत नाटक की नायिका सावित्री है जो महेन्द्रनाथ की पत्नी है । वह अपने स्वाभिमान को सुरक्षित रखने वाली एक स्वावलम्बी स्त्री पात्र है । वह अपने जीवन में परिवार में तथा सब में संपूर्णता चाहती है । जीवन में अधिक सुख-शांति, विलास-व्यसन की आकांक्षा के कारण वह अपने पति से रिश्ता तोड़कर दूसरा पुरुष तलाश करती है जो उसके पति की तरह आधा-अधूरा न हो । इसलिए वह जुनेजा, मनोज, शिवजीत और सिंघानिया जैसे पुरुषों से संपर्क रखती है और अंत में फिर घर वापस लौटती है । यही विडम्बना है कि उसकी सारी महत्वाकांक्षाएँ अपूर्ण रह जाती हैं और वह वैसी ही आधी-अधूरी रह जाती है ।

सावित्री आर्थिक रूप से परिवार की धुरी है । जब महेन्द्रनाथ बेकार बैठता है तब वह नौकरी करके सबका पालन -पोषण करती है । वह आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती हुई पूरे परिवार की जिम्मेदारी संभालती है । घर की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए वह अन्य पुरुषों के साथ संपर्क रखती है । जिससे उसे चरित्रहीन करार दिया जाता है । चूंकि वह वित्तीय मानसिकता का शिकार है ; इसलिए वह अन्य पुरुषों से रिश्ता जोड़ती है । उसमें पहले से ऐश्वर्य और धन के प्रति अधिक लगाव था जिसके कारण उसे विपथगामिनी होना पड़ा, महेन्द्रनाथ से उसे बहुत - कुछ पाने की इच्छा थी परंतु उसकी बेकारी ने ही उसे गलत रास्ता अपनाने को मजबूर कर दिया । अपनी सुख-

सुविधाओं की चाह तथा परिवार की खुशी के लिए उसने नरक का रास्ता अपनाया । एक ओर उसके सिर पर घर चलाने का भारी बोझ और दूसरी तरफ जीवन में स्वार्थ की पूर्ति न हो पाने की तीखी कचोट ।

अत: पूरे नाटक में सावित्री का चरित्र मुख्य है । नाटक के प्रारंभ से लेकर अंत तक वह सारी घटनाओं से प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जुड़ी हुई है । वह एक नहीं, अनेक प्रकार की भूमिकाओं का निर्वाह करती है । सब उसकी कमाई पर आश्रित है । सारी जिम्मेदारियाँ अपने कंधों पर लेती है । पर उसे अपनी पूर्णता प्राप्त नहीं होती । वह असफल ही रहती है, एक आधा-अधूरा जीवन बिताती है ।

महेन्द्रनाथ : आधे-अधूरे नाटक का नायक महेन्द्रनाथ है । सावित्री का पति है । दोस्त से मिलकर व्यवसाय करता है । परंतु व्यवसाय में नुकसान होने के कारण वह बेकार बैठता है । वह परिस्थितियों से टकरा-टकराकर टूट चुका है । सावित्री पर निर्भरशील है । उसका कोई व्यक्तित्व -चिन्तन नहीं है । छोटी-छोटी बातों में भी वह दूसरों पर निर्भर रहता है । वह कभी-कभी पत्नी के प्रेमियों के प्रवेश से दु:खी और कभी खूँखार बनकर घर से भाग जाता है । सबसे अपमानित होकर अपने मित्र जुनेजा के घर में रहने लगता है पर ब्लॉड-प्रेसर की बीमारी के कारण फिर अपने घर लौट आता है । पूरे नाटक में कहीं भी उसे गौरव-सम्मान नहीं मिलता ।

सहायक पात्र :

अशोक : अशोक महेन्द्रनाथ का बेटा है । इक्कीस साल का होकर भी बेकार बैठा है । कोई काम-धंधा नहीं । अपनी छली-भरी हँसी से युवा पीढ़ी को कष्ट पहुँचाता है । वह विशेषकर फिल्म अभिनेत्रियों की तस्वीरों तथा अश्लील किताबों में रुचि रखता है ।

जुनेजा : महेन्द्रनाथ का मित्र जुनेजा है । काफी पैसावाला है । दानों मिलकर व्यापार करते हैं, परंतु बाद में असफल होते हैं । वह दोस्त से स्वार्थ के लिए हमदर्दी रखता है ।

शिवजीत : शिवजीत दोगले किस्म का चरित्र है । उच्चशिक्षित और अनुभवी होने के बावजूद सही आदमी नहीं है । स्वार्थी है और सदा अपने काम से ही मतलब रखता है ।

जगमोहन : जगमोहन एकनिष्ठ न होकर जिन्दादिल वाला आदमी है । बहुत खर्चीला है और मीठा बोलकर दूसरों को आकर्षित करता है । बड़े लोगों के साथ खूब संबंध जोड़ता है ।

मनोज : मनोज सही आदमी नहीं है । काम-वासना में लिप्त है । पहले सावित्री से प्रेम करता है । फिर मौका पाकर उसकी बेटी बिन्नी को लेकर भाग जाता है ।

सिंघानिया : सिंघानिया कामुक है । पहले सावित्री के साथ संपर्क रखता है फिर उसकी बेटी किन्नी पर नजर डालता है ।

बिन्नी : महेन्द्रनाथ की बड़ी बेटी बिन्नी है । वह अपनी मां के प्रेमी मनोज से विवाह कर बैठी है । अब वह दु:खी और निराश है ।

किन्नी : महेन्द्रनाथ की छोटी बेटी किन्नी है । उद्दंड और विद्रोह करने वाली है । जिद्दी, स्वार्थी, मुँहफट और सिरचढ़ी स्वभाव की है और यौन संपर्क में रुचि रखती है ।

इस प्रकार नाटक के सभी पात्र प्रवृत्यात्मक दृष्टियों से एक दूसरे से विरोधी हैं । सभी आपस में लड़ -झगड़ रहे हैं और स्वार्थ हासल करने के लिए परस्पर मिलते हैं । चरित्रों में अन्तर्द्वन्द टूटने और कुंठा है । प्राय: सभी चरित्रों के भीतर अपूर्ण महत्वाकांक्षाएँ, असफलताएँ, घबराहट, छटपटाहट और चिड़चिड़ाहट आदि कु-प्रवृत्तियाँ घर कर चुकी हैं । जैसे भी हो, नाटककार ने प्रत्येक विधा द्वारा समस्त चरित्रों को उजागर किया है । सब एक-दूसरे के साथ संपर्क रखते हैं परंतु किसी में किसी के प्रति आन्तरिकता नहीं दिखाई देती । सब विपथगामी होते हैं और आधे-अधूरे रहते हैं ।

9.1.6.6. नाटक में संवाद -योजना :

'आधे-अधूरे' नाटक में संवाद साधारण और स्वाभाविक हैं लेकिन इनके व्यंग्यात्मक अर्थ बड़े गंभीर हैं ।

जैसे - **महेन्द्रनाथ :** आ गई दफ्तर से ? लगता है, आज बस जल्दी मिल गई ?

उपरोक्त संवाद यद्यपि यह सामान्य प्रश्न जैसा लगता है । परंतु यह महेन्द्रनाथ का सावित्री के प्रति व्यंग्य करार है । जो सावित्री भी अच्छी तरह समझ लेती है । सिंघानिया और जगमोहन के प्रति भी महेन्द्रनाथ का व्यंग्य है ।

महेन्द्रनाथ : आदमी जो जवाब दे, वह उसके चेहरे से भी तो झलकना चाहिए ।

उपरोक्त उदाहरण में बिन्नी के जवाब पर महेन्द्रनाथ की यह टिप्पणी द्रष्टव्य है । इसमें आज के व्यक्ति की मानसिकता और विषमता का संकेत बिन्नी के अन्तर्द्वन्द्व और आन्तरिकता से संपृक्त है ।

सावित्री : ओह, ओह .... । इन शब्दों से सावित्री के मन के झुंझलाहट, कड़ुवाहट और दमित आक्रोश की सूचना मिलती है ।

नाटककार ने भिन्न-भिन्न चरित्रों द्वारा उनकी मुख-मुद्राओं, भाव-भंगिमाओं तथा रंगचर्चाओं से बनने वाले दृश्य बिम्बों का भी प्रयोग किया है । जैसे -एक ही अभिनेता पर पांच मुखौटे ।

'बिल्कुल एक जैसे हैं आप लोग । अलग -अलग मुखौटे, पर चेहरा सबका एक ही ।'

नाटककार मोहन राकेश ने स्त्री का संघर्ष, अन्तर्द्वन्द्व, छटपटाहट आदि उसकी थकी-हारी भाव-भंगिमाओं से स्पष्ट मालूम होता है । 'स्त्री कई कुछ संभाले बाहर से आती है । कई कुछ में कुछ घर का है, कुछ दफ्तर का, कुछ अपना । चेहरे पर दिन भर के काम की थकान है और इतनी चीजों के साथ चलकर आने की उलझन ।'

इससे स्त्री की विवशता तथा उसके प्रति सहानुभूति की भावना भी स्पष्ट होती है ।

सावित्री - 'गले की माला को उंगली में लपेटते हुए झटका लगाने से माला टूट जाती है । परेशान होकर वह माला को उतार देती है व जाकर कबर्ड से दूसरी माला निकाल लेती है ।'

यह 'माला' शब्द सावित्री की मन:स्थिति का द्योतक है । इसके दाने घर के सदस्यों के प्रतीक हैं जिन्हें सावित्री एक सूत्र में बांध रखने का प्रयत्न करके भी असफल होती है । बेटे अशोक के निष्ठुर वर्ताव से दु:खी होकर वह जगमोहन के साथ अपना नया संसार बनाने की सोचती है जिससे पुरानी माला टूटने तथा नई माला पहनने की सूचना मिलती है ।

इस प्रकार नाटककार ने 'धूल' , 'हवा', 'फाइल', 'पर्स' आदि अनेक सामान्य शब्दों का प्रयोग करके नए अर्थ देने का सफल प्रयास किया है । उन्होंने प्राय: प्रचलित और रोजमर्रा जिन्दगी में प्रयुक्त शब्दों तथा मामूली-सी चीजों को प्रतीक के रूप में भी प्रयोग किया है ।

इस संपूर्ण नाटक के संवाद प्राय: छोटे-छोटे सघन और प्रखर हैं । प्रत्येक पात्र के संवाद में प्रयुक्त शब्दार्थ जाने बिना हम केवल ध्वनि तथा उच्चारण से चरित्र को जान सकते हैं । इस प्रकार उन्होंने सही नाटकीय संवादों का सार्थक प्रयोग किया है ।

9.1.6.7. नाटक में देशकाल-वातावरण :

'आधे-अधूरे' का देशकाल - वातावरण समकालीन शहरी मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ से संबंध रखता है । नाटककार ने महानगरीय देशकाल-वातावरण में उच्च मध्यवर्ग से हटकर निम्न मध्यवर्ग के एक विखंडित परिवार का चित्रण किया है । इसमें विशेषकर स्त्री-पुरुष संबंधों तथा आर्थिक परिस्थितियों के कारण झगड़ों को गहराई से रेखांकित किया गया है । पति-पत्नी के संबंध में तनाव, घुटन और संघर्ष का चित्रण है । महेन्द्रनाथ के अलावा अन्य सहायक चरित्रों में भी वातावरण का चित्रण उल्लेखपूर्ण है । इसकी सामाजिक, मानसिक और आर्थिक स्थिति में काफी अंतर है । इसमें अशोक और वर्णा के प्रेम का संकेत, किन्नी और सुरेखा का वार्तालाप तथा सुरेखा के माता-पिता के विवाहेतर संबंधों के संदर्भ से परिवेश अधिक प्रामाणिक बनता है ।

इस प्रकार नाटक सफलता से जुड़ी हुई है । समय, स्थान और कार्य व्यापार के वातावरण से नाटक का कथ्य अत्यंत प्रभावशाली और विश्वसनीय है । मोहन राकेश ने बहुत सोच-समझकर चरित्रों के अनुकूल दृश्यों तथा वातावरणों को जीवंत व रचनात्मक बनाया है ।

9.1.6.8. नाटक में भाषा-शैली, नाट्य संरचना और नाट्य संप्रेषण :

मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' में समकालीन शब्द, मुहावरे तथा बोलचाल की सृजनात्मक भाषा की अभिव्यक्ति मिलती है । इसकी नाट्य भाषा, शब्द, ध्वनि, मुद्रा और मौन आदि संश्लेषण से उपलब्ध हैं । इसकी भाषा -शैली परिवार के पारस्परिक संबंधों के तनाव, बिखराव, अलगाव, संघर्ष, सहानुभूति, छटपटाहट

और बौखलाहट आदि को जीने की भाषा में प्रस्तुत करती है । इसकी भाषा सहज, आत्मीय, बोधगम्य, स्वत: स्फूर्त, बिम्बात्मक, आंतरिक और लयपूर्ण है ।

प्रस्तुत नाटक के नाट्य शिल्प या रंग शिल्प में नाटककार अपनी शैलियों, युक्तियों, पद्धतियों तथा उपकरणों का प्रयोग करता है । यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें ध्वनि, शब्द, वाक्य संरचना, भाषाई दक्षता, दृश्य-बंध, प्रकाश, वस्त्र-भूषण और वेश-विन्यास आदि सब कुछ शामिल है ।

यह मूलत: पश्चिमी यथार्थवादी शैली का नाटक है । इसका प्रारंभ पारंपरिक भारतीय शैली की प्रस्तावना से हुआ है । नाटककार ने प्रस्तावना के माध्यम से आम लोगों के सामान्य परिवार का नाटक बनाने का प्रयास किया है ।

यह एक रोचक नाट्य युक्ति से संपृक्त है । शब्द समूह के विश्लेषण की दृष्टि से इसमें संस्कृत के तत्सम, उर्दू-फारसी तथा अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भरपूर है । टूटे-फूटे वाक्यों के अलावा प्रतिध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग है ; जैसे हड़ताल - अडताल, बच्चा-कच्चा, छोटी-मोटी, करना-धरना, माल-वाल आदि । निरर्थक ध्वनियों तथा ध्वन्यात्मक शब्द जैसे -चख-चख, ओफफोह - ओफफोह, थू-थू, किटपिट, ओह-ओह, हूँ-हूँ आदि का प्रयोग है । कुछ रोजमर्रा के हाव-भावों, तस्वीरों कॉपियों, किताबों तथा फटे मोजों के अर्थपूर्ण प्रयोग भी उपलब्ध हैं जिनसे औरतों की आंतरिक वेदना और खोयापन प्रकट होते हैं । 'मौन' का अत्यंत नाटकीय और अर्थगर्भ रूप का प्रयोग मिलता है । इसमें राकेश ने पात्रों के स्वभाव, मनोदशा, आयु के अनुकूल वेश-भूषा को महत्व निया है । इस प्रकार नाटकार ने अपने नाटक को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए नोट्य-शिल्प की छोटी-से छोटी चीज को भी व्यावहारिक और संतुलित दृष्टि से संयोजित किया है । ततसहित नाटक के दृश्य-बंध, संगीत और छायालोक का भी सार्थक उपयोग हुआ है । इसकी रंगमंचीयता से समकालीन हिन्दी रंगकर्म भी काफी समृद्ध हुआ है ।

9.1.6.9. नाटक का प्रतिपाद्य :

मोहन राकेश का नाटक 'आधे-अधूरे' एक मध्यवर्गीय परिवार की विसंगतियों को उजागर करता है । यह नाटक स्त्री-पुरुष के संबंधों, अमानवीय परिस्थितियों और पारस्परिक मनान्तर का एक जीवंत दस्तावेज है ।

इस नाटक में आधुनिक मध्यवर्गीय परिवार की सामाजिक, मानसिक और आर्थिक स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया गया है । आर्थिक स्थिति खराब हो जाने के कारण घर के सदस्यों में स्नेह-श्रद्धा, प्रेम तथा आत्मीयता का अभाव हो गया है । महेन्द्रनाथ मुखिया होने के बावजूद बेकार -बेगार होकर अपनी पत्नी की कमाई पर निर्भर करता है । सावित्री अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति तथा घर की स्थिति में सुधार लाने के लिए अन्य पुरुषों के साथ संपर्क रखती है । इसका प्रभाव बच्चों पर पड़ता है । इस प्रकार पारिवारिक विघटन की समस्या पर नाटककार ने प्रकाश डाला है ।

राकेश ने इस नाटक में परिवार के आपसी संबंधों के खोखलेपन, दिखावे तथा झूठे आडंबर को उजागर किया है । पति-पत्नी के तनाव, घुटन, गाली-गलौज, मार-पीट आदि का प्रभाव बेटे-बेटियों पर पड़ता है । बेटी

बिन्नी अपनी मां के प्रेमी मनोज के साथ भाग जाती है । किन्नी किसी की परवाह नहीं करती और गन्दी हरकतें करती है । बेटा अशोक घर बैठकर अभिनेत्रियों की तस्वीरें काटता रहता है । संपूर्ण परिवार विघटन के कगार पर खड़ा है ।

परिवार चलाने के लिए सावित्री को नौकरी करनी पड़ती है । यही कारण है जिसके लिए वह जुनेजा, शिवजी, मनोज, सिंघानिया और जगमोहन के साथ संपर्क रखती है । इसलिए बच्चे आवारा, उद्दंड और चरित्रहीन बन जाते हैं । पूरे परिवार के सदस्य आधे-अधूरे रह जाते हैं । किसी के जीवन में सुख-शांति, आनन्द नहीं रहता ।

इस प्रकार यह नाटक आधुनिक युग के आधे-अधूरे परिवार तथा तनावपूर्ण पारस्परिक संबंधों को दर्शाता है । राकेश ने इस नाटक को एक नई दिशा प्रदान की है । मध्यवर्गीय परिवार की सामाजिक, मानसिक तथा आर्थिक स्थितियों का यथार्थ चित्रण नाटककार ने अत्यंत सफल रूप से किया है ।

9.1.6.10. निष्कर्ष :

'आधे-अधूरे' नाटक एक मध्यवर्ग परिवार की विघटन कहानी है । इसमें चरित्रों के जरिए मध्यवर्गीय शुष्कता और रिक्तता प्रकट होती है । परिवार में होने वाले दिखावा, कुंठा, झूठाभिमान, आकांक्षा तथा अधूरापन का नग्न रूप प्रदर्शित है । परिवार में मुखिया महेन्द्रनाथ व्यवसाय में असफल है । पत्नी सावित्री अपने पति से असन्तुष्ट है । घर की आर्थिक स्थिति तथा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह अन्य पुरुषों से संपर्क रखकर खुद बदनाम होती है और घर की प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाती है ।

पूरा नाटक पारस्परिक द्वन्द्व पर आधारित है । घर में हमेशा तनाव, झगड़ा, असन्तोष और असंगत पूर्ण स्थितियाँ हैं । महेन्द्रनाथ जीवन में असफल है ; पत्नी सावित्री अधूरेपन से त्रस्त है और बच्चे विपथगामी हैं । किसी भी परिस्थिति में स्त्री-पुरुष का संपर्क शांतिपूर्ण नहीं रहा, जैसे नाटकीय जीवन जीने के लिए उनका जन्म हुआ है । सावित्री के चरित्र में अधूरापन है, बेटी बिन्नी में घुटन और झुंझलाहट है और छोटी बेटी किन्नी में विद्रोह की प्रतिक्रिया है और बेटे अशोक में आक्रोश तथा व्यंग्य-विद्रूप है । इस प्रकार नाटक समकालीन जीवन-यथार्थ पर आधारित है, इतिहास पर नहीं । इसमें नाटककार ने स्त्री-पुरुष के संबंधों में आते बदलाव को दर्शाया है । इसमें मध्यवर्ग की विशेषताओं तथा उसके संदर्भ में पारिवारिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है । पारिवारिक दायित्व एक अर्थ पिपासु तथा सुख-सुविधाओं के लिए लालायित स्त्री का चरित्र, कमाऊ स्त्री तथा बेरोजगार पति का चरित्र एवं बिगड़े बच्चों का कार्य-कलाप नाटक को अधिक सफल बनाता है । इस प्रकार 'आधे-अधूरे' नाटक का हिन्दी नाटकों में महत्वपूर्ण स्थान है ।

9.1.7 संभाव्य प्रश्न :

❋ व्याख्यात्मक प्रश्न :

क) तुम लड़ भी सकते हो इस वक्त, ताकि उसी बहाने चले जाओ घर से । ..... वह आदमी आएगा तो जाने क्या सोचेगा कि क्यों हर बार इसके आदमी को कोई न कोई काम हो जाता है बाहर । शायद समझे कि मैं ही जान-बूझकर भेज देती हूँ ।

ख) जब-जब किसी नए आदमी का आना-जाना शुरू होता है यहाँ, मैं हमेशा शुक्र मानता हूँ । पहले जगमोहन आया करता था । फिर मनोज आने लगा था ।

ग) वजह सिर्फ वह हवा है जो हम दोनों के बीच से गुजरती है ।

घ) मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी क्या यही हैसियत है इस घर में कि जो जब जिस वजह से जो भी कह दे मैं चुपचाप सुन लिया करूँ ? हर वक्त की दुत्कार, हर वक्त की कोंच, बस यही कमाई है यहाँ मेरी इतने सालों की ।

ङ) अधिकार, रुतबा, इज्जत - यह सब बाहर के लोगों से मिल सकती है इस घर को । इस घर का आज तक कुछ बना है या आगे बन सकता है, तो सिर्फ बाहर के लोगों के भरोसे ।

च) यहाँ पर सब लोग समझते क्या हैं मुझे । एक मशीन, जो कि सबके लिए आटा पीसकर रात को दिन और दिन को रात करती रहती है ? मगर किसी के मन में जरा-सा भी ख्याल नहीं है इस चीज के लिए कि कैसे मैं ... ।

छ) आज से मैं सिर्फ अपनी जिन्दगी को देखूंगी - तुम लोग अपनी-अपनी जिन्दगी को खुद देख लेना । मेरे पास अब बहुत साल नहीं हैं जीने को । पर जितने हैं, उन्हें मैं इसी तरह और निभाते हुए नहीं काटूंगी ।

ज) मुझे उस असलियत की बात करने दीजिए जिसे मैं जानती हूँ । .... एक आदमी है । घर बसाता है । क्यों बसाता है ? एक जरूरत पूरी करने के लिए । कौन-सी जरूरत ? अपने अन्दर के किसी उसको .... एक अधूरापन कह दीजिए उसे .... उसको भर सकने की ।

झ) मैंने आप से कहा है न, बस । सब के सब .... सब के सब । एक - सा ! बिलकुल एक से हैं आप लोग । अलग -अलग मुखौटे, पर चेहरा ? - चेहरा सबका एक ही !

आलोचनात्मक प्रश्न :

1. मोहन राकेश के नाट्य विचारों पर प्रकाश डालिए ।
2. 'आधे-अधूरे' नाटक की समीक्षा कीजिए ।
3. आजकल के मध्यवर्गीय जीवन के संदर्भ में 'आधे-अधूरे' नाटक का विवेचन कीजिए ।

4. महेन्द्रनाथ और सावित्री का चरित्र-चित्रण करते हुए पति-पत्नी के संपर्क पर प्रकाश डालिए ।

5. 'आधे-अधूरे' एक सफल पारिवारिक नाटक है । इस कथन को आप उदाहरणों के माध्यम से प्रमाण कीजिए ।

6. 'आधे-अधूरे' नाटक में पारिवारिक समस्याओं पर प्रकाश डालिए ।

अति लघूत्तरी प्रश्न :

1. मोहन राकेश का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

2. मोहन राकेश के रचित नाटकों के नाम लिखिए ?

3. उन्होंने कौन-सी पत्रिका का संपादन किया था ?

4. यह नाटक कब 'धर्मयुग' में प्रकाशित हुआ था ?

5. इस नाटक में स्त्री-पुरुष कौन हैं ?

6. महेन्द्रनाथ के अलावा सावित्री का संपर्क किन पुरुषों के साथ था ?

7. अशोक और महेन्द्रनाथ में क्या रिश्ता था ?

8. बिन्नी की शादी किससे हुई थी ?

9. सावित्री को कैसे पुरुष की तलाश थी ?

10. 'पाजामा' किसका प्रतीक है ?

11. अर्थ बताइए : खोह, हलक, ।

12. इस नाटक का केन्द्र-बिन्दु क्या है ?

13. मोहन राकेश की मृत्यु कब हुई थी ?

14. करना - धरना जैसे अन्य दो प्रतिध्वन्यात्मक शब्द लिखिए ।

15. 'माला ' का प्रतीक क्या है ?

16. नाटककार ने 'हवा' किसके लिए प्रयोग किया है ?

17. अशोक की प्रेमिका कौन है ?

18. 'ठीक है । उन लोगों की भी कुछ कम देन नहीं रही उसे बनाने में ।'

    यह किसने कहा ?

19. बड़ी बेटी का नाम क्या था ?

20. 'बिलकुल एक से हैं आप लोग ।' यह किसकी उक्ति है ?

21. सावित्री और बिन्नी में क्या संपर्क है ?

22. कौन छड़ी निकालने के लिए कहता है ?

23. 'मैं घर घुसरा हूँ । मेरी हड्डियों में जंग लगा है ।'- यह किसने कहा है ?

24. सुख-सुविधाओं के लिए कौन लालायित है ?

25. घर किसके लिए नष्ट हो गया ?

***

UNIT - II

चारुमित्रा

डॉ. रामकुमार वर्मा

9.2. एकांकी

9.2.1 . पाठ का नाम : चारुमित्रा

9.2.2. एकांकीकार का नाम : डॉ. रामकुमार वर्मा

9.2.3 लेखक परिचय

9.2.4 सूचना

9.2.5 उद्देश्य

9.2.6 पाठ का विश्लेषण और विवेचन

* कथावस्तु
* पात्र योजना और चरित्र - चित्रण
* संवाद योजना
* देशकाल व वातावरण
* भाषा शैली
* उद्येश्य

9.2.7. संभाव्य प्रश्न

* व्याख्यात्मक प्रश्न
* आलोचनात्मक प्रश्न
* लघूत्तरी प्रश्न
* अतिलघूत्तरी प्रश्न

चारुमित्रा

डॉ. रामकुमार वर्मा

9.2 एकांकी

9.2.1. पाठ का नाम : चारुमित्रा

9.2.2. एकांकीकार का नाम : डॉ. रामकुमार वर्मा

9.2.3. लेखक परिचय

9.2.4. डॉ. रामकुमार वर्मा का संक्षिप्त परिचय :

डॉ. रामकुमार वर्मा का जन्म मध्यप्रदेश के सागर जिले में सं. 1962 में हुआ था । उनके पिता लक्ष्मीप्रसाद डिप्टी कमिश्नर थे । हिन्दी और मराठी की शिक्षा उन्हें माता श्रीमती राजरानी देवी से प्राप्त हुई थी । वे बहुत अध्यनशील विद्यार्थी थे । सं. 1974 में राष्ट्रीय आन्दोलन में उन्होंने पढ़ना छोड़कर कविताएँ लिखी । 'देश सेवा' शीर्षक कविता पर उन्हें 'खन्ना पुरस्कार प्राप्त हुआ था । सं.1980 में उन्होंने पुन: पढ़ना आरंभ किया और सं. 1982 में एफ.ए परीक्षा उत्तीर्ण करके वे प्रयाग विश्वविद्यालय में पढ़ने लगे । स. 1986 में एम.ए. (हिंदी) परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर हिंदी अध्यापक बने । उन्हें 'हिंदी साहित्य का इतिहास' पर नागपुर विश्वविद्यालय ने पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की । सन् 1963 में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' नामक उपाधि से विभूषित किया । वे अखिल भारतीय हिन्दी परिसद के प्रमुख संस्थापक और केन्द्रीय शिक्षा-मंत्रालय की विशेषज्ञ समिति के सदस्य भी थे ।

आधुनिक हिन्दी कवियों में वर्मा का उल्लेखनीय स्थान है । उन पर कबीर के अध्यात्म दर्शन का अधिक प्रभाव पड़ा था । प्रकृति के प्रति उनके हृदय में स्वाभाविक अनुराग था । उन्होंने रहस्य चेतना में विश्व बन्धुत्व की सुन्दर कल्पना की थी । सांसारिक क्षणभंगुरता की भावभूमि पर उन्होंने करुणा और निराशा के चित्र अंकित किए । उनको वर्णनात्मक और गीतिकाव्य सृजन में समान रूप से सफलता मिली थी ।

वर्माजी की भाषा विशुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है । संस्कृत के सरल तथा क्लिष्ट तत्सम तथा गीतिकाव्य दोनों दृष्टिगोचर होते हैं ।

वर्माजी की प्रतिभा बहुमुखी है । उन्होंने कविता, नाटक, उपन्यास, निबन्ध और आलोचना आदि में सफलतापूर्वक कलम चलायी है ।

काव्य - वीर हमारे, कुल ललना, चित्तौड़ की चिता, चितवन, चित्रलेखा, अंजलि, आधुनिक कवि, एकलव्य(महाकाव्य) ।

नाटक - सत्य का स्वप्न, विजय पर्व, चारुमित्रा, आदि ।

गद्यकाव्य - हिम-हास ।

एकांकी - संग्रह - पृथ्वीराज की आँख, शिवानी, चारुमित्रा, कौमुदी महोत्सव, रजतरश्मि, ऋतुराज, दीपदान, इन्द्रधनुष आदि ।

निबंध और आलेचना - विचार - दर्शन, साहित्य शास्त्र, साहित्य समालोचना, हिन्दी साहित्य का आलोचमात्मक इतिहास, हिंदी साहित्य का इतिहास आदि ।

संपादित - हिंदी गीत-काव्य, कबीर पदावली, आठ एकांकी, आधुनिक हिंदी काव्य, संक्षिप्त कबीर ।

9.2.4. सूचना :

एकांकी का प्रारंभ सम्राट अशोक के कलिंग की सीमा पर सैनिक शिविर में रानी तिष्यरक्षिता और परिचारिका चारुमित्रा के वार्तालाप से हुआ है । सम्राट को युद्ध विमुख करने के उद्देश्य से रानी के एक व्यंगात्मक चित्र में राजा के घोर रक्तपात की व्यंजना की गई है । चारुमित्रा की बातों से रानी उसे महाराज के साथ विश्वासघात की शंका करती है । और अंत में अशोक के लिए उसके बलिदान की घटना सभी को आश्चर्यचकित कर देती है । कलिंग युद्ध के अवसर पर अशोक ने शस्त्र त्याग करके बौध्द धर्म ग्रहण किया है । चारुमित्रा के आत्मोत्सर्ग की खबर पाकर अशोक और तिष्यरक्षिता उसकी भूरि -भूरि प्रशंसा करते हैं ।

9.2.5. उद्देश्य :

डॉ. रामकुमार वर्मा ने आलोच्य एकांकी में चारुमित्रा के आत्म बलिदान को बताने का प्रयास किया है । तत् सहित उन्होंने सम्राट के युद्ध विमुख करने के लिए तिष्यरक्षिता का चरित्रोत्कर्ष किया है और उनके शस्त्र त्याग की घटना को भी सफल रूप से चित्रित किया है । अंत में युद्ध की ताण्डव लीला से अत्यंत दु:खित होकर अशोक का बौद्ध धर्म में दीक्षित होना नाटक का उद्देश्य है ।

9.2.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन :

❋ कथावस्तु

आलोच्य एकांकी का कथानक ऐतिहासिक, पात्र घटनाओं से संबंधित है । यह सम्राट अशोक की परिचारिका चारुमित्रा द्वारा अपना जीवन महान् कलिंग के लिए बलिदान

करने की घटना पर आधारित है । कलिंग युद्ध के समय ही अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण करते हुए शस्त्र त्याग किया था जो इतिहास प्रसिद्ध घटना है ।

नाटक के प्रारंभ में चारुमित्रा के प्रति तिष्यरक्षिता द्वारा अविश्वास व्यक्त किया जाता है । चूंकि चारुमित्रा मूलत: कलिंग की रहने वाली है ; अत: उसके मुँह से ऐसी बातें निकलती हैं जिनमें कलिंग -वासियों की वीरता और देश प्रीति उभरती है । लेकिन तिष्यरक्षिता उसे शक करती है कि वह महाराज के साथ विश्वासघात कर सकती है । परंतु चारुमित्रा स्पष्ट बोल देती है कि मेरी स्वामी - भक्ति पर संदेह करना ही मुझे आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करना है । कुछ ही समय के बाद यह सच साबित हो जाता है । जब वह अपने स्वामी के प्राण की रक्षा करने के उद्देश्य से अपने कलिंगवासी सेनाओं से संघर्ष करती हुई हताहत हो जाती है । अशोक को इस तत्थ से चोट पहुँचती है कि चारुमित्रा ने उसकी न्याय व्यवस्था पर विश्वास नहीं किया और आत्महत्या करके उनकी सत्ता का भी अपमान किया है । अंत में अशोक और तिष्यरक्षिता को चारुमित्रा की आहतावस्था की वजह मालूम हो जाती है और दोनों उसकी भूरि - भूरि प्रशंसा करते हैं । इस प्रकार रोचकता, कौतूहलता तथा अभिनेयता की दृष्टि से चारुमित्रा की कथावस्तु बहुत सफल है ।

* पात्र - योजना और उनका चरित्र - चित्रण :

आलोच्य एकांकी में तीन मुख्य पात्र हैं - चारुमित्रा, रानी तिष्यरक्षिता और सम्राट अशोक ।

चारुमित्रा - चारुमित्रा तिष्यरक्षिता की विश्वस्त परिचारिका है । यद्यपि उसकी मातृभूमि कलिंग है पर वह मगध के प्रति पूरी तरह समर्पित है । सम्राट अशोक की लड़ाई सालों से निरंतर चल रही है जो उसे अच्छी नहीं लगती क्योंकि वह खून-खराबा नहीं चाहती । वह कला की प्रशंसा करने वाली औरत है । उसे मीठी वाणी प्रिय है । कलिंग के वीरों की प्रशंसा से वह कभी नहीं ऊबती । रोम - रोम से उसकी देश प्रीति झलकती है । चारू एक अच्छी नृत्यशिल्पी भी है । उसके चरित्र से सेवा निष्ठा, त्याग व बलिदान की महत्ता स्वत: स्पष्ट होती है । वह अपने स्वामी की रक्षा के लिए कलिंग सैनिकों से लड़कर स्वत: आत्मोत्सर्ग कर देती है । इस प्रकार एकांकीकार ने चारुमित्रा के चरित्रांकन पर विशेष बल दिया है । वह पाटलीपुत्र की शोभा है, इसके गौरव की विभूति है । देशभक्ति का जितना आदर करती है उतना ही स्वामिभक्ति का ।

तिष्यरक्षिता - सम्राट अशोक की रानी तिष्यरक्षिता है । रानी शांति प्रिय है युद्ध प्रिय नहीं । दो साल तक लम्बे अर्से तक चलने वाले युद्ध से वह ऊब चुकी है । इससे स्पष्ट होता है कि वह युद्ध और रक्तपात से घृणा करती है । वह बेहद प्रकृति प्रेमी है । चित्रकला के प्रति उनमें रुचि है । व्यंग चित्र के माध्यम से भी बहुत बोलना चाहती है । कभी-कभी बेवजह भी संदेह करना उन्हें पड़ता है । परंतु बाद में सच्चाई जानने के बाद उन्हें पश्चाताप भी होता है । पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधों के प्रति उनमें प्रेम है । वह बौद्ध धर्म की अनुगागिनी भी है । उपगुप्त तथा बौद्ध भिक्षुओं के चरित्र का प्रभाव उनपर पड़ता है । वह बहुत कोमल हृदय वाली है । वह नहीं चाहती कि वीरों के खून से धरती मां रंगी जाए । वह पतिव्रता है । पत्नी होकर कभी वह पति को बाधा पहुँचाने का साहस नहीं रखती । उन्हें राज मर्यादा का उल्लघंन करना पसंद नहीं, महारानी होकर भी उन्हें शांति नहीं मिलती । वह एक साधारण स्त्री होना अधिक चाहती है । चारुमित्रा के बलिदान से वह धन्य हो जाती है ।

अशोक -अशोक मगध के अद्वितीय सम्राट हैं । उनमें वीरता है सैन्य संचालन की शक्ति है । साहस और आत्माभिमान भी । वे कलिंग नरेश के स्वातंत्र्य प्रेम और धैर्य से समझौता करना नहीं चाहते । उनका चरित्र दृढ़ और प्रभावशाली हैं । चाल में सतर्कता और दृढ़ता है । तेजस्वी वीर है अशोक । वे अपना साम्राज्य चारों ओर फैलाना चाहते हैं । वे नीति कुशल हैं । युद्ध कौशलों में प्रवीन है । विजय के अभिलाषी हैं । परंतु चारुमित्रा के आत्मोत्सर्ग से वे बहुत चकित हो जाते हैं और युद्ध को सदैव के लिए छोड़ देते हैं । उनमें एक भारी परिवर्तन होता है । वे केवल जनसाधारण की सेवा करना चाहते हैं । सबका हित करना उनका कर्त्तव्य है । इस प्रकार अशोक का चरित्र चित्रण सफल रूप से किया गया है ।

❃ **संवाद योजना** - प्रस्तुत एकांकी संवाद योजना की दृष्टि से निश्चित रूप से सफल है । इसमें पात्रों के कथोपकथन संक्षिप्त व मार्मिक हैं ; जैसे -

तिष्यरक्षिता - यह चित्र में महाराजा को दिखलाना चाहती हूँ । उनसे कहूँगी , देखिए आपने कलिंग के वीरों को तो रक्त से नहला ही दिया है, अब आपकी तलवार इन बेचारे वृक्षों पर भी पड़ी है, और उनकी शाखाओं व टहनियों से रक्त निकल रहा है ।

चारूमित्रा - महारानी आपकी बात की थाह नहीं ली जा सकती ।

तिष्यरक्षिता - चारू !

चारूमित्रा - महारानी !

इन दोनों चरित्रों का वार्तालाप अत्यंत सरल व बोधगम्य है । इसमें संक्षिप्तता पाई जाती है ।

अशोक - राजुक ! चारुमित्रा जलते हुए अंगारों पर नाचना चाहती है । आग तैयार है ?

राजुक - जो आज्ञा !

अशोक - चारुमित्रा ! दूसरे पैर में भी नूपुर पहन लो । एक पैर से पूरी ध्वनि नहीं निकलेगी और दूसरा पैर नुपूरों की प्रतीक्षा में है ।

तिष्यरक्षिता और उपगुप्त में वार्तालाप

तिष्यरक्षिता - प्रणाम करती हूँ । भंते !

उपगुप्त - सुखी रहो, देवी ! क्या महाराज नहीं हैं ?

तिष्यरक्षिता - भंते ! वीर पुरुष घर पर नहीं रहते । रणक्षेत्र ही उनका घर है ।

उपगुप्त - देवि ! रणक्षेत्र हृदय को शांति नहीं दे सकता । तथागत ने कहा है -

ईर्ष्या का नाश करो ! यह युद्ध अधिकार लिप्सा है, इसका अंत नहीं है, देवि !

अशोक - तू पाटलीपुत्र की शोभा है, उसके गौरव की विभूति है ।

चारुमित्रा - महाराज, आग के अंगारों पर नाचने का अवसर तो आपने नहीं दिया -

अब मैंने अंगारों पर अपनी देह रखने का अवसर आपसे मांग लिया ।

(तिष्य से) क्षमा करें, देवि !

तिष्यरक्षिता - ओह, चारू, तू अच्छी हो जाएगी ।

चारुमित्रा - नहीं देवि, महाराज अशोक की जय !

* देश काल और वातावरण :

आलोच्य एकांकी देशकाल व वातावरण की दृष्टि से पूर्णतः सफल है । इसमें संध्याकाल से लेकर अर्धरात्रि से पूर्व तक की घटना का चित्रण है । एकांकीकार ने काल-ऐक्य और स्थान ऐक्य का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है । शिविर का वातावरण शांत और सौन्दर्य से भरा हुआ है । कक्ष में ऐश्वर्य बरस रहा है । रानी तिष्यरक्षिता चित्र बनाने में लीन है और भिन्न-भिन्न कोणों से चित्र की गहराई पर जाती है । इसमें अशोक भयंकर युद्ध के घोर सन्ताप की व्यंजना की गई है । संपूर्ण एकांकी में अशोक की वीरता, युद्धकौशल आदि का वर्णन है । अंत में वातावरण में परिवर्तन होता है । चारुमित्रा की बलिदान से अशोक युद्ध छोड़ कर शांति को अपनाते हैं और चारुमित्रा की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं ।

* भाषाशैली :

एकांकी की दृष्टि से प्रस्तुत एकांकी की भाषा-शैली प्रभावशाली है । इसमें तत्सम शब्दावली का प्रयोग हुआ है । पात्रों की भाषा शैली में संघर्ष व द्वंद और संदेह दिखाई दे रहा है । भाषा -शैली सरल, सुन्दर और बोधगम्य है ।

* उद्देश्य :

प्रस्तुत एकांकी की घटना कलिंग युद्ध के अवसर पर घटित होती है । रानी तिष्यरक्षिता और चारुमित्रा के वार्तालाप से आरंभ होकर चारुमित्रा के बलिदान में यह समाप्त होती है । तिष्यरक्षिता

चारुमित्रा पर शंका करती है कि शायद वह कलिंगवासिनी होने के नाते महाराज के साथ विश्वासघात कर सकती है । परंतु वह सम्राट अशोक की जान बचाती है । फिर राजा अशोक और रानी तिष्यरक्षिता दोनों चारुमित्रा की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं । दोनों पर बौद्धभिक्षु उपगुप्त के उपदेशों का गहरा प्रभाव पड़ा है, अशोक बौद्धधर्म ग्रहण करके शस्त्र त्याग करते हैं । एकांकीकार ने अत्यंत सफलतापूर्वक चारुमित्रा के त्याग और बलिदान के जरिए सम्राट अशोक के जीवन में होने वाले परिवर्तन को स्पष्ट किया है ।

9.2.7 **संभाव्य प्रश्न :**

व्याख्या के अंश -

* तू जानती ही नहीं, लड़ाई किसे कहते हैं ? जीवन भी तो एक लड़ाई है । पुरुष की स्त्री से लड़ाई, स्त्री की पुरुष से लड़ाई । स्त्री-पुरुष की पुरुष-स्त्री की लड़ाई । तूने कभी लड़ाई लड़ी ही नहीं ।

* महारानी - क्षमा कीजिए । इसमें महराज की शक्ति का अपमान नहीं है । मेरे कलिंग के लोग वीर हैं, वे आपकी तरह अपनी भूमि का आदर करते हैं । जब तक एक भी वीर है तब तक तो कलिंग की जय का घोष वायु को सहन करना ही होगा ।

* समय की प्रतीक्षा करो । महाराज में परिवर्तन होगा । जब किसी व्यक्ति में शक्ति की क्षमता होती है, तो बुरे मार्ग से अच्छे पर और अच्छे से बुरे मार्ग पर जाने में विलंब नहीं लगता ।

* महाभिक्षु - आज से मैं हिंसा किसी रूप में न करुंगा । और देखूंगा कि मनुष्य का रक्त इस पृथ्वी पर न पड़े । प्रत्येक स्थान पर, सिंहासन पर, अंत:पुर में, विहार में, मैं जनता की सेवा करूंगा ।

* महाराज, आग के अंगारे पर नाचने का अवसर तो आपने नहीं दिया - अब मैंने अंगारों पर अपनी देह रखने का अवसर आपसे मांग लिया ।

आलोचनात्मक प्रश्न :

दीर्घ उत्तरी प्रश्न

1. चारुमित्रा एकांकी का सारांश लिखिए ।
2. डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा रचित 'चारुमित्रा' की एकांकी कला की दृष्टि से समीक्षा कीजिए ।
3. चारुमित्रा' एकांकी में 'चारुमित्रा' का चरित्र-चित्रण कीजिए ?

अति लघूत्तरी प्रश्न :

1. किसने सेल्यकूस की सेना का नाश कर दिया था ?
2. 'शत्रु कभी छोटा नहीं होता' - किसने कहा था ?
3. चारुमित्रा कौन है ?
4. नूपुर पहनकर नृत्य करने वाली कौन है ?
5. सम्राट अशोक युद्धभूमि में कैसा नृत्य प्रसन्द करते हैं ?
6. 'विश्वासघातिनी' किसने किससे कहा ?

7. दया करना किसका धर्म है ?

8. 'युद्धभूमि के अतिरिक्त प्रत्येक भूमि वीरों के लिए कलंक भूमि है'

यह किसका कथन है ?

9. अशोक ने किस तरह तलवार से अपना सिर बचा लिया था ?

10. शत्रुओं का नायक कौन था ?

11. चित्र में लाल रंग के बदले क्या भरने के लिए अशोक ने कहा ?

12. अग्नि में तप कर क्या पवित्र होता है ?

13. पितामह चन्द्रगुप्त ने कितने वर्ष तक शासन किया था ?

14. बौद्धधर्म के सबसे बड़े आचार्य कौन हैं ?

15. ज्ञान अमर है, राज्य क्षण भंगुर है ।' यह किसकी उक्ति है ?

19. किसने अशोक की जान बचायी ?

20. 'अब मैंने अंगारों पर अपनी देह रखने का अवसर आपसे मांग लिया ।'

यह कथन किसका है ?

***

रीढ़ की हड्डी

जगदीशचन्द्र माथुर

9.2.2 एकांकी

9.2.2.1. पाठ का नाम : रीढ़ की हड्डी

9.2.2.2. एकांकीकार का नाम : जगदीश चन्द्र माथुर

9.2.2.3. लेखक परिचय

9.2.2.4 . सूचना

9.2.2.5. उद्देश्य

9.2.2.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन

* कथावस्तु
* चरित्र -चित्रण
* संवाद योजना
* देशकाल व वातावरण
* भाषा शैली
* उद्देश्य

9.2.2.7. संभाव्य प्रश्न

* व्याख्यात्मक प्रश्न
* आलोचनात्मक प्रश्न
* लघूत्तरी प्रश्न
* अति-लघूत्तरी प्रश्न

रीढ़ की हड्डी

जगदीशचन्द्र माथुर

9.2.2.1. जगदीश चन्द्र माथुर

9.2.2.2. संक्षिप्त परिचय :

जगदीश चन्द्र माथुर का जन्म 1917 ई. में खुर्जा जिले के बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश में हुआ था । 1939 ई. में प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए.(अंग्रेजी) करने के बाद 1941 ई. में इंडियन सिविल सर्विस में चुन लिए गए । उन्होंने बिहार शासन के शिक्षा सचिव के रूप में छ: वर्ष, 1955 से 1962 ई. तक आकाशवाणी - भारत सरकार के डाइरेक्टर जनरल, फिर 1963-64 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय, अमेरिका में विजिटिंग फेलो नियुक्त होकर विदेश चले गए । वहाँ से लौटने के बाद विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर काम करते हुए 19 दिसम्बर 1971 ई. से भारत सरकार के हिंदी सलाहकार रहे ।

अध्ययन काल से ही उनका साहित्य लेखन प्रारंभ होता है । 1930 ई. में तीन छोटे नाटकों के माध्यम से, वे अपनी सृजनशीलता की धारा के प्रति उन्मुख हुए । 'भोर का तारा' में संग्रहीत सारी रचनाएँ प्रयाग में ही लिखी गयीं । यह नाम प्रतीक के रूप में शिल्प और संवेदना दोनों दृष्टियों से उनके रचनात्मक व्यक्तित्व को उजागर करता है । इसके बाद की रचनाओं में समकालीनता और परंपरा के प्रति गहराई क्रमश: बढ़ती गयी । व्यक्तियों, घटनाओं और देश के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त अनुभवों ने सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है । उनके नाटकों में रचनात्मक संभावना का प्रमाण 'कोणार्क' में है । परंपरा को माध्यम और संदर्भ के रूप में प्रयोग करने की कला में माथुर सिद्धहस्त हैं । उनकी 'रीढ़ की हड्डी' रचना समाज के बदलते रिश्तों और मानवीय संबंधों से है । वस्तुत: वे छायावादी संवेदना के रचनाकार हैं । 'पहला राजा' नाटक में उन्होंने व्यवस्था और प्रजाहित के आपसी रिश्तों को मानवीय दृष्टि से व्याख्यायित करने का प्रयास किया है । उनकी 'परंपराशील नाट्य' एक महत्वपूर्ण समीक्षा-कृति है । रामलीला, रासलीला आदि से नाटकों में उनके उपयोग की संभावना भी विवेच्य है । 'दस तस्वीरें' और 'जिन्होंने जीना जाना है' में व्यक्तियों की तस्वीरें और जीवनियां हैं जो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं ।

रचनाएँ - भोर का तारा(1946), कोणार्क (1950), ओ मेरे सपने(1950), शारदीया(1951), दस तस्वीरें(1962), परंपराशील नाट्य (1968), पहला राजा (1970), जिन्होंने जीना जाना (1972) आदि ।

9.2.2.3 सूचना :

रीढ़ की हड्डी एकांकी विवाह की पारंपरिक प्रथा से संबंधित है । विवाह से पहले लड़की को लड़के तथा उसके परिवार वालों से दिखाने की परंपरा कहाँ तक उचित और कहाँ तक अनुचित है, इस संबंध में बताया गया है ।

उमा का विवाह शंकर के साथ तय होता है । जब कि उमा बी.ए. तक पढ़ी-लिखी है पर उसके ससुर को मैट्रिक तक की योग्यता बतायी गयी है । अतिथियों के लिए वह खाना लाती है और सब खुश हो जाते हैं । बाद में जब लड़के के पिता उमा को इधर-उधर के प्रश्न पूछते हैं तब वह ऐसे जवाब देती है कि लड़के के पिता आश्चर्य हो जाते हैं । उन्हें पता चल जाता है कि वह उच्चशिक्षिता है । वे तुरन्त अपमानित हो कर अपने बेटे को लेकर चले जाते हैं और रिश्ता टूट जाता है । उमा स्पष्ट कह देती है कि जाइए, अरे अपने बेटे की रीढ़ की हड्डी है या नहीं, जाकर पता लगाइए इस प्रकार नाटक का अन्त होता है ।

9.2.2.4 उद्देश्य :

आलोच्य एकांकी का उद्देश्य आज की दुनिया में होने वाली अनुचित प्रथा के खिलाफ बताना है । विवाह से पहले लड़कियों को लड़के तथा उसके परिवार के सदस्यों को दिखाना ठीक नहीं । इससे लड़की के मानसिक स्तर पर प्रभाव पड़ता है । माता -पिता की इच्छा की पूर्ति के लिए लड़की को अपनी इच्छा की कुर्बानी करनी पड़ती है । जैसे इस प्रस्तुत एकांकी में उमा के साथ हुआ है । उमा के पिता ने लड़के शंकर के पिता से झूठ कहा है और अंत में सच सामने आ जाता है । लड़की अपनी इज्जत स्वयं बचाती है और उसके पिता को लड़के के अवगुण के बारे में बता कर भगा देती है ।

एकांकीकार का उद्देश्य है कि लड़की को विवाह में स्वतंत्रता दी जाए । उसे अपनी रुचि के अनुसार अपना वर चुनना चाहिए । माता-पिता भी लड़की को बोझ न मानकर उसे ऊंची शिक्षा दें । इसका सहारा लेकर अपने मित्रों से सच बोलें चाहे रिश्ता टूट जाए । क्योंकि सच निश्चित रूप से सामने आता है । इस प्रकार एकांकी नाटक का उद्देश्य प्रभावपूर्ण है ।

9.2.2.5. पाठ का विश्लेषण और विवेचन :

'रीढ़ की हड्डी' एकांकीकार जगदीश चन्द्र माथुर के द्वारा रचित है । यह आधुनिक काल में विवाह से पहले लड़कियों को देखने और दिखाने की अनौचित्यपूर्ण प्रथा से संबंधित है । आधुनिक काल से लड़कियों की शिक्षा-दीक्षा, चाल - चलन, लंबाई, मुटाई तथा सौन्दर्य रंग के बारे में खूब जांच की जाती है । तब विवाह तय होता है और यह भी निश्चित नहीं है कि सब कुछ होने पर भी लड़का शादी के लिए राजी हो जाए । एकांकीकार ने बड़े सुन्दर ढंग से इसके अनौचित्य पर प्रकाश डाला है ।

*** कथावस्तु** :

आलोच्य एकांकी में बाबू रामस्वरूप की बेटी उमा विवाह योग्य हो जाती है । इसलिए उसका विवाह वकील गोपाल प्रसाद के बेटे शंकर के साथ तय होता है । वकील मैट्रिक तक पढ़ी-लिखी लड़की को अपने डाक्टरी पढ़ रहे पुत्र के लिए बहू बनाना चाहते हैं । इसलिए रामस्वरूप उनसे झूठ बोलते हैं कि उमा ने मैट्रिक पास की है जबकि उसकी शैक्षिक योग्यता बी.ए. है ।

वकील गोपाल प्रसाद और शंकर का घर में भव्य स्वागत होता है क्योंकि लड़केवाले हैं । परिवार के सदस्यों में खूब वार्तालाप होता है । उमा से कई प्रश्न पूछे जाते हैं । पिता का मन रखने के लिए वह गाना गाती है परंतु अचानक उसकी नजर शंकर पर टिकती है और वह सहसा गाना बन्द कर देती है । जब गोपाल प्रसाद उसके उसके मुँह से कुछ सुनना चाहते हैं तब वह मुँह खोलके अच्छा जवाब देती है - ''बाबूजी' जब कुर्सी - मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता सिर्फ खरीददार को दिखा देता है । पसन्द आ गई तो अच्छा है वरना .. ।'' फिर कहती है -''जो महाशय मेरे खरीददार बन कर आए हैं, इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होते ? क्या उनको चोट नहीं लगती ? क्या वे भेड़-बकरियाँ हैं जिन्हें कसाई अच्छी तरह देखभाल कर खरीदते हैं । पुन: कहती हूँ - जरा अपने बेटे से पूछिए, वे लड़कियों के हॉस्टल के आसपास क्यों चक्कर काट रहे थे और कैसे अपमानित होकर भगाये गए थे ।''

उमा की इन बातों से गोपालप्रसाद को अच्छी तरह मालूम हो जाता है कि वह बहुत पढ़ी-लिखी है । बेचारे वे अपमानित होकर घर से भागने लगते हैं । उस समय भी उमा कहती है -''जाइए ! पता लगाइए कि आपके बेटे की रीढ़ की हड्डी है या नहीं ।'' इस प्रकार यह एकांकी कथावस्तु की दृष्टि से पूर्णत: सफल है ।

* चरित्र -चित्रण :

प्रस्तुत एकांकी में विभिन्न प्रकार के चरित्रों का चरित्रांकन स्वाभाविक रूप से हुआ है ।

गोपाल प्रसाद - गोपाल प्रसाद पेशे में एक प्रतिष्ठित वकील हैं । उनका स्वभाव वकील के जैसा है । उनकी बातों में दंभ अहंकार और अकड़ का पुट है । जाँच पड़ताल करते हैं यद्यपि वे खुद पढ़े-लिखे हैं परंतु अपने बेटे शंकर के लिए कम पढ़ी-लिखी बेटी चाहते हैं । वे दकियानूसी विचारों के होने के कारण एक साधारण मैट्रिक तक पढ़ने वाली लड़की को पसन्द करना चाहते हैं जो उनके घर के सारे काम-काज करे और सब कुछ सहती रहे ।

रामस्वरूप - रामस्वरूप लड़की उमा के पिता हैं । अधेड़ उम्र के हैं । स्वभाव आम आदमी की तरह है । यद्यपि उनकी बेटी बी.ए. तक पढ़ी है फिर भी उसकी शादी की खातिर वे झूठ का सहारा लेते हैं । अतिथियों का स्वागत करना अधिक पसन्द करते हैं । कहते हैं - आवश्यकतानुसार सब काम सही ढंग से करने वाले व्यक्ति हैं । अतिथियों के हाँ में हाँ मिलाने में रुचि रखते हैं । जैसे -तैसे काम निपटाना चाहते हैं ।

उमा - आलोच्य एकांकी की नायिका उमा का चरित्र प्रभावशाली है । वह स्पष्टवादी, साहसी और तेजस्वी है । झूठ, दिखावा उसे बिल्कुल पसन्द नहीं । जब कि वह बी.ए. पास है पर लड़के वालों को मैट्रिक पास क्यों बताया गया है पिता की ही झूठी बात से वह दु:खी है । विवाह के संबंध में उसकी राय न लेना वह अनुचित समझती है । लड़के के पिता के अनावश्यक सवालों से वह ऊबकर अपनी योग्यता बता देती है और शंकर के स्वभाव के बारे में भी सबसे कह डालती है । यही उसकी स्पष्ट वादिता है । आजकल समाज में लड़की को देखकर तरह-तरह के प्रश्न पूछकर अपमान करना वह ठीक नहीं समझती ।

* कथोपकथन (सवांद) योजना :

प्रस्तुत एकांकी की संवाद योजना संदर्भानुसार सार्थक और प्रभावशाली है ।

गोपालदास - यह सब आप तकल्लुफ क्यों करते हैं ?

रामस्वरूप - हे-हे-हे तकल्लुफ किस बात की ? हे -हे. यह तो मेरी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ लाये । वरना मैं किस काबिल हें- हें-हें .... । माफ कीजिए जरा हाजिर हुआ ।

इसमें रामस्वरूप का गोपाल प्रसाद के प्रति आदर-सत्कार है । उनकी उपस्थिति से वे बहुत खुश हैं और उनका मधुर वचन से संभाषण करते हैं ।

गोपाल प्रसाद और उमा में कथोपकथन

गोपाल प्रसाद - हाँ, बेटी तुमने इनाम - विनाम भी जीते हैं ?

(उमा चुप)

रामस्वरूप - जवाब दो उमा । हें -हें , जरा शरमाती है ।

गोपाल प्रसाद - जरा मुँह भी तो खोलना चाहिए ।

रामस्वरूप - उमा, देखो, क्या कह रहे हैं ? जवाब दो न ।

उमा - क्या जवाब दूं, बाबूजी ! जब कुर्सी-मेज बिकती है, तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीददार को दिखा देता है । पसन्द आ गई तो अच्छा है, वरना ...

ये जो महाशय मेरे खरीददार बनकर आए हैं, इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों का दिल नहीं होता ? क्या उनको चोट नहीं लगती ? क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख -भाल कर खरीदते हैं ?

उमा के उत्तेजित प्रश्नों से रामस्वरूप नाराज हो जाते हैं । उन्हें मालूम हो जाता है कि उमा पढ़ी-लिखी है । उसकी मर्जी के बिना शादी तय होने जा रही है । अंत में वे चले जाते हैं और उमा अपना आत्मसम्मान बचाती है ।

* देशकाल व वातावरण :

आलोच्य एकांकी देशकाल व वातावरण की दृष्टि से एक सफल एकांकी है । इसका आरंभ रामस्वरूप का गृह-कक्ष मात्र है । मामूली तरह से सजा हुआ कमरा है जहाँ कुर्सियाँ पड़ी हुई हैं । और एक तख्त भी वहाँ है । उस पर एक चादर बिछी है , बस, यही बैठकखाने की सजावट । इस एकांकी की कालावधि प्राय: एक घंटा मात्र है । अतिथियों के स्वागत के उद्देश्य से गृहसज्जा में सामान्य परिवर्तन हुआ है । वकील गोपालप्रसाद और लड़का शंकर आने की सूचना पाते ही नौकर तुरंत मक्खन लाने चला जाता है । उनका स्वागत होता है । और हल्के चाय

पान के बाद गुजरे जमाने की बातें चलती हैं । उमा को एक नजर देखकर उससे गाना सुनते हैं । तरह-तरह के प्रश्न पूछते हैं । तब उमा उनके बेटे के चरित्र तथा रीढ़ की हड्डी के बारे में कह देती है । तब उनका अपमान होता है और वे चले जाते हैं । अंत में वातावरण बड़ा गंभीर हो जाता है । गोपालप्रसाद के चेहरे पर बेवसी का गुस्सा, शंकर के चेहरे पर रुवासनपन रामस्वरूप धम्म से कुर्सी पर बैठ जाते हैं । उमा भी सिसकियाँ भरती नजर आती हैं । तभी नौकर रतन 'बाबूजी मक्खन ' कहता है तो दर्शकों का अट्टहास फूट पड़ता है क्योंकि जिन मेहमानों के लिए मक्खन मंगवाया गया था, वे अपमानित होकर चले गए । इस प्रकार नाटक समाप्त होता है ।

※ भाषा -शैली :

प्रस्तुत एकांकी में एकांकीकार ने सहज, सरल तथा बोलचाल के शब्दों और आवश्यकतानुसार तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है । नारी चरित्र की तनावपूर्ण मन:स्थिति को उन्होंने सृजनात्मक भाषा में प्रस्तुत किया है । उन्होंने सार्थक शब्दों के साथ-साथ प्रतीकों, बिम्बों तथा ध्वनि-प्रतिध्वनियों का प्रयोग किया है । तत्सम और अंग्रेजी शब्दों की तुलना में उर्दू-फारसी शब्दों का प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक है । टूटे-फूटे वाक्यों के अलावा प्रतिध्वनि ध्वन्यात्मक शब्दों का सार्थक प्रयोग हुआ है ।

माथुर ने चरित्रों के अनुकूल बोलचाल की जीवंत और रचनात्मक भाषा का प्रयोग किया है । इसकी रंगमंचीयता भाषा-शैली संबंधी समस्याओं ने समकालीन रंगकर्म को प्रेरित किया है । अंत में यह एकांकी भाषा-शैली की दृष्टि से समृद्ध और परिपक्व है ।

※ उद्देश्य :

प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य परंपरा से चली आने वाली प्रथा का खंडन करना है । लड़की को विवाह से पहले लड़के और उसके परिवारवालों को दिखाना अनुचित है । लड़की को भी स्वाधीनता चाहिए कि वह अपनी इच्छा और पसंद से लड़के को चुने । माता-पिता को भी लड़की की राय लेनी चाहिए और झूठ का सहारा लेकर अपनी बेटी को जबरदस्ती शादी करने के लिए राजी नहीं करना चाहिए । विवाह में लड़के और लड़की को तथा दोनों के परिवारवालों को बराबर महत्व देना चाहिए ।

इस प्रकार माथुर का एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी कला की दृष्टि से अत्यंत सफल है ।

9.2.2.6 संभाव्य प्रश्न :

* सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

* तुम्हींने तो उसे पढ़ा-लिखाकर ..... अनोखे हैं ... । (पृ. 125)

* दो तरह का .... रुकने का नाम नहीं । (पृ. 125)

* जनाब, यह हाल .... कमजोर है । (पृ. 129)

*और, क्या साहब .... शेरनी के नहीं ।   (पृ. 133)

* ये जो महाशय .... खरीदते हैं ।   (पृ. 136)

* जी हाँ, जाइए ... बैकबोन बैकबोन ।   (पृ. 137)

आलोचनात्मक प्रश्न :

दीर्घ उत्तरी प्रश्न -

1. 'रीढ़ की हड्डी' का सार अपने शब्दों में लिखिए ।

2. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में उमा का चरित्र - चित्रण कीजिए ।

3. एकांकी कला की दृष्टि से 'रीढ़ की हड्डी' की आलेचना कीजिए ।

अतिलघूत्तरी प्रश्न :

1. इस एकांकी के एकांकीकार का नाम लिखिए ?

2. राम स्वरूप कौन है ?

3. रामस्वरूप और प्रेमा में क्या संपर्क है ?

4. रामस्वरूप ने रतन को क्या लाने भोजा ?

5. 'जायचा' का अर्थ क्या है ?

6. गोपाल प्रसाद को कैसी लड़की चाहिए थी ?

7. दोनों उमा के चेहरे पर क्या देखकर चौंक पड़े ?

8. उमा ने कौनसा गीत सितार से गाया ?

9. दुकानदार कुर्सी-मेज बेचने के समय क्या नहीं करता ?

10. शंकर कहाँ घूम रहा था ?

11. किसके पैरों पड़कर शंकर भागा था ?

12. उमा ने कहाँ तक पढ़ाई की थी ?

13 वाक्या पूर्ति कीजिए :

मोर के पंख होते हैं ----- के नहीं, शेर के ---- होते हैं, शेरनी के नहीं ।

14. पान की तश्तरी कौन लाती है ?

15. बाप - बेटे क्यों चौंक पड़ते हैं ?

16. पसन्द आ गई तो अच्छा है, वरना ..... किसने कहा ?

17. आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए यहाँ बुलाया था ? - यह किसने किससे कहा ?

18. कौन नौकरानी के पैरों पड़कर मुँह छिपाकर भाग आए थे ?

19. रामस्वरूप ने उमा की योग्यता कहाँ तक बतायी थी ?

20. आपके बेटे की 'रीढ़ की हड्डी' भी है या नहीं । यह वाक्य किसने किससे कहा था ?

21. अंत में रतन क्या लाकर पहुँचता है ?

22. उमा की माता कौन है ?

***

महाभारत की एक सांझ

भारत भूषण अग्रवाल

9.2.3 एकांकी

9.2.3.1. पाठ का नाम : महाभारत की एक सांझ

9.2.3.2. एकांकीकार का नाम : भारत भूषण अग्रवाल

9.2.3.3 लेखक परिचय

9.2.3.4 सूचना

9.2.3.5 उद्देश्य

9.2.3.6 पाठ का विश्लेषण और विवेचन

* कथावस्तु
* चरित्रांकन
* कथोप-कथन
* देशकाल व वातावरण
* भाषा शैली
* उद्येश्य

9.2.3.7. संभाव्य प्रश्न

* व्याख्यात्मक प्रश्न
* आलोचनात्मक प्रश्न
* लघूत्तरी प्रश्न
* अतिलघूत्तरी प्रश्न

महाभारत की एक सांझ

भारत भूषण अग्रवाल

9.2.3.1. पाठ का नाम : महाभारत की एक साँझ

9.2.3.2. एकांकीकार का नाम : भारत भूषण अग्रवाल

9.2.3.3. लेखक परिचय

भारत भूषण अग्रवाल का जन्म 1919 में हुआ था । उन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. और पीएच. डी. हिंदी में लखनऊ से की थी । प्रयाग और भोपाल में आकाशवाणी से उनका संबंध रहा । बाद में वे साहित्य अकादेमी में सहायक मंत्री बने । आपकी कविताएँ ईमानदारी और अनुभूतिजन्य है । वे नियतिवादी न होकर संघर्षशील हैं । उनकी कविताएँ परिवेश की घुटन और बेबसी की प्रतिक्रियाएँ हैं । समग्र विश्व में परिव्याप्त अनास्था, कुंठा और घुटन ने उनके कवि-मन को झकझोरा है । उनका रचनात्मक संसार विश्व-संवेदना और विश्वमानवता से जुड़ा हुआ है । यथार्थ और आदर्श की टकराहट ने उन्हें निराशावादी न बनाकर गतिशील बनाया है । वे रसोपलब्धि नहीं, रस-प्रयत्न के आकांक्षी रचनाकार हैं । बाह्य दबाव की अपेक्षा आंतरिक विवशता ने उन्हें रचनाशील बनाया है ।

भारतभूषण की काव्य -भाषा यथार्थ भाषा है, शब्दकोश की भाषा नहीं । उनकी भाषा में अंग्रेजी शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है ।

रचनाएँ : - कवि के बन्धन(1941), जागते रहो(1942), किसने फूल खिलाए(बाल काव्य संग्रह), पलायन(नाटक) लौटती लहरों की बाँसुरी (उपन्यास), सेतु बंधन (1955), खाई बढ़ती गई (ध्वनि रूपक), प्रसंगवश (निबंध संग्रह), पात्र-पात्री(अनुवाद), रवीन्द्र एक जीवनी (अनुवाद) आदि ।

9.2.3.4. सूचना :

प्रस्तुत एकांकी महाभारत की कथा पर आधारित है । एकांकीकार का कहना है कि महाभारत में पांडव और कौरवों के बीच लड़ाई हुई थी । इसमें कौरवों को अन्यायी और अत्याचारी बताया गया है और पांडवों को न्यायी और धार्मिक । दुर्योधन इस बात का खंडन करते हुए धर्मराज युधिष्ठिर से तर्क कर कहता है कि यदि वह अन्यायी होता तो युद्ध में भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा आदि उसके पक्ष में कैसे युद्ध करते ? जब युद्ध में कौरव पक्ष के प्राय: सभी सेनापति मारे जाते हैं तब दुर्योधन बुरी तरह आहत होकर सरोवर में छिप जाता है । युधिष्ठिर और भीम आदि उसे बाहर आने के लिए चुनौती देते हैं । पर वह अपनी रक्षा के लिए तर्क करता है । वह उनकी ललकारों की परवाह नहीं करता । अंत में वह जल से बाहर निकल आता है और उन्हें मारने के लिए कहता

है । युधिष्ठिर निहत्थे पर वार करना नहीं चाहते । उसे अस्त्र-शस्त्र भी दिया जाता है । भीमसेन और दुर्योधन में भयंकर गदायुद्ध होता है । अंत में श्रीकृष्ण के इशारे से भीमसेन दुर्योधन की जांघ पर प्रहार करते हैं, और वह आहत होकर गिर जाता है । वह युधिष्ठिर से कहता है कि यह स्वार्थ की लड़ाई है, आत्म प्रवचंना है । तुम बड़े निष्ठुर हो । ठीक है मुझे मरने दो । तुम राज्य सिंहासन पर बिराजो । मुझे कोई आपत्ति नहीं, कोई पश्चाताप नहीं । बस, एक दुःख है कि मेरे पिता अंधे क्यों हुए थे ? यह कहते हुए उसके प्राण उड़ जाते हैं और नाटक की समाप्ति होती है ।

9.2.3.5. उद्देश्य :

आलोच्य एकांकी में भारत भूषण अग्रवाल का कहना है कि दुर्योधन अत्यधिक वाक्पटु है । वह अपनी वाक्पटुता के द्वारा पांडवों को अधर्मी और अन्यायी कहता है । सरोवर से बाहर निकलने के लिए युधिष्ठिर और भीम उसे ललकारते हैं । उसे कायर, डरपोक कहते हैं । अंत में वह अपने आपको युद्ध के लिए प्रस्तुत करता है । भीमसेन और दुर्योधन के मध्य भीषण गदायुद्ध होता है । श्रीकृष्ण के संकेत से भीम उसकी जाँघ पर प्रहार करके उसे जमीन पर गिरा देता है । इसप्रकार पांडवों की जीत होती है और कौरवों की हार ।

इस एकांकी का मूल उद्देश्य कौरवों के पक्ष को न्याय दिलाना है । एकांकीकार सोचते हैं कि कौरव पक्ष उतना अधिक कुत्सित और कमजोर नहीं था जैसा दर्शक सोचते हैं । लेखक ने दुर्योधन को न्यायी बताने का प्रयास किया है । दुर्योधन के पक्ष में ही समस्त न्यायी वीरों ने लड़ाई की थी । इसलिए वह न्याय और धर्म की लड़ाई लड़ रहा था । इसलिए इतिहासकारों ने पांडवों की प्रशंसा की है और कौरवों की निन्दा । अतः दुर्योधन और युधिष्ठिर के बीच तर्क-वितर्क को हेय सिद्ध करने का उद्देश्य है । अंत में दुर्योधन का पतन होता है और पांडव पक्ष विजयी होता है ।

9.2.3.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन :

* कथावस्तु

'महाभारत की एक साँझ' शीर्षक सामान्यतया महाभारत में कौरवों को अधिक अन्यायी और दोषी समझा जाता है परंतु लेखक का कहना है कि केवल एक पक्ष को दोषी ठहराकर दूसरे पक्ष को पूरी तरह निर्दोष समझना भी ठीक नहीं । दुर्योधन के जब सारे वीर सेनापतियों की मृत्यु हो गयी तब वह एक सरोवर में जाकर छुप बैठा । उसे सरोवर से बाहर निकालकर युद्ध करने के लिए पांडव पक्ष से युधिष्ठिर भीम आदि खूब ललकारते हैं । दुर्योधन का तर्क है कि वह हमेशा न्याय पक्ष में लड़ाई करता आ रहा है । चूंकि वह धर्म-न्याय पक्ष पर है, इसलिए सभी धार्मिक और न्यायी व्यक्ति जैसे द्रोणाचार्य, भीष्म, कृपाचार्य आदि उसके पक्ष में लड़ रहे थे । क्या वे जान-बूझकर अन्याय का साथ दे रहे थे ? इस प्रकार दुर्योधन और युधिष्ठिर के बीच खूब तर्क-वितर्क होता है, दोनों एक दूसरे पर आक्षेप करते हैं : दुर्योधन - मैं आजीवन तुम्हारी युद्ध की तैयारियों से व्याकुल रहा हूँ । मैंने अपना जीवन तुम्हारी ईर्ष्या के रथ की गड़गड़ाहट सुनते हुए बिताया है । पुरोचन को कपट से मारकर तुम पंचाल गये और वहाँ द्रुपद को अपनी ओर मिलाया । पिताजी ने इसलिए तुम्हें आधा राज्य दे दिया । फिर भी तुमने चैन की सांस नहीं ली और अर्जुन को

दिग्विजय के लिए भेजा । राजसूय यज्ञ के बहाने तुमने जरासन्ध और शिशुपाल को समाप्त किया । जुए में दाव पर अपना राज्य लगाकर मेरा राज्य जीतना चाहते थे ।''

युधिष्ठिर - तुमने द्रौपदी को कुरु सभा में नग्न करने का प्रयास किया ।'' तो दुर्योधन का उत्तर है कि दाँव पर लगाकर तुमने उसका कौनसा सम्मान किया था ? फिर युधिष्ठिर कहते हैं -''ओ पापी-कपटी, दुरात्मा दुर्योधन ! क्या स्त्रियों की भाँति जल में छिपा बैठा है । बाहर निकल आ । देख तेरा काल तुझे ललकार रहा है ।'' भीमसेन ललकारते हुए कहते हैं -''दुर्योधन ! अरे, अपने सारे सहभागियों की हत्या का कलंक अपने माथे पर लगाकर तू कायरों की भाँति अपने प्राण बचाता फिरता है ? तुझे लज्जा नहीं आती ।'' अंत में दुर्योधन पानी से निकल आता है और युधिष्ठिर उसे अपनी इच्छा के मुताबिक युद्ध करने के लिए गदा देते हैं । भीम और दुर्योधन के बीच भयंकर गदायुद्ध होता है । दुर्योधन का पराक्रम देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी जीत निश्चित होगी । सौभाग्य से श्रीकृष्ण भीम को दुर्योधन की जाँघ पर प्रहार करने के लिए इशारा करते हैं जिससे उसका पतन होता है । लेकिन उसे अपने किए हुए कर्मों पर कोई पश्चाताप नहीं क्योंकि उसका कहना है कि वह सत्य और धर्म की लड़ाई लड़ रहा है इसलिए वह अन्त तक यही तर्क रखता है, बस उसे एक ही चिन्ता है उसके पिता अंधे होने की वजह क्या थी ? इस प्रकार इसकी कथावस्तु अत्यंत रोचक और कुतूहलपूर्ण है ।

❋ पात्रों का चरित्र-चित्रण :

आलोच्य एकांकी में पांच चरित्र हैं - दुर्योधन, भीम और युधिष्ठिर मुख्य चरित्र संजय और धृतराष्ट्र गौण ।

दुर्योधन - इस एकांकी में दुर्योधन का चरित्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है । वह योद्धा है, पराक्रमी है परंतु जब उसके सारे सेनापति मारे जाते हैं तब वह एक कायर की भाँति दैतवन के जलाशय में छुप बैठता है । पांडव यह जानकर उसे युद्ध के लिए ललकारते हैं । फिर वह मजबूरन पानी से बाहर आकर युद्ध के लिए प्रस्तुत हो जाता है । और गदायुद्ध में उसकी मृत्यु होती है । परंतु मृत्यु तक वह अपने को निर्दोष समझता है । प्रस्तुत एकांकी में भारतभूषण अग्रवाल ने उसके चारित्रिक दोषों को उजागर नहीं किया है । उनका कहना है कि महाभारत युद्ध में क्यों कौरव वंश का ही सारा दोष है, पांडव का बिल्कुल नहीं । अतः दुर्योधन का कहना है वह सत्य-धर्म की लड़ाई लड़ता है, अन्याय की लड़ाई नहीं । इसलिए सारे न्यायी वीरों ने उसका पक्ष लिया है । इस प्रकार दुर्योधन का चरित्र -चित्रण अत्यंत मार्मिक ढंग से किया गया है ।

युधिष्ठिर - इस एकांकी में युधिष्ठिर का चरित्र भी अत्यंत महत्वपूर्ण है । वे धार्मिक और सत्यवादी हैं । फिर भी वे दुर्योधन को दैवतन के जलाशय से निकालने के लिए उसके साथ खूब तर्क-वितर्क करते हैं । ''ओ पापी ! अरे कपटी, दुरात्मा दुर्योधन क्या स्त्रियों की भाँति जल में छिपा बैठा है । बाहर निकल अब । देख, तेरा काल तुझे ललकार रहा है ।'' युधिष्ठिर कुछ नहीं सुनना चाहते । सिवाय दुर्योधन की हार । वे दुर्योधन को उसकी वीरता को धिक्कारते हैं उसे कायर बताते हैं । अंत में उसे लड़ने के लिए उसकी पसन्द के मुताबिक गदा

भी देते हैं । वे निहत्थे पर वार करना नहीं चाहते । वे रक्तपात युद्ध के खिलाफ होने के बावजूद अब अन्यायी का अंत करना चाहते हैं ।

भीम – युधिष्ठिर का छोटा भाई है । वह भी युधिष्ठिर भैया के साथ दैवतन जलाशय के पास पहुँचकर दुर्योधन को ललकारता है । दुर्योधन - दुर्योधन ! अरे अपने सारे सहयोगियों की हत्या का कलंक अपने माथे पर लगाकर तू कायरों की भाँति अपने प्राण बचाता फिरता है । तुझे लज्जा नहीं आती ? भीम योद्धा है । वह दुश्मन दुर्योधन को लड़कर मारना चाहता है । उसका झूठ बर्दाश्त नहीं कर पाता । अंत में वह उसे गदा युद्ध में मारकर विजय प्राप्त करता है ।

संजय – धृतराष्ट्र को घटनाओं का वर्णन करके सुनाते हैं । उनके सारे प्रश्नों के उत्तर देते हैं । एकांकीकार ने धृतराष्ट्र को अपने पक्ष का विकाश और अपने पुत्र दुर्योधन की मृत्यु पर अत्यधिक व्याकुल होने का चित्र प्रदर्शित किया है । धृतराष्ट्र संजय से पूछते हैं -'' किसके प्राणों का परिणाम है, किसकी भूल थी जिसका यह भीषण विषफल हमें मिला ! ओह, क्या पुत्र-स्नेह अपराध है, पाप है ?'' इस प्रकार संजय उन्हें सुयोधन की सरोवर में छुपने की बात, युधिष्ठिर और भीम की ललकार की बात सब कुछ कहते-सुनाते हैं । यह सब सुनकर धृतराष्ट्र अत्यंत दु:खी हो जाते हैं । वे सहन नहीं कर पाते । संजय उन्हें धैर्य रखने के लिए बार-बार कहते हैं ।

※ कथोपकथन :

'महाभारत की साँझ' एकांकी में कथोप-कथन प्रभावशाली है । धृतराष्ट्र और संजय का वार्तालाप अत्यंत संक्षिप्त है परंतु युधिष्ठिर और दुर्योधन की संवाद-योजना लंबी है । पात्रों की मनोनुकूलता के अनुसार कथोप-कथन का उचित रूप से निर्वाह किया गया है । जैसे -धृतराष्ट्र और संजय का वार्तालाप ।

धृतराष्ट्र – हाय पुत्र ! इन हत्यारों ने अधर्म से तुम्हें परास्त किया । संजय ! मेरे इतने उत्कट-स्नेह का ऐसा अंत । ओह ! मैं सह नहीं सकता ।

संजय – धैर्य महाशय, धैर्य । कुरुकुल के इस डगमगाते पोत के अब आप ही कर्णधार हैं ।

दुर्योधन और युधिष्ठिर तथा भीम के कथोप-कथन निम्न प्रकार हैं -

युधिष्ठिर - ओ पापी ! अरे ओ कपटी. दुरात्मा दुर्योधन । स्त्रियों की भाँति वहाँ जल में छिपा बैठा है । बाहर निकल आ । देख तेरा काल तुझे ललकार रहा है ।

भीम - दुर्योधन ! अरे , अपने सारे सहयोगियों की हत्या का कलंक अपने माथे पर लगाकर तू कायरों की भाँति अपने प्राण बचाता फिरता है । तुझे लज्जा नहीं आती ?

युधिष्ठिर - लज्जा ! उस पापी को लज्जा ! भीमसेन ! ऐसी अनहोनी बात की तुमने कल्पना कैसे की । जो अपनी भाभी को भरी सभा में अपमानित कराने में आनन्द ले सकता है, उसका लज्जा से क्या परिचय ! (सव्यंग्य हँसी)

दुर्योधन - हँस लो, हँस लो दुष्टो ! जितना भी चाहो हँस लो । पर यह न भूलना कि मैं अभी जीवित हूँ, मेरी भुजाओं का बल अभी नष्ट नहीं हुआ है ।

✻ देशकाल व वातावरण :

इस एकांकी का देशकाल और वातावरण घटनाओं के अनुसार है । स्थान की दृष्टि से द्वैतवन जलाशय में दुर्योधन का छुपना और वहाँ युधिष्ठिर और भीम का उसके साथ तर्क-वितर्क करने का वर्णन है । काल की दृष्टि से इसका संबंध महाभारत के काल के साथ है । इसका वातावरण युद्ध से है जहाँ भीमसेन और दुर्योधन का गदायुद्ध का वर्णन उचित रूप से हुआ है । धृतराष्ट्र और संजय का वार्तालाप भी आँखों देखी घटनाओं पर आधारित है । प्रत्येक विषय-वस्तु को संजय अत्यंत मार्मिक ढंग से धृतराष्ट्र के सामने व्यक्त करते हैं । अत: इस एकांकी के अनुरूप एकांकीकार ने सफलतापूर्वक देशकाल तथा वातावरण को प्रस्तुत किया है ।

✻ भाषा-शैली :

प्रस्तुत एकांकी की भाषा-शैली सरल और बोधगम्य है । शब्दों का संयोजन अत्यन्त सफलतापूर्वक हुआ है । तत्सम शब्दावली का प्रयोग बाहुल्य है । एकांकी की बोलचाल की भाषा दर्शकों तथा पाठकों तक पहुँचने में अधिक सफल है । युधिष्ठिर और दुर्योधन के बीच तर्क-वितर्क को भाषा-शैली की दृष्टि से समान महत्व दिया गया है ।

✻ उद्देश्य :

आलोच्य एकांकी में स्वर्गीय लेखक भारतभूषण अग्रवाल ने कौरव पक्ष को अधिक महत्व देने का प्रयास किया है । उनकी सोच है कि कौरव पक्ष इतना गुनेहगार नहीं है जितना उसे बताया जाता है । दुर्योधन के चरित्र को अत्यंत घिनौना समझा जाता है परंतु वह अपने को कभी दोषी नहीं समझता है । दुर्योधन तर्क करता है कि वह हमेशा धर्म और सत्य के लिए लड़ता रहता है जिसके कारण भीष्म, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य जैसे न्यायी वीर उसके पक्ष में लड़ रहे थे । यदि वह अन्यायी होता तो क्या ये वीर उसके पक्ष में लड़ते ? इसका मूल उद्देश्य है कौरव पक्ष को उचित न्याय दिलाना । किन्तु इतिहास में हमेशा जीतने वालों की जय जयकार होती है जैसे पांडवों की जयध्वनि हुई ; कौरवों की नहीं । एकांकीकार का कहना है कि कौरव पक्ष की लड़ाई अन्याय पूर्ण नहीं रही होगी जो ये दुर्योधन के माध्यम से कहने का उद्देश्य रखते हैं । अंत तक धृतराष्ट्र भी कहते हैं कि ''हाय पुत्र ! इन हत्यारों ने तुम्हें अधर्म से परास्त किया है ।'' इस प्रकार यह एक दु:खांत एकांकी है । इसमें दुर्याधन के चरित्रांकन को अधिक महत्व दिया गया है जिससे दर्शक अधिक प्रभावित होते हैं । यह तत्य विवाद-सा ही है कि क्या पांडवों ने अधिक अधमता का परिचय नहीं दिया ? केवल कौरवों को क्या दोष दिया जाता है ? इसलिए आलोच्य एकांकी में दुर्योधन महाभारत के युद्ध का दोष पांडव पक्ष को देना चाहते हैं । इसी उद्देश्य को एकांकीकार ने साकार बनाने की चेष्टा की है ।

9.2.3.7. सभाव्य प्रश्न :

व्याख्या कीजिए -

1. एक निहत्थे, थके हुए व्यक्ति को घेरकर वीरता का उपदेश देना सहज है युधिष्ठिर

' मुझे खेद है, मैं इसके लिए तुम्हारी प्रशंसा नहीं कर सकता ।

2 पहले वीरता का दंभ और अंत में करुणा की भीख ! कायरों का यही नियम है । परंतु दुर्योधन ! कान खोलकर सुन लो । हम तुम्हें दया करके छोड़ेंगे नहीं और तुम्हारी भाँति अधर्म से हत्या कर बधिक भी नहीं कहलाएंगे ।

3. जाओ, जाओ, दूर हो मेरी आँखों से । जीवन में तुमने मुझे चैन नहीं लेने दिया, अब कम से कम मुझे शांति से मर तो लेने दो युधिष्ठिर । जाओ,, चले जाओ ।

4. तुम्हारी महत्वाकांक्षा ही इस नरसंहार का, इस भीषण रक्तपात का मूल कारण है । मैं तो निस्सहाय विवश व्यक्ति की भाँति केवल जूझ पड़ा हूँ । तुम्हारे चक्रांत में मेरे लिए यही पुरस्कार निर्धारित किया गया था ।

5. मुझे कोई ग्लानि नहीं । कोई पश्चात्ताप नहीं है । केवल एक ... केवल एक दु:ख मेरे साथ जाएगा ।

6. इन हत्यारों ने अधर्म से तुम्हें परास्त किया । सच ! मेरे इतने उत्कट स्नेह का ऐसा अंत ! ओह ! मैं नहीं सह सकता ?

आलोचनात्मक प्रश्न :

1. एकांकी कला की दृष्टि से 'महाभारत की एक साँझ' की समीक्षा कीजिए ।
2. इस 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।
3. दुर्योधन का चरित्र-चित्रण करके एकांकीकार का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।
4. आपकी राय में यह एकांकी कहाँ तक सफल है ? तर्क के साथ उत्तर दीजिए ।

अतिलघूत्तरी प्रश्न :

1. 'महाभारत की एक साँझ' के लेखक कौन हैं ?
2. धृतराष्ट्र कौन हैं ?
3. दुर्योधन कहाँ छिपा था ?।

4. कौन धृतराष्ट्र को युद्ध का दर्शन सुना रहे थे ?

5. तुझे लज्जा नहीं आती ?

- यह किसका प्रश्न है ?

6. मेरी भुजाओं का बल अभी नष्ट नहीं हुआ है ?

- यह किसने कहा था ?

7. धर्मराज कौन हैं ?

8. युधिष्ठिर ने किसे कायर कहा है ?

9. बाहर निकल कर युद्ध कर, बस यही एक मार्ग है ।

- यह वाक्य किसने किससे कहा ?

10. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

पहले ---- का दंभ और अंत में... की भीख ।

11. दुर्योधन युद्ध के लिए क्या मांगते हैं ?

12. किसके संकेत से भीम ने गदा से दुर्योधन की जाँघ पर प्रहार किया ?

13. कुरुराज की मृत्यु दशा देखने कौन पहले आ पहुँचे ?

14. युधिष्ठिर ने दुर्योधन के पास आकर मृत्यु समय में क्या कहा ?

15. जो सुख से मरने नहीं देता वही धर्म का ढोल पीटे, कैसा अन्याय है ।

-यह वाक्य किसने किससे कहा ?

16. सही/गलत उत्तर छाँटिए :

क) युधिष्ठिर ने सदा ही न्याय दिया है ।

ख) सत्य को ढकने का प्रयत्न न करो युधिष्ठिर ।

ग) मुझे ग्लानि है, पश्चात्ताप है, केवल एक सुख मेरे साथ जाएगा ।

17. किसने तपस्या द्वारा नए-नए शस्त्र प्राप्त किए ?

18. किसके विवाह के बहाने सारे राजाओं को निमंत्रण भेजा गया ?

19. किसने दुर्योधन को अंत में पराजित किया ?

20. मेरे पिता अन्धे क्यों हुए ? - यह प्रश्न किसने किया था ?

***

सूखी डाली

उपेन्द्रनाथ अश्क

9.2.4. एकांकी

9.2.4.1. पाठ का नाम : सूखी डाली

9.2.4.2. एकांकीकार : श्रीउपेन्द्रनाथ अश्क

9.2.4.3. संक्षिप्त परिचय

9.2.4.4. सूचना

9.2.4.5 .उद्देश्य

9.2.4.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन

* कथावस्तु
* चरित्रांकन
* कथोपकथन
* देशकाल व वातावरण
* भाषा शैली
* उद्देश्य

9.2.4.7. संभाव्य प्रश्न

* व्याख्यात्मक प्रश्न
* आलोचनात्मक प्रश्न
* लघूत्तरी प्रश्न
* अतिलघूत्तरी प्रश्न

सूखी डाली

उपेन्द्रनाथ अश्क

9.2.4.2. उपेन्द्रनाथ अश्क

9.2.4.3. परिचय

उपेन्द्र अश्क का जन्म पंजाब प्रान्त के जालन्धर नामक नगर में 14 दिसम्बर 1910 को एक मध्यवित्त ब्राह्मण परिवार में हुआ था । डी.ए.वी. कॉलेज से बी.ए. पास करते ही अपने ही स्कूल में अध्यापक हो गए । बचपन से ही अध्यापक, लेखक, संपादक, वक्ता, वकील तथा अभिनेता और डाइरेक्टर बनने का सपना देखा करते थे । 1933 में उन्होंने नौकरी छोड़कर साप्ताहिक पत्र 'भूचाल' का संपादन किया । 1936 में लॉ पास किया । पर उसी वर्ष लम्बी बीमारी और पत्नी के देहान्त के बाद उनके जीवन में एक अपूर्व मोड़ आया । 1936 के बाद अश्क की कृतियों में सुख-दु:खमय जीवन के व्यक्तिगत अनुभव से अद्भुत रंग भर गया । 1941 में उन्होंने दूसरा विवाह किया । उसी वर्ष ऑल इंडिया रेडियो में नौकरी की । 1945 में उन्होंने फिल्मों में लेखन कार्य किया । 1948 से 1953 तक अश्क दम्पति के जीवन में संघर्ष के वर्ष रहे । उन्होंने नीलाभ प्रकाशन गृह की व्यवस्था की, जिससे संपूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्व को रचना और प्रकाशन दोनों से सहज पथ मिला ।

अश्क ने कहानी, उपन्यास, निबंध, लेख, संस्मरण, नाटक, एकांकी, आलोचना, कविता आदि के क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया है ।

रचनाएँ - नाटक-जय-पराजय, स्वर्ग की झलक, कैद और उड़ान, आदर्श और यथार्थ, वेश्या, जौंक, आपस का समझौता, पहेली, विवाह के दिन, सूखी डाली, चमत्कार, चुम्बक, तौलिए, भंवर, तूफान से पहले, अंजो दीदी आदि ।

उपन्यास - सितारों के खेल, गिरती दीवारें, गर्मराख, बड़ी-बड़ी आँखें, शहर में घूमता आइना आदि ।

कहानी - अंकुर, नासूर, चट्टान, पिंजरा, मेमने, बच्चे, उबाल, कैप्टन रशीद आदि

काव्य - दीप जलेगा, चाँदनी रात और अजगर, बरगद की बेटी ।

संस्मरण - मण्टो मेरा दुश्मन

निबंध - ज्यादा अपनी कम परायी, रेखाएँ और चित्र, अनुवाद- रंग साज, ये अपनी ये चूहे

संपादन - प्रतिनिधि एकांकी, रंग एकांकी, संकेत ।

9.3.4.4. सूचना :

सुप्रसिद्ध एकांकीकार उपेन्द्रनाथ अश्क का 'सूखी डाली' एकांकी एक संयुक्त परिवार की जीवन शैली पर आधारित है । परिवार के मुख्य व्यक्तिवादी दादा मूलराज हैं । वे सदैव अपने परिवार के समस्त सदस्यों तथा बाल-बच्चों को स्नेह, श्रद्धा तथा अनुशासन में बाँध रखना चाहते हैं । मानो परिवार एक महान बटवृक्ष है । इस संयुक्त परिवार में तीन बेटों की बहुएँ रहती हैं, तत्सहित उनके तीन पोते भी रहते हैं । परंतु बेला नामक बहू के प्रवेश से घर में थोड़ा -बहुत झगड़ा हो जाता है । बेला के खिलाफ सबकी शिकायत रहती है परंतु दादा मूलराज परिवार की किसी डाली को टूटने नहीं देते । वे नहीं चाहते कि बेला से कोई असंतुष्ट रहे । उनके निर्देशानुसार सब बेला को ही अधिक महत्व देते हैं और आवश्यकता से अधिक प्रशंसा और आदर करते हैं । इससे बेला अपने को परिवर्तन करने के लिए बाध्य हो जाती है । अंत में जब दादा से इन्दु बोल देता है कि 'दादाजी आप पेड़ से किसी डाली को टूटना पसन्द नहीं करते पर क्या आप चाहेंगे कि पेड़ से लगी -लगी यह डाल सूखकर मुरझा जाए ।' दादा मूलराज भी उसकी बात को महत्व देते हैं ।

9.2.4.5. उद्देश्य :

श्रीउपेन्द्रनाथ अश्क ने इस एकांकी में संयुक्त परिवार के महत्व को उजागर किया है । परिवार एक बटवृक्ष की भाँति है । इसकी समस्त डालियों को एकत्रित कर रखने का उत्तरदायित्व दादा मूलराज का है । एकांकीकार ने इसमें मुखिया को अधिक महत्व दिया है । परंतु कभी - कभी परिवार में झगड़ालू औरत के प्रवेश से अशांति होती है और परिवार बिखर जाता है । इसलिए नई दुल्हन को घर की परंपरा और परिस्थिति के साथ मिल-जुल कर रहना चाहिए । परिवार में बड़ों का छोटों के प्रति स्नेह और छोटों का बड़ों के प्रति आदर रहना चाहिए । एकांकीकार का उद्देश्य है कि संयुक्त परिवार की खुशी एकले परिवार में नहीं मिलती । यदि सब एक दूसरे का साथ देकर दु:ख-सुख को बाँट कर चलते हैं तो परिवार का आनन्द सर्वाधिक होता है ।

9.2.4.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन :

* कथावस्तु -

प्रस्तुत कहानी एक अत्यंत रोचक कहानी है जिसकी कथावस्तु हमारे पारिवारिक जीवन से संबंधित है । एक संयुक्त परिवार में सब सुख-शांति से जीवन बिताते हैं । परिवार का मुखिया दादा मूलराज हैं । वे अपने परिवार को एक साथ मिलाकर रखना चाहते हैं । लेकिन उनके नाती नरेश की पत्नी बेला नामक सुशिक्षित बहू आने पर घर में अशांति फैलाती है । बेला का स्वभाव थोड़ा अलग है क्योंकि वह जिस परिवार से आयी है वहाँ सास-ससुर के घर

के लोगों के रहन-सहन में अंतर रहा । उसे मिसरानी को अच्छा नहीं लगता । वह बड़ों की आज्ञा न लेकर उसे काम से निकाल देती है । इसी वजह से ननद इन्दु से उसका झगड़ा हो जाता है । और इन्दु थोड़ा, नमक-मिर्च मिलाकर इसी बात को अपनी ताई को, चाची और भाभियों को ऐसे सुनाती है कि वे सब बेला के खिलाफ हो जाते हैं । बेला को घर की साजसज्जा और घर के फर्नीचर भी अच्छे नहीं लगते । इसलिए वह उन्हें घर से हटा देना चाहती है । जब नरेश ने उसे समझाया कि हमारे पुरखे भी इसी फर्नीचर का उपयोग करते आए हैं तब भी उसने सुनी नहीं । बेला की सास उसकी श्रद्धेया है । वह इन्दु को समझाने के लिए प्रयत्न करती है ।

नाटक का द्वितीय दृश्य आरंभ होता है । इसमें पुत्र कर्मचन्द दादा मूलराज के पाँव दबाता है । आंगन में बरगद की एक डाली को तोड़कर बच्चे उसे रोपते और पानी देते हैं । उसी समय दादा बोलते हैं कि बरगद से टूटी डाली में लाख पानी देने पर भी क्या वह हरी-भरी हो सकती है ? उनका कहना है कि हमारा परिवार एक बटवृक्ष है और मैं इस वृक्ष की एक डाली भी टूटने नहीं दूंगा । अर्थात् मुखिया नहीं चाहते परिवार से नई बहू अलग हो जाए और पूरा घर बर्बाद हो जाए । इसलिए समस्त स्त्रियों को आदेश देते हैं कि वे सब बेला का आदर करें । उसकी हँसी न उड़ाएँ । उससे कोई घर का काम न कराया जाए और उसका बहुमूल्य समय नष्ट नहीं किया जाए । जब बेला को आवश्यकता से अधिक आदर किया जाता है और उसे कोई काम करने नहीं दिया जाता तब बेला खुद लज्जित होती है । दादा मूलराज भी उसे कपड़े धोने से रोकते हैं । बेला आश्चर्य और दु:खी हो जाती है । उसी समय इन्दु कह देती है कि दादाजी आप यह तो सहन नहीं कर पाएँगे कि परिवार रूपी बरगद की कोई डाली वृक्ष से लगी - लगी ही सूख जाए । ऐसी हालत बेला की हो गई थी । इसलिए उसे भी अन्य स्त्रियों के साथ मिलजुल कर - घर की व्यवस्थानुसार रहने की आज्ञा दी जाए । अत: एकांकी कला की दृष्टि से इसकी कथावस्तु अत्यंत सफल है ।

* चरित्र-चित्रण :

प्रस्तुत एकांकी में कई पात्र हैं परंतु इसमें केवल मुख्यत: दादा मूलराज परेश और बेला तथा इन्दु के नाम हैं । बहूओं को बड़ी, मझली और छोटी भाभी या बहू के नामों से अभिहित किया गया है । इसमें मुख्य चरित्र दादा मूलराज और बेला का है । दादा मूलराज परिवार के मुखिया हैं । वे सामाजिक आदर्शों, परंपरा को महत्व देने वाले हैं । वे पूरी तरह संयुक्त परिवार के समर्थक हैं । वे साहसी, परिश्रमी, दूरदर्शी और अनुशासन- प्रिय भी हैं । उनके ह्रदय में सभी के प्रति प्रेम और श्रद्धा है । काफी समझदार और बुद्धिमान होने के कारण पूरा परिवार उन्हें सम्मान करता है । हुक्का गुड़गुड़ाते समय भी समाधान करने की बातें सोचते हैं । पूरे परिवार को एक बटवृक्ष की भाँति संभालते हैं और उसकी समस्त शाखाओं को अलग होने नहीं देते । सकारात्मक उपाय से वे अपनी बहू बेला को सही रास्ते पर ले आने में सफल होते हैं । पुत्री इन्दु की गंभीर बातों का भी उनपर प्रभाव होता है । इस प्रकार परंपरा और संस्कृति को महत्व देनेवाले दादा मूलराज एक व्यक्तिवादी प्रतिष्ठित चरित्र हैं ।

बेला – बेला एक संभ्रान्त परिवार की उच्चशिक्षिता लड़की है । सभ्यता - संस्कृति की दृष्टि से उस पर पाश्चात्य संस्कृति का काफी प्रभाव पड़ा है । भारतीय संस्कृति पर आधारित यह संयुक्त परिवार उसे ठीक नहीं लगता । इसलिए वह अपनी इच्छा और पसन्द के अनुसार अपने सास-ससुर के घर में परिवर्तन करना चाहती है । उसे परंपरागत असुन्दर फर्नीचर, रजाई और अन्य सामग्रियाँ अच्छी नहीं लगतीं । नौकरानी का काम उसे ठीक नहीं लगता । घर की सफाई, कपड़े धोने का काम वह खुद करना नहीं चाहती । उसकी कड़वी आवाज से सब परेशान है । परंतु जब दादा मूलराज के आदेशानुसार सब उसे अधिक सम्मान करते हैं और उसे कोई काम करने नहीं देते और उसका समय नष्ट नहीं करते हैं । वह इस पराएपन जैसे बर्ताव से दुःखी हो जाती है और अपनी गलती महसूस करके खुद को परिवर्तन कर डालती है । घर में भी पूर्ववत् शांति बनी रहती है ।

* देशकाल और वातावरण :

देशकाल और वातावरण की दृष्टि से प्रस्तुत एकांकी सफल है । स्थान की दृष्टि से एकांकी की संपूर्ण घटना दादा मूलराज के घर ही घटित होती है । इसकी कालावधि कुछ दिनों के लिए ही है । इसमें सभी चरित्रों की घटनाएं परस्पर सहसंबंधित हैं । इसीलिए वातावरण पारिवारिक है । एक संयुक्त परिवार की कहानी है । अतः परिवार में जैसे स्त्रियों तथा पुरुषों का व्यवहार होता है ठीक वैसा ही हँसी-मजाक, नोंक-झोंक, वाद-विवाद, आपसी झगड़ा और फिर मिलजुलकर रहने का वातावरण है ।

* कथोपकथन या संवाद योजना :

आलोच्य एकांकी की संवाद योजना अत्यंत मार्मिक और परिस्थिति अनुकूलता पर आधारित है । संवाद में संक्षिप्तता है ।

निम्न लिखित संवाद योजना छोटी भाभी और इन्दु तथा रजवा के बीच में है । बेला की कड़वी बातों से रचना और इन्दु नाराज है - जैसे -

छोटी भाभी - क्यों, इन्दु बेटी क्या बात हुई ? यह रजवा रो रही है, कोई कड़वी बात कह दी छोटी बहू ने इसे ।

इन्दु - मीठी वे कब कहती है जो आज कड़वी कहेंगी ?

छोटी भाभी – यह आज कैसी जली-कटी बातें कह रही हो ? छोटी बहू से झगड़ा हो गया क्या ?

रजवा - (भरे हुए गले से) मां जी, आज उन्होंने बरबस मुझे काम से हटा दिया । इतने बरस हो गए आपकी सेवा करते । कभी भी किसीने इस प्रकार अनादर नहीं किया था । मुझे तो मां जी आप अपने पास रखिए । मैं आज से उनका काम करने नहीं जाऊंगी ?

छोटी भाभी - वह बच्ची है मिसरानी, तू भी उसके साथ बच्ची हो गई ।

इन्दु - (मुँह बिचकाकर व्यंग्य से) जी हाँ बच्ची है । रोटी को चोटी कहती है, उसे तो बात करनी भी नहीं आती । (क्रोध से) अपने मायके के सामने तो वह किसी को कुछ समझती ही नहीं और गज भर की जबान ।

उपरोक्त संवाद योजना छोटी भाभी , इन्दु और रजवा के बीच है । बेला के रुक्ष व्यवहार के बारे में इन्दु छोटी भाभी को बता रही है । उसके कथनों में बेला के अनुचित कार्यकलापों से कड़वी प्रतिक्रिया है ।

दादा (आश्चर्य से) हें ! छोटी बहू ...

इन्दु - मैंने बहुतेरा कहा पर भाभी मानी नहीं ।

दादा - छोटी बहू, इधर आ बेटी (शरमाई हुई बेला दरवाजे के पास खड़ी होती है) बेटा, कपड़ा धोना तुम्हारा काम नहीं, पढ़-लिखकर .... इन्दु तुझे इतनी बार कहा कि आदर से ...

इन्दु - (भावावेश के कारण रुंधे हुए कंठ से) दादाजी, आप पेड़ से किसी डाली का टूटकर अलग होना पसंद नहीं करते, पर क्या आप यह चाहेंगे कि पेड़ से लगी -लगी वह डाल सूखकर मुरझा जाय ...

(सिसक उठती है, हुक्के की गुड़गुड़ाहट एकदम बंद हो जाती है)

उपरोक्त कथोपकथन दादा और इन्दु के बीच है । इसमें संक्षिप्तता पाई जाती है परंतु संवाद बहुत महत्वपूर्ण है । इन्दु की महत्वपूर्ण उक्ति का प्रभाव दादा मूलराज पर पड़ता है । नाटक भी अंत हो जाता है । चूँकि दादा के निर्देशानुसार घर के सारे सदस्य बेला को अधिक सम्मान करते हैं और उसे कोई काम करने नहीं देते । इसलिए दादा पूछने पर इन्दु जो बात कहती है उससे दादा भी बदल जाते हैं । बेला को सब अपना लेते हैं, और वह भी सभी के साथ मिलजुलकर रहती है ।

※ भाषा -शैली

प्रस्तुत एकांकी की भाषा-शैली पूर्णतः सरल और बोधगम्य है । शब्दावली का प्रयोग नाटक के अनुरूप है । परिवार में स्त्रियों की भाषा में स्वाभाविकता पाई जाती है । भाषा-शैली में एक संयुक्त परिवार की रहन सहन और काम-काज में भारतीय सभ्यता और संस्कृति की छाप है । इन्दु की भाषा में बेला के प्रति पहले व्यंग्य की उक्ति पाई जाती है परंतु अंत में उसका गंभीरपूर्ण मत भी दादा को चकित कर देता है । परिवार का प्रतीक बटवृक्ष है जिससे परंपरा को महत्व दिया गया है । इस प्रकार सहज - सरल भाषा - शैली से दर्शक इस एकांकी को अच्छी तरह समझ पाते हैं ।

उद्देश्य :

प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य एक संयुक्त परिवार को महत्व देना है । आजकल नवविवाहिता बहू बनकर घर में प्रवेश करते ही झगड़ा शुरू कर देती है । फिर वह पूरे परिवार को अलग करने में सफल हो जाती है । इस एकांकी में परिवार के मुखिया दादा मूलराज अपने परिवार को बटवृक्ष की भाँति समझते हैं । वे नहीं चाहते उसकी एक भी डाली टूट जाए । नई दुल्हन बेला को सकारात्मक उपाय से वे अच्छी शिक्षा देते हैं जिससे उसमें आन्तरिक रूप से परिवर्तन हो जाता है व वह सबके साथ मिलजुल कर रहने लगती है । एकांकीकार का उद्देश्य नई बहुओं को संयुक्त परिवार के महत्व को बताना और घर में हमेशा शांति बनाए रखना है ।

9.2.4.7. संभाव्य प्रश्न

व्याख्या कीजिए -

* नौकर अच्छे हैं तो उसके मायके में, खाना अच्छा है तो उसके मायके में, कपड़े पहनने का ढंग आता है तो उसके मायके वालों को, हम तो न जाने कैसे जी रहे हैं !

* मैं कहा करता हूँ न बेटा, कि एक बार वृक्ष से जो डाली टूट गई उसे लाख पानी दो, उसमें सरसता न आएगी ... और हमारा यह परिवार बरगद के इस महान पेड़ की भाँति है ।

* यह कुटुम्ब एक महान वृक्ष है । हम सब उसकी डालियाँ हैं । डालियों ही से पेड़, पेड़ हैं । और डालियाँ छोटी हों चाहे बड़ी , सब अच्छी छाया को बढ़ाती है । मैं नहीं चाहता, कोई डाली इससे टूटकर पृथक हो जाए ।

* मेरे सामने कोई हँसता नहीं, कोई मुझसे ऐसा डरती है जैसे मुर्गी के बच्चे बाज से । अभी अभी सब हँस रही थी, ठहाके पर ठहाके मार रही थी, मैं गयी तो सब सन्न रह गयीं, जैसे भरी सभा में किसी ने चुप की सीटी बजा दी हों ।

* हम सब एक महान पेड़ की डालियाँ हैं - वे कहा करते हैं, और इससे पहले कि कोई डाली टूटकर अलग हो, मैं ही इस घर से अलग हो जाऊँगा ।

* दादाजी, आप पेड़ से किसी डाली का टूटकर अलग होना पसन्द नहीं करते, पर क्या आप यह चाहेंगे कि पेड़ से लगी-लगी डाल सूखकर मुरझा जाए ।

आलोचनात्मक प्रश्न :

1. 'सुखी डाली' एकांकी की समीक्षा कीजिए ।
2. 'सुखी डाली' एकांकी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

3. 'सुखी डाली' एकांकी की कथावस्तु लिखकर उपेन्द्र अश्क का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

4. दादा मूलराज का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

अतिलघूत्तरी प्रश्न :

1. 'सुखी डाली' के एकांकीकार कौन हैं ?

2. छोटी बहू का नाम क्या है ?

3. परिवार का मुखिया कौन है ?

4. इन्दु कौन है ?

5. मिसरानी क्यों रो रही थी ?

6. मीठी वे कब कहती हैं, जो आज कड़वी कहेंगी ।

   -यह वाक्य किसने किससे कहा ?

7. परेश कौन है ?

8. मझला लड़का कौन था ?

9. दादा और कर्मचन्द में क्या संपर्क है ?

10. बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं - बड़प्पन तो मन का होना चाहिए ।

    - यह कथन किसका है ?

11. कौन हमेशा हुक्का गुड़गुड़ाते हैं ?

12. दादाजी रजवा से किन्हें बुलाने के लिए कहते हैं ?

13. दादाजी बच्चों को कौन-सी कहानी सुनाते हैं ?

14. मैं तो तंग आ गई इन लोगों से । - यह किसकी उक्ति है ?

15. किसने छत खोद डाली ?

16. दादाजी किसकी अंगुली थामे प्रवेश करते हैं ?

17. किसकी बात सुनकर दादाजी के हुक्के की गुड़गुड़ाहट बन्द हो जाती है ?

***

UNIT - III

साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है

बालकृष्ण भट्ट

9.3 निबंध

9.3.1 . पाठ नाम : साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है

9.3.2. निबंधकार : बालकृष्ण भट्ट

9.3.3. लेखक परिचय

9.3.4. सूचना

9.3.5. उद्देश्य

9.3.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन

9.3.7. संभाव्य प्रश्न

* व्याख्यात्मक प्रश्न
* आलोचनात्मक प्रश्न
* लघूत्तरी प्रश्न
* अतिलघूत्तरी प्रश्न

साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है

बालकृष्ण भट्ट

9.3. निबंध

निबंध गद्य का एक महत्वपूर्ण अंग है । आधुनिक युग में बौद्धिक जिज्ञासा के मूलस्वरूप निबंध साहित्य का जन्म हुआ । ११वीं शदताब्दी के बाद निबंध ग्रंथों की परंपरा बढ़ती गई । शुक्ल के अनुसार निबंध वह है जिसमें व्यक्तिगत विशेषता हो । लेखक अपने मन की प्रवृत्ति के अनुसार स्वच्छ गति से इधर-उधर टूटी हुई सूत्र शाखाओं पर विचारता चलता है जो उसकी व्यक्तिगत विशेषता है । हिंदी निबंध की परंपरा चलानेवाले, भारतेन्दु है । हिंदी के प्रथम निबन्धकार बनारसीदास जैन हैं ।

9.3.1. साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है ।

9.3.1.2. बालकृष्ण भट्ट

9.3.2.3. लेखक परिचय

भारतेन्दु युगीन निबन्धकारों में पं. बालकृष्ण भट्ट का एक विशिष्ट स्थान है । उनका जन्म प्रयाग में सन् 1885 ई. में हुआ था । बचपन से ही उनके माता-पिता ने उनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया । वे यमुना मिशन स्कूल में संस्कृत के अध्यापक भी रहे । उन्होंने प्रयाग से 'हिंदी प्रदीप' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित की और 32 वर्ष तक उसका संपादन करते रहे । काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिंदी शब्दसागर' का वे कुछ दिन संपादन करते रहे पर अस्वस्थता के कारण उन्हें यह कार्य छोड़ना पड़ा । सं. 1971 में उनका स्वर्गवास हो गया ।

भट्टजी अपने युग के प्रसिद्ध प्रगतिशील व्यक्ति थे । उन्होंने अपने विचारात्मक निबन्धों में देश-भक्ति पर अधिक बल दिया । उन्होंने अंग्रेजों के शोषण की प्रवृत्ति, पुलिस का अत्याचार, कृषि की दुर्गति, हिंदी की उपेक्षा आदि का डट कर विरोध किया था । वे स्त्री शिक्षा के पूर्ण समर्थक थे । भट्टजी के भाषा और साहित्य संबंधी निबंधों का विशेष महत्व है । मानसिक दृढ़ता, देश प्रेम, आत्म विश्वास, विवेक, त्याग, उदारता, निर्भीकता तथा कष्ट - सहिष्णुता आदि गुणों से उनके निबंध दीप्त हैं ।

भट्ट की भाषा जीवंत, भावदीप्त और व्यावहारिक है । कहीं- कहीं संस्कृत के समास-गर्भित पदों का प्रयोग उन्होंने किया है । उनकी भाषा में अनोखी सफाई है, सशक्त व्यंग है । उनके निबंध में गहन अर्थ और अभिव्यंजना

की शक्ति है । विचारात्मक निबंधों में विचारात्मक शैली, विवरणात्मक और वर्णनात्मक निबंधों में वर्णनात्मक शैली, और भावात्मक निबंधों में भावात्मक शैली का उन्होंने सुगठित रूप से प्रयोग किया । अपने युग के वे सर्वश्रेष्ठ निबंधकार हैं ।

कृतियाँ : सच्ची कविता, भाषा कैसी होनी चाहिए, उपमा, हिंदी की पुकार, प्रेम और भक्ति, तर्क और विश्वास, ज्ञान और भक्ति, विश्वास, अभिलाषा, प्रीति, स्पर्धा, माधुर्य, वायु, धूमकेतु, भूगर्भ निरूपण, पदार्थवाद आदि ।

9.3.1.4. सूचना :

बालकृष्ण भट्ट की यह एक प्रगतिशील रचना है । उनका कहना है कि साहित्य का संबंध मनुष्य के हृदय के साथ है । यह जनसमूह के हृदय का आईना है । जैसा देश वैसा मनुष्य और उसका हृदय और हृदय से ही साहित्य का विकास । सरल, उदार, निष्कपट रचनाकारों से ही अच्छे साहित्य का सृजन होता है । वेद ऐसे प्राचीन सृजनकारों का ही साहित्य है जो महापुरुषों की देन है । समय के साथ साहित्य का स्वरूप बदलता रहता है । नित्य -नित्य इसकी भाषा अधिक सरल और परिष्कृत होती रहती है । रामायण और महाभारत भी साहित्य के प्रमुख अंग हैं । वाल्मीकि ने जिन बातों को अनुचित समझा, उन्हीं बातों को व्यास ने उचित समझा है ।

पहले वेद की भाषा संस्कृत थी । यह सर्वसाधारण की भाषा नहीं रही । यह उत्तम पात्र ब्राह्मण तथा राजा - महाराजाओं की भाषा रही । फिर प्राकृत भाषा आयी जो नीच पात्रों की रही । लेकिन धीरे-धीरे इस भाषा की काफी उन्नति हुई और पवित्र समझी गई । फिर पुराणों के साहित्य का भी खूब प्रचार हुआ । इसके उपरान्त तांत्रिकों ने बहाल किया । तंत्रों ने भी पुराणों को बहुत पुष्ट किया । इस प्रकार धर्म, संप्रदाय, भाषा में विरोध कायम हुआ । आपसी लड़ाई भी होने लगी । कोई भाषा प्रांत की लोकप्रियता के अनुसार प्रसिद्ध हुई तो कोई न्यून । किसी की समालोचना खूब हुई तो किसी की बिल्कुल नहीं । आदर-अनादर और मनान्तर - मतान्तर के बावजूद साहित्य का जनसमूह के मन तथा हृदय के अनुसार विकास होता रहा और रहेगा ।

9.3.1.5. उद्देश्य

साहित्य जगत में बालकृष्ण भट्ट द्वारा लिखित 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास' शीर्षक निबंध का विशेष महत्व है । उन्होंने कहा है कि प्रत्येक देश का साहित्य उसी देश के मानवों के हृदय का आदर्श रूप है, मन तथा हृदय की भावधारा के अनुरूप साहित्य की रचना होती है । साहित्य से ही हम किसी देश के आभ्यंतरिक भाव अनुभव कर सकते हैं । साहित्य ही जनसमूह के हृदय का चित्रपट है । हमारे पुराने आर्यों का साहित्य 'वेद' है । आर्यों के पवित्र हृदय के अनुसार ही वेद साहित्य का परिस्फुटन हुआ । ईश्वर के विषय में जो-जो भाव इन आर्यों में उदय हुआ वे ही उपनिषद कहलाए । फिर स्मृतियों के साहित्य का जन्म हुआ तथा विभिन्न उपकारों के विषयों का सूत्रपात होता गया लेकिन जब रामायण और महाभारत साहित्य की रचना हुई तब काफी परिवर्तन देखने को मिला ।

लेखक का कहना है कि रामायण में भाई समस्त राज्य और राज सिंहासन उत्सर्ग करना चाहते हैं और फिर श्रीरामचन्द्र समस्त साम्राज्य भरत को सौंप कर सस्त्रीक वनवास चल पड़े हैं । लेकिन महाभारत में राज्य और राज सिंहासन के लिए भाई-भाई में लड़ाई झगड़ा होता है । यही तो है काल के परिवर्तन की महिमा ।

बौद्ध वेद और ब्राह्मणों के बड़े विरोधी थे । इन्होंने संस्कृत के बदले प्राकृत भाषा अपनायी । प्राकृत में भी अनेक रचनाएँ रची गई । बौद्धों के बाद पुराण साहित्य का भी खूब प्रचार हुआ । पुराण कर्ताओं में शुद्ध साहित्यिकी धर्म को विशेष महत्व दिया । फिर तंत्रों ने उनका संहार किया और पुराणों में तांत्रिकों का सिद्धांत पुष्ट हुआ । इस प्रकार हिन्दू जाति छिन्न-भिन्न हो गयी । मनान्तर और मंतान्तर बढ़ता गया । भाषा में बदलाव आया । प्रत्येक प्रांत की जुदी-जुदी बोली और भाषा हो गई । कोई कठिन तो कोई कोमल । इन भाषाओं में हिन्दी सबसे अधिक लोकप्रिय भाषा है । इस प्रकार कवि का उद्देश्य है कि जैसा देश - वैसा साहित्य ; जैसे लोगों का हृदय वैसी ही साहित्य की भाषा ।

9.3.1.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन :

प्रस्तुत निबंध बालकृष्ण भट्ट का एक शुद्ध विचारपूर्ण लेख है । इससे उनकी गंभीर विवेचन प्रद्धति का परिचय मिलता है । इसमें उन्होंने बताया है कि साहित्य जनसाधारण के हृदय का विकास है । लोगों के संस्कार , व्यवहार, स्वभाव, बर्ताव, चरित्र, मनोभाव और मनोदशा अनुसार ही साहित्य का सौन्दर्य विकसित होता है । जब लोगों में समयानुसार परिवर्तन देखने को मिलता है तब साहित्य का स्वरूप भी बदल जाता है । साहित्य में शाश्वत जैसी कोई चीज नहीं है । जैसा समाज वैसा ही साहित्य होता है ।

आलोच्य निबंध में भट्ट जी ने कहा है साहित्य ही मनुष्यों का आदर्श दर्पण है । यदि मनुष्य का मन शोक-संतप्त है तो उसका मुख मंडल भी उदासीन रहता है । और उस समय उसकी आन्तरिक भावना भी वैसी होती है जिसका प्रभाव साहित्य पर परिलक्षित होता है । उसी प्रकार यदि चित्त प्रसन्न रहता है मन में प्रेम व श्रद्धा रहती है तो उत्तम साहित्य का भी विकास होता है । अत: साहित्य जनसमूह के चित्त का चित्रपट कहा जाना तर्कसंगत है ।

प्राचीन महापुरुष आर्यों की देन वेद साहित्य है । वेद में ही उनके पवित्र और कोमल हृदय का प्रभाय है । उन्होंने मनु और याज्ञवल्क्य की भाँति अपने भोले निष्कपट मन से ईश्वरीय अजेय शक्ति को समझ लिया था । उस समय सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक क्षेत्र में कुटिलता नहीं थी । कहीं किसी प्रकार का अन्याय, अत्याचार व अपराध नहीं था । इसलिए उस युग का साहित्य भी वैसा ही सुन्दर और सौहार्द पूर्ण रहा । मनु, अत्रि, हारीत, याज्ञवल्क्य आदि ने अपने-अपने नाम की संहिताएँ बनाईं । इन्हीं के समकालीन गौतम,कणाद, कपिल, जैमिनी, पतंजलि आदि ने दर्शन शास्त्रों की रचना की जिनकी गणना वैदिक भाषा में की जाती है ।

वेद के उपरांत रामायण और महाभारत रचित हुए । जहाँ रामायण में दो प्रतिद्वन्दी भाई अपना राज्य और राज सिंहासन त्यागना चाहते थे । और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र भरत को सब कुछ सौंप कर वनवास चले गए । वहाँ महाभारत में दो दायाद भाई बिना युद्ध से सुई का अग्रभाग भी देने के लिए राजी नहीं हुए जिसके कारण भीषण

रक्तपात हुआ । स्वार्थ - साधन और प्रभुत्व की प्राप्ति के लिए होने वाले युद्ध के कारण उस समय भारतवर्ष विषमय हो गया था । इस प्रकार महाभारत का प्रभाव भी साहित्य पर पड़ा । फिर बौद्धों का आगमन हुआ जिन्होंने प्राकृत भाषा जारी की । शौर सेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्धमागधी, पैशाची आदि इसके पांच भेद हुये । इसमें भी अनेक ग्रंथ रचे गए । 'जैनों के सारे ग्रंथ प्राकृत में लिखे गए । यद्यपि प्राकृत की उत्तरोत्तर उन्नति हो गई पर संस्कृत की महत्ता भी कम नहीं हुई । कालिदास, भवभूति, भारवि, श्रीहर्ष, माघ आदि ने संस्कृत साहित्य में खूब कलम चलायी । बौद्धों के बाद बहुत से पुराण, उप-पुराण और संहिताएँ भी रची गईं । पुराण कर्त्ताओं ने वेद की बहुत-सी घिनौनी रीति रिवाजों के बदले सात्विकी धर्म की प्रतिष्ठा की । तंत्रों ने इसका संहार किया । हिन्दुस्तान की हानि इन पुराणों तथा तंत्रों के द्वारा हुई । नए-नए मत, नए - नए धर्म, संप्रदाय होते गए । आपसी लड़ाई बढ़ती गई । प्रत्येक प्रांत की जुदा - जुदा भाषा हो गई । कोई कोमल, सरस तो कोई कठोर और कर्णकटु । इनमें हिन्दी भाषी अपनी बहनों में श्रेष्ठ कहलायी । इसमें भी इस प्रकार गद्य-पद्य का साहित्य रचा गया । इस प्रकार भट्ट जी ने साहित्य का विकास जनसमुदाय के हृदय से बताया है । यह समय और स्थिति के अनुसार परिवर्तित होता रहता है और होता रहेगा ।

9.3.1.7. संभाव्य प्रश्न :

सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

क) किसी देश का इतिहास पढ़ने से केवल हम उस देश को जान सकते हैं पर साहित्य के अनुशीलन से कौम के सब समय-समय के अभ्यान्तरिक भाव हमें परिस्फुट हो सकते हैं ।

ख) पाणिनि के सूत्रों में जो संस्कृत पाठियों के लिए कामधेनु का काम दे रहे हैं और जिनसे वैदिक और लौकिक सब प्रयोग सिद्ध होते हैं, लोक और वेद की निरख अच्छी तरह की गई है ।

ग) परिणाम में एक भाई दूसरे पर जयलाभ कर तथा जंघा में गदाघात और मस्तक पर पदाघात से उसे वध कर भाई के राज सिंहासन पर आरुढ़ हो सुख में फूल अनेक तरह के यज्ञ और दान में प्रवृत्त हुआ ।

घ) नि:संदेह तांत्रिकों की कृपा न होती तो हिन्दुस्तान ऐसा जल्द न डूबता । वेद के अधिकारी शुद्ध ब्राह्मण के लिए तांत्रिक दीक्षा या तंत्र - मंत्र अति निषिद्ध है ।

ङ) राम के उपासक कृष्ण के उपासक से लड़ते हैं, कृष्ण के उपासक रामोपासकों से इत्तिफाक नहीं रखते । कृष्णोपासकों में भी सत्यानासिन अनन्यता ऐसी आड़े आई है कि यह इनके आपस ही में बड़ा खटपट लगाए रहती है ।

आलोचनात्मक प्रश्न :

1. 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

2. बालकृष्ण भट्ट द्वारा लिखित निबंध की प्रामाणिकता पर आप अपने विचार प्रस्तुत कीजिए

3. 'समय के साथ साहित्य का स्वरूप बदलता है ।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं ? सोदाहरण तर्क दीजिए

लघूत्तरी प्रश्न :

1. साहित्य को जनसमूह के चित्त का चित्रपट कहा जाना क्या उचित है ?
2. वेद जिन महापुरुषों के हृदय का विकास था, वे लोग कैसे थे ?
3. रामायण और महाभारत के संदर्भ में लेखक ने क्या कहा है ?
4. पुराण और तंत्रों के बारे में इस निबंध में क्या कहा गया है ?
5. बौद्धों के आगमन से साहित्य में क्या परिवर्तन हुआ ?

अति लघूत्तरी प्रश्न

1. 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' निबंध के लेखक कौन हैं ?
2. प्रत्येक देश का साहित्य किसके अनुसार होता है ?
3. शोक-संकुल व्यक्ति की मुख छवि कैसे दिखती है ?
4. प्रसन्न चित्त व्यक्ति का चेहरा कैसा दिखता है ?
5. साहित्य को क्या कहा जाना संगत होता है ?
6. वेद किनका साहित्य है ?
7. ईश्वर के विषय में उत्पन्न भाव से जो नया साहित्य बना, उसका नाम क्या है ?
8. स्मृतियों और आर्य ग्रंथों की भाषा को हम किसके बीच की भाषा कह सकते हैं ?
9. किनके सूत्रों में संस्कृत पाठियों के लिए कामधेनु का काम दे रहे थे ?

10. वेद के उपरांत किसे साहित्य के बड़े-बड़े अंग समझे गए ?

11. रामायण किनकी रचना थी ?

12. महाभारत के प्रधान पुरुष कौन थे ?

13. रामायण के प्रधान पुरुष कौन थे ?

14. श्रीरामचन्द्र ने भरत को क्या सौंपा ?

15. व्यास कौन थे ?

16. वेद और ब्राह्मणों के बड़े विरोधी कौन थे ?

17. बौद्धों की भाषा क्या थी ?

18. किनके समय में प्राकृत की अधिक उन्नति हुई ?

19. किसके समय को 'अगस्टन पीरियड' कहा जाता है ?

20. कौन श्लोक के लिए असंख्य इनाम कवियों को देते थे ?

21. कौन-सी भाषा सबसे अधिक कोमल और मधुर है ?

22. कौन - सी भाषा अपनी बहनों में सबसे बड़ी है ?

23. कौन-सी बोली को कवियों ने अपने लिए चुन रखा ?

24. कौन - सी भाषा की समालोचना लेखक बाद में करना चाहते हैं ?

***

कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता

महावीर प्रसाद द्विवेदी

9.3.2. निबंध

9.3.2.1.पाठ : कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता

9.3.2.2. निबंधकार : महावीर प्रसाद द्विवेदी

9.3.2.3. लेखक परिचय

9.3.2.4. सूचना

9.3.2.5. उद्देश्य

9.3.2.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन

9.3.2.7. संभाव्य प्रश्न

* व्याख्यात्मक प्रश्न
* आलोचनात्मक प्रश्न
* लघूत्तरी प्रश्न
* अतिलघूत्तरी प्रश्न

कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता

महावीर प्रसाद द्विवेदी

9.3.2.1. कवियों की उर्मिला - विषयक उदासीनता

9.3.2.2. महावीर प्रसाद द्विवेदी

9.3.2.3. लेखक परिचय

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी युग प्रर्वतक थे । उनका जन्म उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर नामक गांव में सन् 1864 ई. हुआ था और देहावसन सन् 1938 ई. में हुआ था । हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने पर तार काम सीखकर जी.आई.पी. रेलवे में नौकरी करने लगे । वे बड़े अध्यवसायी थे । अपनी आदर्शवादिता के कारण उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी और सरस्वती पत्रिका का संपादन भार संभाला । 'सरस्वती' पत्रिका की सहायता से द्विवेदी जी ने हिंदी साहित्य की जो सेवा की है, वह अतुलनीय है । उनके कारण साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग को प्रसिद्धि मिली । उन्होंने हिंदी भाषा को परिष्कृत, परिमार्जित कर साहित्य में एक नवीन युग की प्रतिस्थापना की ।

द्विवेदी अपने युग की समस्त साहित्यिक प्रवृत्तियों के केन्द्र थे । वे एक साथ आलोचक, निबंधकार, पत्रकार के साथ-साथ कवि व लेखक निर्माता थे । संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी, बंग्ला, मराठी, फारसी आदि भाषाओं के ज्ञाता होने के कारण उन्होंने इन भाषाओं से उपयोगी कृतियों का अनुवाद भी किया है । उन्होंने वर्णनात्मक, भावात्मक , विचारात्मक निबंधों के साथ - साथ आवश्यकतानुसार व्यंग्यात्मक , चित्रात्मक और संलापात्मक निबंधों की भी सृष्टि की है ।

द्विवेदी को हिंदी गद्य का निर्माता कहा जाता है । वे भाषा की शुद्धता और व्याकरण के नियमों को मर्यादा देकर साहित्य जगत में अवतीर्ण हुए । उन्होंने भाव और विषय के अनुकूल ही भाषा लिखी । उनकी भाषाशैली में व्यावहारिकता व सूक्ष्मता आदि गुण भी हैं । उनकी भाषा-शैली व्यास-शैली कहलाती है ।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी अपने युग के एक देदीप्यमान विभूति थे ।

कृतियाँ : नैषध, चरित्र चर्चा, हिंदी भाषा की उत्पत्ति संपत्ति, शास्त्र, कौटिल्यकुगर, कालिदास की निरंकुशता, वनिता-विलास, रसज्ञरंजन, सुकवि - संकीर्तन, दृश्य दर्शन, साहित्य सीकर, विचार-विमर्श, विज्ञान वार्ता आदि ।

अनूदित कृतियाँ : भामिनी विलास, अमृतलहरी, जल चिकित्सा, हिन्दी महाभारत, रघुवंश, वेणीसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव आदि ।

9.3.2.4. सूचना :

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित निबंध 'कवियों की उर्मिला-विषयक उदासीनता' में उर्मिला के त्याग और तपस्या के बारे में बताया गया है । उनका कहना है कि कवि कभी-कभी विशेष व्यक्तियों पर दृष्टि नहीं डालते । उनकी उपेक्षा करके आगे बढ़ जाते हैं । ऐसे ही वाल्मीकि ने भी उर्मिला की उपेक्षा की है । उर्मिला को अपनी बहन सीता का वियोग वनवास के समय खूब सहना पड़ा । प्राणाधार पति लक्ष्मण की भी अनुपस्थिति से वह बेहद दुःखी हो गई पर कवि उसकी स्थिति से बिलकुल अनभिज्ञ रहे । उर्मिला रामचन्द्र, जानकी तथा अपने पति के लिए अपना आत्मसुखोत्सर्ग किया । पर उनके त्याग पर किसीने कलम नहीं चलायी । तुलसीदास ने भी उर्मिला पर भी अन्याय किया है । उन्होंने आदि कवि वाल्मीकि का ही अनुकरण किया । उर्मिला की उपेक्षा कर सीता को ही उन्होंने प्रशंसा की । इस प्रकार उर्मिला के पवित्र चरित्र-चित्रण पर कवियों ने वर्णन न करके ठीक नहीं किया । उनकी उदासीनता आज तक ढकता रहा है ।

9.3.2.5. उद्देश्य :

महावीर प्रसाद द्विवेदी उर्मिला के उज्वल चरित्र के बारे में बताना चाहते हैं । यद्यपि वे त्याग, सेवा और अपने आत्मसुखोत्सर्ग की प्रतीक थीं पर कवि ने उनकी प्रशंसा न करके दूसरों की प्रशंसा खूब की है । यह कवि मन का स्वभाव है वह जिसकी ओर झुक जाते हैं बस उसीके बारे में कलम चलाते हैं । जैसे आदिकवि वाल्मीकि ने रामचन्द्र और सीता के चरित्र को खूब महत्व दिया परंतु सीता की बहन उर्मिला के प्रति बिल्कुल उदासीन रहे । जबकि उसका चरित्र सर्वदा गेय था । क्या यह उर्मिला का भाग्यदोष है ? द्विवेदीजी का कहना है कि उर्मिला को बहिन सीता का वियोग सहना पड़ा, पति लक्ष्मण के विरहाग्नि में जलना पड़ा फिर भी वाल्मीकि को उनकी याद नहीं आयी । वे नई दुल्हन बनकर आयी थी और उन्होंने अपना सांसारिक सुख त्याग दिया । रामचन्द्र और जानकी माँ के लिए अपने सुख-सर्वस्व पर पानी डाल दिया । पर कवि वाल्मीकि के शब्द भंडार में उनके प्रति ऐसी दरिद्रता क्यों ?

इस प्रकार द्विवेदी कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता के प्रति दुःख प्रकट करते हैं । उनका कहना है कि कवियों का ऐसा करना अनुचित है, यह उनका पक्षपात विचार है क्योंकि उर्मिला का चरित्र भी कम महत्वपूर्ण नहीं है । उनका त्याग, सेवा, और समर्पण अतुलनीय है ।

9.3.2.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन :

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने यह निबंध रवीन्द्रनाथ टैगोर के 'काव्यर उपेक्षिता' निबंध से प्रेरित

होकर लिखा है । द्विवेदी ने कवियों की उदासीनता पर बताया है कि वे क्यों अच्छे पवित्र चरित्रों को अपनी रचनाओं में महत्व नहीं देते । इस प्रकार की उदासीनता उन्होंने आदि कवि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास में देखी है ।

रामायण की रचना में विशेषकर प्रभु रामचन्द्र और सीता मैया के बारे में वर्णन हुआ है । यद्यपि उर्मिला का चरित्र अत्यंत महान और गेय है पर कवि ने उनकी उपेक्षा की है । इसका क्या कारण है ? क्या यह उर्मिला का भाग्यदोष है । रामचन्द्र के राज्याभिषेक के समय उर्मिला की खुशी क्या कवि ने नहीं देखी ? जब राम-सीता के साथ उनका पति लक्ष्मण भी चौदह वर्ष के लिए वनवास के लिए चल पड़े तब उन पर बीती वेदना क्या कवि ने अनुभव नहीं की ? उन्हें अपनी बहन सीता तथा पति लक्ष्मण का वियोग सहना पड़ा । इस प्रकार की दयनीय स्थितियों में भी कवि ने उनपर दया नहीं दिखायी । क्या ऐसी त्याग मूर्ति के प्रति इतनी उपेक्षा ठीक है ?

उर्मिला सर्वसुख वंचिता थी । लक्ष्मण के त्याग से भी अधिक आत्मोसर्ग उन्होंने किया । नई दुल्हन बनकर आने के बावजूद उन्होंने अपने सांसारिक सुख त्याग दिये । उन्होंने अपनी आत्मा की अपेक्षा अधिक त्याग अपने पति लक्ष्मण को राम-सीता के लिए कुर्बान कर दिया । ऐसी पवित्र नारी के लिए आदिकवि वाल्मीकि के शब्द भंडार में दरिद्रता क्यों ?

निबंधकार का कहना है किउर्मिला को पतिपरायणता - धर्म का ज्ञान पूरी तरह था । पर उन्होंने लक्ष्मण के साथ वन में जाने की जिद् नहीं की । यदि वे जाती तो लक्ष्मण अपने आराध्य युग्म राम-सीता की सेवा अच्छी तरह न कर पाते । यह उनके चरित्र की बहुत बड़ी महत्ता का द्योतक है । परंतु लेखक को अतिशय दु:ख है कि कैसे वाल्मीकि ने ऐसी रमणी के चरित्र को अनदेखा कर दिया ।

द्विवेदी ने पुनः बताया है कि गोस्वामी तुलसी दास ने भी आदि कवि वाल्मीकि का अनुसरण किया है । उर्मिला के चरित्र पर तुलसीदास ने भी कुछ नहीं लिखा । उर्मिला की मनोदशा, पति वियोग के संबंध में वे वर्णन करना भूल गए । क्या यह अन्याय नहीं है ?

भवभूति ने उर्मिला पर थोड़ी-सी कृपा की थी । चित्रफलक पर उर्मिला को देखकर जब सीता ने लक्ष्मण से पूछा था - यह कौन है ? तब उन्होंने उर्मिला के चित्र पर हाथ रखकर ढक दिया था जो आज तक इसी तरह ढकता आया ।

इस प्रकार द्विवेदी का कहना है कि कवि जिस तरफ झुक जाते हैं उसी पर अपनी लेखनी चलाते हैं । अन्य विषयों पर उनका ध्यान नहीं जाता । बहुत महत्त्वपूर्ण चरित्र उनकी नजरों से उपेक्षित रह जाते हैं । ऐसा ही हुआ एक नवपरिणीता दुखिनी वधू उर्मिला के लिए ।

9.3.2.7. संभाव्य प्रश्न :

सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

क) कवि स्वभाव से उच्छृंखल होते हैं ; वे जिस तरफ झुक गए झुक गए । जी में आया तो राई का पर्वत कर दिया । जी में न आया तो हिमालय की तरफ भी आँख उठा कर न देखा ।

ख) मुने ! इस देवी की इतनी उपेक्षा क्यों ? धद सर्वसुखवंचिता के विषय में इतना पक्षपात -कार्पण्य क्यों ?

ग) नवोढ़त्व को प्राप्त होते ही जिस उर्मिला ने, रामचन्द्र और जानकी के लिए, अपने सुख -सर्वस्व पर पानी डाल दिया उसी के लिए अन्तर्दर्शी आदि कवि के शब्द भंडार में दरिद्रता !

घ) अपने कमण्डलु के करुणावारि की एक भी बूंद आपने उर्मिला के लिए न रखी । सार का सारा कमण्डलु सीता को समर्पण कर दिया ।

ङ) कैसी खेद की बात है कि उर्मिला का उज्वल चरित्र-चित्रण कवियों के द्वारा भी आज तक इसी तरह ढकता आया ।

आलोचनात्मक प्रश्न :

1. कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता निबंध में महावीर प्रसाद द्विवेदी के विचारों को स्पष्ट कीजिए ।

2. कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता निबंध की विषय वस्तु का विश्लेषण कीजिए ।

3. 'उर्मिला' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

लघूत्तरी प्रश्न :

1. कवि का स्वभाव कैसा होता है ?

2. क्रौंच पक्षी को देखकर आदि कवि की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

3. वाल्मीकि रामायण पाठ करने वाले कब उर्मिला के दर्शन करते हैं ?

4. लक्ष्मण के वन प्रस्थान के समय उर्मिला की स्थिति कैसी थी ?

5. रामचन्द्र के राज्याभिषेक का प्रभाव उर्मिला पर कैसा पड़ा था ?

6. उर्मिला का आत्मोत्सर्ग क्या था ?

7. उर्मिला ने लक्ष्मण के साथ वन - गमन करने की जिद क्यों नहीं की ?

8. भवभूति ने उर्मिला पर क्या कृपा की ?

19. सीता ने लक्ष्मण से क्या पूछा ?

10. लक्ष्मण ने क्या जवाब दिया ?

अति लघूत्तरी प्रश्न :

1. निषाद द्वारा किसका वध हुआ था ?

2. किनका हृदय दु:ख से विदीर्ण हो गया ?

3. कवि के मुख से अचानक क्या निकल पड़ा ?

4. नवपरिणीता दुखियारी बहू कौन थी ?

5. पारायण करने वाले उर्मिला को कहाँ देखते हैं ?

6. लेखक किनके विषय में कोई विशेषता नहीं -बोलते हैं ?

7. किनके राज्याभिषेक के समय उर्मिला खुशी मना रही थी ?

8. 'वचने दरिद्रता' उन्होंने किनके लिए प्रयोग किया है ?

9. उर्मिला किनकी बहन थी ?

10. किन्होंने बड़े भाई का साथ दिया ?

11. किनको पति प्रेम और पतिपूजा की शिक्षा एक स्थान में मिली थी ?

12. किन्होंने आदि कवि के जैसे उर्मिला के प्रति भी अन्याय किया ?

13. रामचरित मानस किनकी रचना है ?

14. किन्होंने उर्मिला पर थोड़ी-सी कृपा की है ?

15. सीता ने लक्ष्मण से क्या पूछा ?

16. लक्ष्मण ने कहाँ हाथ रख दिया ?

17. क्या आज तक ढकता आ रहा है ?

18. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए :

क) उर्मिला के दर्शन सबसे पहले .... में सीता, ... और .... के साथ होते हैं ?

ख) .... का चरित्र सर्वथा गेय और आलेख्य है ।

ग) ...... को अपनी बहिन तथा प्राणाधार पति का भी वियोग सहना पड़ा ।

घ) ..... ने अकृत्रिम भ्रातृस्नेह के कारण बड़े भाई का साथ दिया ।

ङ) उर्मिला भी ..... धर्म को अच्छी तरह जानती थी ।

19. अर्थ लिखिए :

अल्पादल्पतरा, सर्वसुखवंचिता, हत, विधिलसते, परमकारुणिकेन,

मुनिना वाल्मीकिनापि विस्मृतासि, नवोढत्व ।

***

कविता क्या है ?

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

9.3. निबंध

9.3.3.1. पाठ नाम : कविता क्या है ?

9.3.3.2. निबंधकार : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

9.3.3.3. परिचय

9.3.3.4. सूचना

9.3.3.5. उद्देश्य

9.3.3.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन

9.3.3.7. संभाव्य प्रश्न

* व्याख्यात्मक प्रश्न
* आलोचनात्मक प्रश्न
* लघूत्तरी प्रश्न
* अतिलघूत्तरी प्रश्न

कविता क्या है ?

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

9.3.3.1. पाठ नाम : कविता क्या है ?

9.3.3.2. निबंधकार : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

9.3.3.3. लेखक परिचय

आचार्य रामचन्द शुक्ल का जन्म बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में सं. 1941 की आश्विन पूर्णिमा को हुआ था । उनके पिता पं. चन्द्रबली शुक्ल थे । शुक्ल जी ने मिर्जापुर के जुबली स्कूल से सन् 1898ई. में मिडिल पास किया और सन् 1901 में लन्दन मिशन स्कूल से स्कूल परीक्षा उतीर्ण की । वे एक ऑफिस में बीस रुपये प्रति माह पर नौकरी करने लगे । लेकिन वहाँ से त्याग पत्र देकर मिशन स्कूल में ड्राइंग मास्टर हो गए । 1909-10 ई. में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने उन्हें हिंदी शब्द-सागर में कार्य करने के लिए बुलाया । काशी में उन्हें अपनी प्रतिभा को विकसित करने का अच्छा अवसर मिला । उन्होंने हिंदी-साहित्य का इतिहास लिखकर हिंदी में एक अमूल्य ग्रंथ प्रस्तुत किया ।

1914 ई. में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में वे अध्यक्ष बने । उन्होंने हिंदी की जो सेवा की वो आज भी स्मरणीय है ।

वास्तव में शुक्लजी उच्चकोटि के प्रतिभा संपन्न साहितयकार थे । उनकी साहित्य साधना अत्यंत व्यापक थी । वे संपादक, अनुवादक, निबंधकार, कवि और आलोचक सब एक साथ थे । आधुनिक हिंदी समालोचना शैली के वे जन्मदाता कहे जाते हैं । उन्होंने सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार की आलोचनाएँ प्रस्तुत की हैं । उनसे ही निबंध -साहित्य का आधुनिक युग प्रारंभ होता है । उनके निबंधों में साहित्य व जीवन का सुन्दर समन्वय है और विषय व व्यक्तित्व का अपूर्व सामंजस्य है ।

शुक्लजी की भाषा संस्कृत- तत्सम शब्दावली प्रधान है । समास बहुला और वस्तु विन्यास परक है । उनकी शैली भी अत्यंत सशक्त और विवेचनात्मक है । साथ ही व्यंग्य -विनोद, हास-परिहास, चूहल और मीठी चुटकी लेने की प्रवृत्ति भी उनमें है । वास्तव में उनकी भाषा-शैली विषयानुकूल भाव-प्रकाशन की क्षमता रखती है । उनकी भाषा भव्य और गरिमामय है । वे निश्चित रूप से हिंदी निबंधकारों में मूर्धन्य स्थान के अधिकारी हैं ।

शुक्लजी को दमा का रोग था । इसलिए सं. 1997 की माघ सुदी छट्ठ रविवार को रात्रि नौ बजे (सन् 1940) स्वास के दौरे में हृदयगति बन्द हो जाने से उनका स्वर्गवास हो गया ।

कृतियाँ -

* इतिहास - हिंदी साहित्य का इतिहास

* समाचोलना - काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद

*रस - मीमांसा । निबंध, चिन्तामणि भाग -1.2) साहित्य, प्राचीन भारतीयों का फहरावा ।

* काव्य - बुद्ध चरित, मनोहर छटा, हृदय का मधुर भार व अन्य कविताएँ ।

* अनुवाद - शंशाक, विश्व प्रपंच, आदर्श जीवन, राज्य प्रबंध शिक्षा, कल्पना का आनन्द ।

* संपादन - हिंदी शब्द सागर, तुलसी ग्रंथावली, जायसी ग्रंथावली, भ्रमर गीत सार आदि ।

9.3.3.4. सूचना :

प्रस्तुत निबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जीवन, जगत तथा मुक्त हृदय के बारे में बताते हैं । उनका कहना है कि काव्य ही शब्द साधना है । इस साधना से हमारे मनोविचार परिष्कार होते हैं । इसलिए उन्होंने इसे ज्ञानयोग व कर्मयोग के समकक्ष भाव-योग या अनुभूतियोग कहा है । मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी ही कविता कहलाती है । कविता से ही मनुष्य शीर्ष स्थान पर पहुँच पाता है ।

शुक्लजी ने मनुष्य के क्रोध और कुत्ते के क्रोध में तुलना करके सभ्यता की सूचना दी है । ज्यों - ज्यों हमारे कार्य-कलापों पर सभ्यता के नए-नए आवरण चढ़ते जाएँगे त्यों - त्यों कवि भी कठिन होता जाएगा । उन्होंने प्रकृति के विविध रूपों को दर्शाया है । विभिन्न स्थितियों में प्रकृति में विचित्रता पाई जाती है । हमें प्रकृति के रूपों का वर्णन वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति आदि प्राचीन कवियों में मिलती है । उनका कहना है केवल सच्चे हृदयवाले व्यक्ति असाधारण तत्वों की पहचान नहीं करते । भावात्मक हृदयवाले भी हृदय के व्यापक तत्वा को समझ सकते हैं । संपूर्ण सत्ताएँ एक ही परम सत्ता और संपूर्ण भाव ही परम भाव के अन्तर्भुक्त है ।

शुक्लजी ने कहा है कि विच्छिन्न दृष्टि की अपेक्षा समष्टि दृष्टि में अधिक व्यापकता और गंभीरता है । काव्य-दृष्टि सजीव तथा निर्जीव सृष्टि की ओर भी जाती है । सब प्रकार की दृष्टि विश्वरूपी महाकाव्य की भावना ही है । सच्चा कवि इसका द्रष्टा मात्र है । उसी समय कवि का हृदय अत्यंत गंभीर और प्रशांत हो जाता है । उन्होंने स्पष्ट कहा है 'ज्ञान ही भावों के संचार के लिए मार्ग खोलता है ; ज्ञान-प्रसार के भीतर ही भाव प्रसार होता है । मनुष्य की चेष्टा तथा कार्यकलापों से भावों का मूल संबंध निरूपित होता है । भाव से अनुभव और अनुभव से हृदय का बन्धन

मुक्त होता है । तब उसका हृदय विश्व हृदय हो जाता है । कविता अपनी मनोरंजन शक्ति द्वारा मनुष्य के हृदय के मर्मस्थलों को स्पर्श करती है ।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने सौन्दर्य को मन के भीतर की वस्तु बताई है । जगत और मन दोनों रूपमय और गतिमय है । कविता से वस्तुओं के सौन्दर्य की छटा देखने को मिलती है । तत्सहित कर्म और मनोवृत्ति के सौन्दर्य का भी मार्मिक हृदय स्पष्ट दिखता है । कवि उत्कर्ष साधना के लिए भाव की अनुभूति को तीव्र करने के लिए चमत्कार और मार्मिक अभिव्यजना के लिए लक्षणा तथा जातिसंकेत वाले शब्दों का प्रयोग करते हैं । शुक्लजी कहते हैं कि मनुष्य के लिए कविता अत्यंत आवश्यक है । कविता का संपर्क मनुष्य के हृदय के साथ है । मनुष्यता के साथ है । यह मनुष्य की अंत:प्रकृति के साथ चली आ रही है और चलती रहेगी ।

9.3.3.5. उद्देश्य :

रामचन्द्र शुक्ल ने कविता का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है कि कविता मनुष्य के हृदय की मुक्ति साधना के लिए है । आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा है और हृदय की मुक्तावस्था रसदशा । कविता की साधना भावयोग, कर्मयोग और ज्ञानयोग के समकक्ष है ।

कविता मनुष्य को चरम सीमा पर पहुँचाती है । विभिन्न प्रकार के भावों से मनुष्य-जाति जगत के साथ तादात्म्य रखने में समर्थ होती है । भावों के विषयों का संबंध हमेशा मूल विषयों और व्यापारों के साथ रहेगा । लेखक ने सभ्यता तथा उसके आवरण को समझाया है । बाह्य और आंतरिक सभ्यता में काफी अंतर है । सभ्यता की वृद्धि के साथ-साथ कवियों का कार्य भी बढ़ता जाता है । प्रत्यक्षीकरण पर उन्होंने प्रकाश डाला है ।

लेखक कहते हैं कि हम प्रकृति के विभिन्न रूपों को देखते हैं । एक सच्चा कवि प्रकृति के सभी रूपों से प्रेम करता है क्योंकि उसका संस्कार प्रकृति के साथ बहुत पहले से जुड़ा रहता है । इसलिए लेखक प्रत्येक कवि को सहृदय कवि बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं ।

प्रस्तुत निबंध में लेखक हमें सभी मनुष्यों में नर-सत्ता अनुभव करने के लिए कहते हैं । हम प्रत्येक व्यक्ति में मानव-मात्र को देखने से हमारा हृदय बहुत ऊँचाई पर पहुँच जाता है । हमारी बुद्धि-विवेक में समग्रता का भाव उमड़ पड़ता है । उस समय छोटी-छोटी संकीर्ण बातें नष्ट हो जाती हैं और हृदय की अनुभूति व्यापक हो जाती है । इस प्रकार शुक्ल जी ने काव्य दृष्टि के समष्टि रूप को महत्व दिया है ।

लेखक का उद्देश्य है कि जड़ जगत के भीतर पाए जाने वाले रूप, व्यापार तथा परिस्थितियों के विभिन्न तथ्यों को बताना । उनका कहना है कि संपूर्ण जीवन -क्षेत्र में मार्मिक तथ्यों का चयन करना अधिक व्यापक और गंभीर है । अत: ज्ञान ही भावों के लिए मार्ग खोलता है और ज्ञान प्रसार के भीतर ही भाव प्रसार होता है । कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत के बीच क्रमश: उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्य की उच्च भूमि पर ले जाती है ।

वास्तव में मनुष्य के लिए कविता अत्यंत प्रयोजनीय वस्तु है । यह संसार के समस्त लोगों में किसी न किसी रूप में पाई जाती है । कविता - देवी के मंदिर ऊँचे, खुले, विस्तृत और पवित्र हृदय है ।

9.3.3.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन :

प्रस्तुत निबंध 'कविता क्या है?' एक विचार प्रधान निबंध है । इसमें विचारों की आन्तरिक और बाह्य भाव व्यंजना का उद्भव सामंजस्य दृष्टिगोचर होता है । इसमें बुद्धि तत्व और अनुभूति तत्व अपनी प्रखरता एवं सौन्दर्य के साथ विद्यामान है । शुक्ल जी ने कविता को हृदय का विषय कहा है, कविता के कारण ही व्यक्ति ऊँचाई तक पहुँच सकता है । उन्होंने भावों के प्रवर्तन की वस्तुओं, व्यापारों तथा कार्यों के सामीप्य का अनुभव कराने का सफल प्रयास कल्पना - तत्व के आधार पर किया है । इसमें शैली तत्व के अन्तर्गत भाषा-रचना, अलंकार और उक्ति - वैचित्र्य का प्रयोग प्रांजल भावों से हुआ है । उनकी भाषा शैली शूत्रात्मक है जो अत्यंत रोचक और आकर्षक है ।

इस संसार में मनुष्य जीने के लिए एक दूसरे के साथ मिलता है और लड़ता भी है । जब वह विभिन्न रूपों, व्यापारों और कार्य-कलापों के साथ संबंध रखता है तब उसका हृदय बद्ध रहता है । जब वह अपनी सत्ता में छूट कर सोचता है तब उसका हृदय मुक्त हो जाता है । आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा और हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है । मनुष्य की वाणी जो मुक्ति के लिए शब्द विधान करती है, उसे ही कविता कहते हैं । कविता का संबंध भावयोग, ज्ञानयोग तथा कर्मयोग के साथ है । जैसे जगत रूपात्मक है वैसे हमारा हृदय भी अनेक भावात्मक है । इन्हीं भावों से ही समग्र मानव-जाति जगत के साथ तादात्म्य स्थापित करती है । काव्य-दृष्टि के लिए हमें मूल रूपों और मूल व्यापारों के साथ संबंध रखना पड़ता है ।

लेखक ने स्पष्ट कहा है कि सभ्यता की वृद्धि के लिए साथ-साथ मनुष्यों के कार्य-कलापों में भी जटिलता दिखाई देने लगी । लेकिन इसके बावजूद उनका संबंध मूल विषय और मूल व्यापारों के साथ बराबर रहा । इससे यह साबित होता है कि कवियों का काम सभ्यता के विकास के साथ अधिक बढ़ता गया । काव्य -कविता के लिए हमें भावों के विषयों के मूल और आदिम रूपों तक जाना पड़ेगा । इसके लिए अर्थग्रहण के साथ-साथ बिम्बग्रहण भी आवश्यक है जो निर्दिष्ट मूर्त और गोचर हो ।

लेखक ने कविता को मनुष्य की बाह्य प्रकृति और अंत: प्रकृति के साथ-साथ जोड़ा है । मनुष्य की पशु प्रकृति और देव -प्रकृति में काफी अंतर है । कविता के लिए मनुष्यता चाहिए । पाशविकता नहीं । अपनी स्वार्थ लोलपता, भीतरी कुरूपता को विसर्जन करके दीन-दु:खी, दरिद्र. अनाथों और अबलाओं के प्रति दया दिखाने पर ही कवि में विश्वकाव्य की रसधारा प्रवाहित होती है ।

प्रकृति हमारे सामने अनन्त रूपों में प्रदर्शित होती है - कभी मधुर तो कभी कर्कश ; कभी भव्य तो कभी भयंकर । प्रकृति के समस्त प्रकार के रूपों में रमनेवाले कवि बाल्मीकि, कालिदास और भवभूति आदि हैं ।

साहचर्य - संभूत रस के प्रभाव से प्राकृतिक दृश्य अत्यंत मनोरम लगते हैं । प्रकृति के मुक्त प्रागंण में जब मनुष्य - जाति के पुराने सहचरों की वंश परंपरागत स्मृति वासना के रूप में शोभा व सौन्दर्य के साथ मिलती है तब वे संपूर्ण सहृदय भावुक कहे जाते हैं । अत: संपूर्ण सत्ताएँ एक ही परम सत्ता है और संपूर्ण भाव एक ही परम भाव है । मनुष्य की सफल साधना के लिए बुद्धि तत्व और भाव तत्व में समन्वय रखना आवश्यक है ।

शुक्लजी ने बताया है कि विच्छिन्न दृष्टि की अपेक्षा समष्टिदृष्टि में अधिक व्यापकता और गंभीरता है । काव्यदृष्टि केवल सजीव सृष्टि तक नहीं जाती बल्कि वह निर्जीव जड़ सृष्टि तक भी जाती है । जड़ जगत के भीतर उपलब्ध अनेक रूप और व्यपार कई मार्मिक तथ्यों की भी व्यंजना करते हैं । इस प्रकार सूक्ष्म और मार्मिक दृष्टिवालों को अधिक गूढ़ व्यंजना भी मिल सकती है ।

ज्ञान ही भावों के संचार के लिए मार्ग खोलता है । ज्ञान- प्रसार के भीतर ही भाव-प्रसार होता है । अब मनुष्य का ज्ञान-क्षेत्र बुद्धि व्यवस्थात्मक और विचारात्मक होकर बहुत ही विस्तृत हो गया है । मनुष्य को कर्म में प्रवृत्त करने वाली मूल वृत्ति भावात्मिक है । कर्म के द्वारा ही कविता का भाव-प्रसार होता है । वास्तव में मनुष्य की चेष्टाओं तथा कार्यकलापों से भावों का महत्व निरूपित होता है । इस भाव तथा हृदय प्रसार का स्मारक स्तंभ काव्य है जिसकी उत्तेजना से हमारे जीवन में एक नया अनुभव आ जाता है । इस नए अनुभव से ही हृदय का बन्धन खुलता है और मनुष्यता की उच्च भूमि की प्राप्ति होती है । यह सबकुछ कविता के अधिकाधिक प्रसार से ही संभव है ।

कविता का अंतिम उद्देश्य जगत के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उनके साथ मनुष्य-हृदय का सामंजस्य स्थापन है । कविता अपनी मनोरंजन शक्ति द्वारा पढ़ने व सुनने वालों के हृदय में समाई रहती है । कविता केवल वस्तुओं के ही रंग-रूप के सौन्दर्य की छटा नहीं दिखती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति की अगोचर बातों को भी स्थूल गोचर रूप में रखने का प्रयास करती है । अत: कविता मनुष्य के लिए अत्यंत प्रयोजन है । यह मानव-जाति के साथ चली आ रही है और चलती रहेगी ।

9.3.3.7. संभाव्य प्रश्न :

व्याख्यात्मक प्रश्न :

सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

क) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है । हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं । इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग और ज्ञानयोग का समकक्ष मानते हैं ।

ख) कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक- सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है ।

ग) काव्य के लिए अनेक स्थलों पर हमें भावों के विषयों के मूल और आदिम रूपों तक जाना होगा जो मूर्त और गोचर होंगे । जब तक भावों से सीधा और पुराना लगाव रखने वाले मूर्त और गोचर रूप न मिलेंगे तब तक काव्य का वास्तविक ढांचा खड़ा न हो सकेगा ।

घ) शृंगार के उद्दीपन में जो प्राकृतिक दृश्य लाए जाते हैं, उनके प्रति रतिभाव नहीं होता ; या नायिका के प्रति होता है । वे दूसरे के प्रति उत्पन्न प्रीति को उद्दीप्त करने वाले होते हैं, स्वयं प्रीति के पात्र या आलम्बन नहीं होते । संयोग में वे सुख बढ़ाते हैं व वियोग में काटने दौड़ते हैं ।

ङ) जो अपने विलास या शरीर सुख की सामग्री ही प्रकृति में ढूँढ़ा करते हैं उनमें उस रागात्मक 'सत्व' की कमी है जो व्यक्त सत्ता मात्र के साथ एकता की अनुभूति में लीन करके हृदय के व्यापकत्व का आभास देता है । संपूर्ण सत्ताएँ एक ही परम सत्ता व संपूर्ण भाव एक ही परम भाव के अन्तर्भुक्त है ।

च) कहने की आवश्यकता नहीं कि विच्छिन्न दृष्टि की अपेक्षा समष्टि दृष्टि में अधिक व्यापकता और गंभीरता रहती है । काव्य का अनुशीलन करने वाले मात्र जानते हैं कि काव्य दृष्टि सजीव सृष्टि तक ही बद्ध नहीं रहती । वह प्रकृति के उस भाग की ओर भी जाती है जो निर्जीव या जड़ कहलाता है ।

छ) हम सृष्टि के सौन्दर्य को देखकर रसमग्न होने लगते हैं, कोई निष्ठुर कार्य हमें असह्य होने लगता है, हमें जान पड़ता है कि हमारा जीवन कई गुना बढ़कर सारे संसार में व्याप्त हो गया है ।

ज) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है ।

झ) मनुष्य के कुछ कर्मों में जिस प्रकार दिव्य सौन्दर्य और माधुर्य होता है, उसी प्रकार कुछ कर्मों में भी भीषण कुरुपता और भद्दापन होता है । इसी सौन्दर्य या कुरुपता का प्रभाव मनुष्य के हृदय पर पड़ता है और इस सौन्दर्य या कुरुपता का सम्यक प्रत्यक्षीकरण कविता ही कर सकती है ।

ञ) कविता पर अत्याचार भी बहुत कुछ हुआ है । लोभियों, स्वार्थियों, खुशामदियों ने उसका गला दबाकर कहीं अपात्रों को -आसमान पर चढ़ाने वाली -स्तुति कराई है, कहीं द्रव्य न देने वालों की निराधार निन्दा ।

आलोनात्मक प्रश्न :

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबंध 'कविता क्या है ?' का वैशिष्ट्य बताइए ।
2. 'कविता क्या है ?' निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए ।
3. कविता की विशेषताएँ इस निबंध के आधार पर लिखिए ।
4. 'कविता क्या है ?' निबंध का विश्लेषण और विवेचन कीजिए ।
5. 'कविता क्या है ?' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए ।

लघूत्तरी प्रश्न :

1. जीना किसे कहते हैं ?
2. हृदय कब तक बद्ध रहता है ?
3. कविता किसे कहते हैं ?
4. हमें काव्य के प्रयोजन के लिए क्या करना चाहिए ?
5. मनुष्य - जाति के भावों के साथ किनका साहचर्य है ?
6. सभ्यता क्या है ?
7. सभ्यता के आवरण बढ़ने के कारण क्या होता है ?
8. देश की वर्तमान दशा के वर्णन में हम क्या कर सकते हैं ?
9. काव्य के लिए बिम्बग्रहण कैसे हो सकता है ?
10. हृदय पर प्रभाव डालने के लिए कविता क्या करती है ?
11. काव्यदृष्टि कहाँ रहती है ?
12. वाल्मीकि रामायण में क्या वर्णन मिलता है ?
13. श्रृंगार के उद्दीपन रूप में प्राकृतिक दृश्य कैसे होते हैं ?
14. मनुष्येतर बाह्य-प्रकृति को हम किस रूप में ग्रहण करते हैं ?
15. प्रकृति अनंत रूपों में हमारे समक्ष कैसे आती है ?

16. कवि कालिदास ने वर्षा के प्रथम जल से क्या अनुभव किया था ?

17. हमें कब प्रेम का अनुभव होता है ?

18. बुद्धि की क्रिया का प्रभाव हमारे मन पर कैसे पड़ता है ?

19. सबेरा होते ही कौवे क्यों चिल्लाते हैं ?

20. सामान्य दृष्टि क्या देख सकती है ?

21. हम कब किसी काम को करने या न करने की चेष्टा करते हैं ?

22. ज्ञान-प्रसार और भाव-प्रसार के बारे में क्या कहा गया है ?

23. कवि वाणी के प्रसाद से हम क्या अनुभव करते हैं ?

24. 'उपासना' के बारे में शुक्लजी ने क्या बताया है ?

25. 'कल्पना' के प्रकाश के संबंध में क्या कहा गया है ?

26. कविता का अंतिम लक्ष्य क्या है ?

27. कविता और कहानी सुनने वालों में क्या अंतर है ?

28. सौन्दर्य क्या है ?

29. काव्य के सुन्दर और असुन्दर पक्षों पर क्या विचार प्रकट किया गया है ?

30. 'चमत्कार' से तात्पर्य क्या है ?

31. कविता की दो विशेषताएँ लिखिए ।

32. भविष्य का ज्ञान कैसा है ?

33. आचार्यों ने अलंकार का अर्थ किस रूप में किया है ?

34. कविता की आवश्यकता क्यों है ?

अति लघूत्तरी प्रश्न :

1. आत्मा की मुक्तावस्था को क्या कहते हैं ?

2. रसदशा किसे कहा जाता है ?

3. भावयोग किसका समकक्ष है ?

4. बौद्ध दर्शन में होने वालों के भावों को क्या कहते हैं ?

5. रूप बदलने का नाम क्या है ?

6. कवि-कर्म का मुख्य अंग क्या है ?

7. कविता की आवश्यकता कब बढ़ेगी ?

8. काव्य में अर्थग्रहण के साथ और क्या अपेक्षित है ?

9. विश्वकाव्य में निमग्न न होने वाले का जीवन कैसा है ?

10. काव्यदृष्टि कहाँ रहती है ?

11. वाल्मीकि रामायण का प्रधान विषय क्या है ?

12. साहित्य शास्त्र में आलम्बनों के बीच किसको स्थान नहीं मिलता ?

13. प्राकृतिक वस्तु-व्यापार क्यों रखे जाते हैं ?

14. मनुष्येतर बाह्य प्रकृति का ग्रहण किसमें मिलता है ?

15. 'उत्तर - रामायण' में क्या पाए जाते हैं ?

16. मेघदूत में कैसी दृष्टि पाई जाती है ?

17. कबूतर और गौरा कहाँ रहते हैं ?

18. किसमें समन्वय होना चाहिए ?

19. आरोप कभी-कभी कथन को कहाँ डाल देता है ?

20. ज्ञान किसका मार्ग खोलता है ?

21. मनुष्य को कर्म में प्रवृत्त करने वाली कौन-सी मूल वृत्ति है ?

22. कर्म की उत्तेजना किसमें नहीं होती ?

23. किससे कर्मक्षेत्र का विस्तार होता है ?

24. भावों का मूल संबंध कैसे निरूपित होता है ?

25. किससे हम संसार के सुख-दुःख आदि अनुभव करते हैं ?

26. उपासना किसका अंग है ?

27. कल्पना कितने प्रकार की होती है ?

28. कल्पना को किसमें बहुत प्रधानता दी गई है ?

29. किसने रमणीयता का पल्ला पकड़ा था ?

30. यूरोपीय समीक्षकों ने किसको काव्य का चरम लक्ष्य माना था ?

31. काव्य के दो पक्ष क्या - क्या हैं ?

32. मनोरंजन की सामग्री क्या है ?

33. क्या भाव-प्रेरित वक्र उक्तियों से भरा पड़ा है ?

34. पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग को कैसा दोष माना जाता है ?

35. किससे कविता की आयु बढ़ती है ?

36. किसने रस की प्रधानता की ओर संकेत किया था ?

***

अस्ति की पुकार हिमालय

विद्यानिवास मिश्र

9.3.4. निबंध

9.3.4.1. पाठ नाम : अस्ति की पुकार हिमालय

9..3.4.2. निबंधकार : विद्यानिवास मिश्र

9.3.4.3. लेखक परिचय

9.3.4.4. सूचना

9..3.4.5. उद्देश्य

9.3.4.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन

9.3.4.7. संभाव्य प्रश्न

* व्याख्यात्मक प्रश्न
* आलोचनात्मक प्रश्न
* लघूत्तरी प्रश्न
* अतिलघूत्तरी प्रश्न

अस्ति की पुकार हिमालय

विद्यानिवास मिश्र

9.3.4.1. पाठ नाम : अस्ति की पुकार हिमालय

9..3.4.2. निबंधकार : विद्यानिवास मिश्र

9.3.4.3. लेखक परिचय

स्वातंत्र्योत्तर युग के गद्य लेखकों में डॉ. विद्यानिवास मिश्र का विशिष्ट स्थान है । उनका जन्म सन् 1926ई. में हुआ था । वे मूलत: संस्कृत भाषा और साहित्य से संबंध रखते हैं । इसके साथ उनका लोकजीवन से भी घनिष्ठ संबंध रहा । शास्त्र ज्ञान और लोक संस्कृति उनके निबन्धों में बिम्ब -प्रतिबिम्ब भाव से विद्यमान है । उनके निबन्धों में भावना और पांडित्य का मणि-कांचन संयोग है ।

डॉ.मिश्रजी के निबंध ललित निबंधों की कोटि में आते हैं । वे निबंध दो भागों में बांटे जा सकते हैं - शुद्ध भावात्मक निबंध, भाव और विचार से संयुक्त निबंध । 'छितवन की छांव', 'तुम चंदन हम पानी' और 'कदम की फूली डाल' के निबंधों में ललित निबंध गुणों का प्राध्यान्य है । 'आंगन का पंछी' और 'बनजारा मन' के निबंधों में बौद्धिकता अधिक है ।

डॉ.मिश्रजी के निबंधों की भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्राधान्य है परंतु अन्य भाषाओं के शब्दों के प्रयोग में भी उन्हें आपत्ति नहीं है । उन्होंने उर्दू-फारसी, अंग्रेजी तथा मुहावरों और कहावतों में अलंकारों की सुन्दर छटा भी मिलती है । उनकी भाषा-शैली की एक अन्य विशेषता है कि वे शब्दों के माध्यम से वर्ण्य -विषय का चित्र उतार देते हैं । इस प्रकार उनके निबंधों की भाषा में चित्रोपमता और मादकता विद्यमान है । उनकी भाषा किसी कहानी की भाषा के सदृश ही सरस तथा रोचक है । उन्होंने भावावेश, भावुकता और भावनात्मकता की शैली से अपने निबंधों का शृंगार किया है । भारत की गौरवमय संस्कृति पर उन्हें गर्व है । वास्तव में नई पीढ़ी के निबंधकारों में श्रीविद्यानिवास मिश्र का महत्वपूर्ण स्थान है ।

9.3.4.4. सूचना :

विद्यानिवास मिश्र द्वारा रचित 'अस्ति की पुकार हिमालय' एक प्रभावशाली निबंध है । उन्होंने कवि कालिदास द्वारा एक श्लोक में 'अस्ति' शब्द की आवश्यकता पर विचार -विमर्श किया है । उनका कहना है कि

इसके पीछे निश्चित रूप से कोई गूढ़ रहस्य है । आज के समय में अधिकांश भारतीय हिमालय के अस्तित्व को भूल चुके हैं । वे अपने दैनन्दिन कार्यों में व्यस्त हैं । अपने आपको आस्तिक दिखाने के लिए देवी-दवताओं तथा ग्रहों की पूजा करते हैं । देश-प्रीति के प्रदर्शन के उद्देश्य से वे भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर भाषण करते हैं । जो पूर्ण रूप से छल-कपट से भरा है ।

लेखक ने कहा है कि आजकल प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थ की भावना से ग्रस्त है । स्वार्थी लोग और सत्ता लोलुप नेता दोनों एक दूसरे के मनोभावों से परिचित हैं । उन्होंने जनतन्त्रात्मक प्रणाली के लिए अवसरवादिता पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है ।

लेखक ने भारतीय प्रशासन और समाज की आकर्षणता पर भी करार व्यंग किया है । जिस प्रकार बर्फ में जमने के बाद प्रत्येक जीव-जंतु की समस्त क्रियाएँ शिथिल पड़ जाती हैं, उसी प्रकार इस अकर्मण्यता रूपी बर्फ से हमारी बुद्धि-विवेक आदि भी निष्क्रिय हो गए हैं । आज हम हिमालय और उसके अस्तित्व के प्रति उपेक्षित व्यवहार दर्शाते हैं । हमें दर्द का अनुभव नहीं है । लेखक का कहना है कि दर्द नहीं है तो कम से कम दर्द का अस्तित्व तो दर्शाना है । 'अस्ति' का अर्थ है वर्तमान की स्थिति से जुड़े रहना । अस्ति का भाव हमें अपने में जाग्रत करना चाहिए । स्वार्थ, हिंसा, द्वेष से मुक्त होकर सबके प्रति उदासीन न रहकर सचेतन रहना चाहिए ।

9.3.4.5. उद्देश्य :

हिमालय के महत्व पर प्रकाश डालना जो भारतीय जीवन प्रवाह, संस्कृति और समाज- चेतना से सम्मलित है । इसलिए हिमालय या किसी भी अस्ति की पुकार सभी को सुननी चाहिए ।

* छल-कपट, दिखावे को भूलकर वास्तविक युग श्रद्धा को महत्व देना लेखक का उद्देश्य है ।

* 'अस्ति' की अटपटी भाषा समझना । भारतीय सभ्यता और संस्कृति का वास्तविक परिचय देना । शुद्ध शब्द युग तथा शुद्ध युग श्रद्धा के महत्व को बताना । अस्ति ही हिमालय की तरह उज्वल और उदात्त है, अत: अस्तिं के महत्व को बताना और जनसमुदाय उसके प्रति उजागर करना ।

* हिमालय का अस्ति रूप सिसृक्षा का ही मूर्तिकरण है । यह हमारी वर्चस्विनी शक्ति का स्रोत हैं । इसलिए हम सब अस्ति की पुकार सुनें और उसके दर्द को अनुभव करें ।

* भारतीय संस्कृति के विकास में हिमालय का विशेष योगदान रहा है । इसलिए लेखक ने आधुनिक भारतीयों के हिमालय के प्रति उपेक्षित दृष्टिकोण को उजागर करने का प्रयत्न किया है ।

9.3.4.6. पाठ का विश्लेषण और विवेचन :

प्रस्तुत निबंध में विद्यानिवास मिश्र ने अपने बौद्धिक चिन्तन तथा गहन विवेचन को महत्व दिया है । उन्होंने 'अस्ति' शब्द के रहस्य को उद्‌भासित करना चाहा है क्योंकि कालिदास कभी निरर्थक शब्दों का प्रयोग नहीं करते । उनका कहना है - हिमालय 'देवतात्मा' है । गीता में स्पष्ट कहा गया है यह साक्षात भगवान वासुदेव का विग्रह है । यह भाषा, संस्कृति, सभ्यता लौकिक तथा अलौकिक चेतना से संबंधित है ।

लेखक मिश्रजी कहते हैं कि आज के समय में भारतीय हिमालय के महत्व को भूलते जा रहे हैं । हम अपने को आस्तिक, भक्त, श्रद्धालु आदि दिखाने के लिए विभिन्न उपाय अपनाते हैं । भगवान की पूजा, ग्रह-नक्षत्रों की पूजा, रत्न, पत्थर आदि धारण करने की रुचि , देवी-देवताओं की मंनौती और भाषण-बाजी करके लोगों का विश्वास जीतना चाहते हैं जो निरर्थक और फरेब है । इसमें सच्ची श्रद्धा और भक्ति लेश मात्र नहीं है । इस प्रकार हमारी नजरों में ऐसी एकनिष्ठ श्रद्धा कोई मूल्य नहीं रखती ।

लेखक का कहना है कि आजकल के लोग अस्ति की अटपटी भाषा समझ नहीं पाते । उन पर हिमालय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता । धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सब बेमानी हो गए हैं । पुरुषार्थ व्यर्थ है । हर जिन्दगी अपने पर अधिकार जताती है और दूसरे को अपवित्र बताती है ।

प्रस्तुत प्रबंध में लेखक ने 'शब्द' के महत्व पर प्रकाश डाला है । शब्द की महिमा सर्वश्रेष्ठ है । 'हिमालय', 'हिन्दुस्तान', 'लेखक और पाठक', शब्द' सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं । इनमें न कोई संघर्ष है न टकराव ।

लेखक ने अस्ति को हिमालय पर्वत की भाँति उज्वल और उदात्त माना है । हिमालय का यह अस्ति रूप हमारी सिसृक्षा का ही मूर्तिकरण है । हमारी वर्चस्विनी शक्ति के श्रोत हैं । परंतु यह लेखक को चोट बहुँचाती है । आज हम हिमालय और उसके अस्तित्व के प्रति काफी उदासीन हैं । स्वार्थ हेतु हम अस्ति की पुकार सुन नहीं पाते । हम देश की पीड़ा अनुभव नहीं कर पाते । हमें किसी चीज का दर्द नहीं होता । लेखक कहते हैं कि दर्द न होना भी एक प्रकार का अस्ति है क्योंकि यह कम से कम दर्द के अस्तित्व को तो दर्शाता है । इस प्रकार उन्होंने भारतीय प्रशासन तथा समाज की उदासीनता पर करार व्यंग्य किया है ।

वस्तुत: डॉ.विद्यानिवास ने अपने निबंधों में आधुनिक जीवन में सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्यों के पतन पर निरंतर चिन्ता व्यक्त की है । इस निबंध में उन्होंने यह सिद्ध किया है कि हिमालय वास्तव में हमारी अस्मिता का

प्रतीक है । हमारी सृजन चेतना का मूर्त रूप है जो हमें निरंतर अपनेपन को याद दिलाता है । वह प्रत्येक संवेदनशील भारतीय को अपनी ओर आकर्षित करता है । वह तो एक आह्वान है ; चुनौती है । अत: प्रत्येक को 'हिमालय' की पुकार सुननी है । अपने अस्तित्व का बोध करने के लिए हमें हिमालय के प्रति ही आकृष्ट होना है । इसीमें ही मनुष्य मात्र की प्रगति है ।

9.3.4.7. सम्भाव्य प्रश्न :

व्याख्यात्मक प्रश्न :

क) सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

हिमालय को अपने देवत्व से अधिक अस्ति पर श्रद्धा रखनेवाले का ख्याल है और राहुल जी इस अस्ति में विश्वास करते थे, क्योंकि वे हिमालय को भारतीय जीवन - प्रवाह का श्रोत मानते थे, इस जीवन - प्रवाह में भाषा, संस्कृति, समाज - चेतना, ऐसा सभी कुछ शामिल है जिसका समष्टि चैतन्य से संबंध हो ।

ख) अपनी ओर से हम सब आस्तिकता का पूरा निर्वाह करते हैं, अपने को अत्याधुनिक लगनेवाले भी कुंडली दिखाते हैं, ग्रहों को प्रसन्न रखने के लिए रत्न धारण करते हैं, और किसी मन्दिर में जाएँ न जाएँ पर हनुमानजी के यहाँ लड्डू चढ़ाने मंगलवार को जरूर पहुँच जाते हैं, हम गाहे-बेगाहे देवताओं का दरबार करते हैं, मनौती मानते है, इंडियन कल्चर की बात करते हैं, अशोक, कालिदास को भी कृतकृत्य करते रहते हैं, यह सब भुलावा है, छल है ।

ग) हम वस्तुत: सिद्धावस्था में पहुँच चुके हैं । इसलिए हमें वर्तमान नहीं छूता, हमें केवल भूत पकड़ता है या भविष्यत खींचता है, वर्तमान हमें लेशमात्र भी नहीं प्रभावित करता । इसलिए हम अस्ति की अटपटी भाषा समझ नहीं पाते ।

घ) धर्म, अर्थ, काम, मोह सब बेमानी हो गए हैं, पुरुषार्थ व्यर्थ है । जिन्दगी बस एक ठहराव रह गयी है, जिसमें कुछ चीजें अटक गयी हैं । बर्फ के दबाव से यही क्या कम है कि सड़ी नहीं ।

ङ) यही तो एक काँटा है, जो बराबर चुभता रहता है, लाख कोशिश करने पर भी निकलता नहीं । मैं भूलना चाहता हूँ कि कुछ हूँ, क या ख या ग, क्योंकि क हूँ तो भी दारुण विपत्ति, ख या ग हूँ तो तब भी संकट ।

च) लगता है हमारी नि:स्व संस्कृति का सुहाग अहमन्य अभिजात वर्ग में न होकर, हैसियतदारी में पैमाल मध्यवर्ग में न होकर , उसी अकिंचनवर्ग में सुरक्षित है, जहाँ देश बल्कि एक ऊँचे उदात्त उज्वल सत्यरेखा के रूप में ।

आलोचनात्मक प्रश्न :

1. विद्यानिवास मिश्र का 'अस्ति की पुकार हिमालय' निबंध की तात्त्विक समीक्षा कीजिए ।

2. 'अस्ति की पुकार हिमालय' निबंध का उद्देश्य प्रतिपादन कीजिए ।

3. लेखक डॉ. मिश्र द्वारा लिखित निबंध 'अस्ति की पुकार हिमालय' की प्रामाणिकता पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।

लघूत्तरी प्रश्न :

1. हिमालय और अस्ति के बारे में क्या अनुसंधान करना चाहिए ?

2. स्व: राहुलजी ने लेखक से क्या कहा था ?

3. राहुलजी हिमालय को क्या मानते थे ?

4. हम सब आस्तिकता का कैसे निर्वाह करते हैं ?

5. राष्ट्रीय एकता की बात करने के समय हमें क्या करना चाहिए ?

6. लेखक सिद्धावस्था के बारे में क्या कहना चाहते हैं ?

7. लेखक ने युग के बारे में क्या कहा है ?

8. अस्ति क्या है ?

9. हिमालय के बारे में क्या कहा गया है ?

10. 'दर्द' पर लेखक ने क्या विचार प्रकट किया है ?

अतिलघूत्तरी प्रश्न :

1. ' अस्ति की पुकार हिमालय' के लेखक कौन हैं ?

2. गीता में हिमालय को क्या बताया गया है ?

3. राहुल जी हिमालय को किस रूप में ग्रहण करते हैं ?

4. हिमालय या किसी भी अस्ति की पुकार क्यों सुनाई नहीं देती ?

5. अत्याधुनिक लोग अपनी आस्तिकता को कैसे प्रमाण करते हैं ?

6. हिन्दुस्तान की जनता से त्याग की अपील करनी होगी तो क्या करना पड़ेगा ?

7. हमारी जीत कैसे हुई ?

8. हमें वर्तमान के बदले क्या पकड़ता है ?

9. कुल के नाम पर किनमें तनाव है ?

10. जो चीजें अटक गयी हैं, उनका क्या रूप है ?

11. लोगों के अनुसार यह युग कैसा है ?

12. शब्दों की क्या खासियत है ?

13. अस्ति काँटा है या फूल ?

14. रिक्तास्थानों की पूर्ति कीजिए -

क) हम वस्तुत: ------ में पहुँच चुके हैं

ख) उसे मरने की भी ---- नहीं रह गयी है ।

ग) ----व्यर्थ है ।

घ) ---- के शब्दों में मितव्ययी शब्द बिखरते नहीं ।

ङ) लेकक ने ----- राजा की कहानी सुनी है ।

15. वाक्य पूर्ण करके लिखिए :

क) हिमलय की यह अस्ति रूप हमारी ------ है ।

ख) हिमालय गौरी गुरु ही नहीं देवसेनानी ---- हैं ।

ग) दर्द नहीं होता, का दर्द भी तो ----- है ।

घ) अगर हिन्दुस्तान की नारी को भुलावा देना होगा तो ---- होंगे ।

ङ) सही या गलत बताइए :

क) अस्ति, हिमालय की तरह उज्वल, उदात्त और मूर्धन्य है ।

ख) हमें देश का दर्द होता और हर चीज का दर्द होता है ।

ग) विष्णु की बरात ऐसी जमी कि हिमालय की सब धन दौलत चुक गयी ।

घ) इस अस्ति की छुअन मात्र से हमारे विजड़ित चित्र में संजोयी वस्तुएँ सड़ांध से ग्रस्त हो जाती हैं ।

ङ) राहुलजी हिमालय को पाश्चात्य जीवन-प्रवाह का स्रोत मानते थे ।

***

संदर्भ ग्रंथसूची

- हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-2005.
- हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2006.
- हिंदी साहित्य का इतिहास, संपा. डॉ. नगेंद्र, मयूर पेपरबैक्स, नोएड़ा-2004.
- हिंदी साहित्य की भूमिका, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2006.
- हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, डॉ. जयकिशन खण्डेलवाल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2006.
- हिंदी गद्य का उद्भव और विकास, उमेश शास्त्री, देवनागर प्रकाशन, जयपुर- 2018.
- आधे-अधूरे, मोहन राकेश, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली- 2016.
- श्रेष्ठ एकांकी, डॉ. विजयपाल सिंह, विश्वविद्द्यालय प्रकाशन, वाराणसी - 2011.
- निबंध निकष, सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्द्यालय प्रकाशन, वाराणसी - 2019.